हिंदी

कक्षा X

2026-27

विद्यार्थी सहायक सामग्री

Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन~Kendriya Vidyalaya Sangathan

विकास गुप्ता, भा.प्र.से.
आयुक्त
Vikas Gupta, IAS
Commissioner

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016
Kendriya Vidyalaya Sangathan
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

संदेश

शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित ज्ञान नहीं है; यह स्वयं को पहचानने, अपने विचारों को विस्तार देने और जीवन की चुनौतियों का आत्मविश्वास से सामना करने की सतत् यात्रा है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन का सदैव यह प्रयास रहा है कि प्रत्येक विद्यार्थी के लिए ऐसा शिक्षण वातावरण हो, जहाँ जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिले, सीखना आनंददायी बने और प्रत्येक बालक अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित कर सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को सिर्फ रटने से समझने, सूचना से ज्ञान और ज्ञान से जीवनोपयोगी दक्षताओं की ओर अग्रसर किया है। आज का समय कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI), डिजिटल नवाचार और निरंतर बदलती तकनीकों का है। ऐसे युग में केवल तथ्यों का ज्ञान पर्याप्त नहीं है; आवश्यक है कि विद्यार्थी मनन- चिंतन करना सीखें, प्रश्न पूछें, समस्याओं का समाधान खोजें और नए विचारों के साथ आगे बढ़ें। यही क्षमताएँ उन्हें भविष्य के लिए तैयार करेंगी।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पाँचों आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों (ZIETs) के माध्यम से, समर्पित एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए यह विद्यार्थी सहायक सामग्री तैयार की गई है। यह केवल परीक्षा की तैयारी की संकलन सामग्री नहीं है, बल्कि विषयों को सरलता से समझने, अवधारणाओं को स्पष्ट करने, नियमित अभ्यास करने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने का एक विश्वसनीय साथी है।

इस सामग्री में विषय-वस्तु को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप सरल, व्यवस्थित एवं दक्षता-आधारित दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि इसे हमारे शिक्षकों के अनुभव, नवाचार और विद्यार्थियों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने समृद्ध बनाया है। मुझे विश्वास है कि यह सामग्री विद्यार्थियों की सीखने की यात्रा को अधिक सहज, रोचक और प्रभावी बनाएगी तथा उन्हें बोर्ड परीक्षाओं के साथ-साथ जीवन की व्यापक चुनौतियों के लिए भी तैयार करेगी।

मेरा विश्वास है कि जब एक जिज्ञासु विद्यार्थी, प्रेरित शिक्षक और सार्थक शिक्षण संसाधन एक साथ आते हैं, तब शिक्षा केवल उपलब्धि का माध्यम नहीं रहती, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की एक सशक्त प्रक्रिया बन जाती है। यही भावना इस विद्यार्थी सहायक सामग्री के केंद्र में है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ है कि आप सभी सीखने की इस यात्रा में निरंतर आगे बढ़ें, अपने सपनों को नए आयाम दें और ज्ञान, संवेदनशीलता तथा नवाचार के साथ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित।

(विकास गुप्ता)

011-26512579 www.kvsangathan.nic.in commissioner-kvs@gov.in @KVS_HQ @KVSHQ @kvshqr

संरक्षक

श्री विकास गुप्ता, आयुक्त, केविसं

सह-संरक्षक

सुश्री चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शैक्षिक), केविसं (मु.)

समन्वयक

श्री सोमित श्रीवास्तव, संयुक्त आयुक्त (शैक्षिक), केविसं (मु.)
एवं
सुश्री पी बी एस उषा, संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण), केविसं (मु.)

कवर डिज़ाइन

केविसं प्रकाशन विभाग

संपादक

श्री सरदार सिंह चौहान, निदेशक, केविसं जीट भुवनेश्वर (प्रभारी)

श्री बी.एल. मोरोडिया, निदेशक, केविसं जीट ग्वालियर

श्रीमती श्रुति भार्गव, निदेशक, केविसं जीट चंडीगढ़

श्री पी आई टी राजा, निदेशक, केविसं जीट मैसूर

श्री टी प्रभुदास, निदेशक, केविसं जीट मुंबई

Content creators and reviewed by

1. श्री अशोक कुमार, स्नातकोत्तर शिक्षक हिन्दी, पीएम श्री के. वि. क्र.-3, एएफएस बठिंडा, चंडीगढ़ संभाग

2. श्री मुकेश कुमार शर्मा, प्र.स्ना.शि. हिन्दी, पीएम श्री के. वि. योल कैंट, गुरुग्राम संभाग

3. श्री राजेंद्र कुमार रैगर, प्र.स्ना.शि. हिन्दी, पीएम श्री के. वि. सीकर, जयपुर संभाग

अनुक्रमणिका		
क्रम सं.	**पाठ्यक्रम**	**पृष्ठ संख्या**
1.	परीक्षा हेतु पाठयक्रम विनिर्देशन	2
खंड-क (अपठित बोध)		
2.	अपठित गद्यांश	5
3.	अपठित काव्यांश	8
खंड-ख (व्यवहारिक व्याकरण)		
4.	वाक्य भेद (रचना के आधार पर)	12
5.	वाच्य	16
6.	पद-परिचय	18
7.	अलंकार	21
खंड-ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)		
8.	सूरदास	24
9.	राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	29
10.	आत्मकथ्य	34
11.	उत्साह, अट नहीं रही है	38
12.	यह दंतुरित मुसकान, फसल	43
13.	संगतकार	49
14.	नेताजी का चश्मा	54
15.	बालगोबिन भगत	60
16.	लखनवी अंदाज	68
17.	एक कहानी यह भी	76
18.	नौबत खाने में इबादत	83
19.	संस्कृति	91
20.	माता का अंचल	99
21.	साना-साना हाथ जोड़ि	103
22.	मैं क्यों लिखता हूँ ?	110
खंड - घ (रचनात्मक लेखन)		
23.	अनुच्छेद लेखन	114
24.	पत्र लेखन	119
25.	ई-मेल लेखन	125
26.	स्ववृत लेखन	129
27.	विज्ञापन लेखन	132
28.	संदेश लेखन	134
29.	प्रश्न-पत्र और उत्तर अंक तालिका	137

हिन्दी पाठ्यक्रम 'अ'

विषय कोड- 002

कक्षा- दसवीं (2026-27)

परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

खंड		भारांक
क	अपठित बोध	14
ख	व्यवहारिक व्याकरण	16
ग	पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पुस्तक	30
घ	रचनात्मक लेखन	20

भारांक-80 (वार्षिक बोर्ड परीक्षा)+ 20 (आंतरिक परीक्षा)

निर्धारित समय- 3 घंटे **भारांक - 80**

			वार्षिक बोर्ड परीक्षा हेतु भार विभाजन		
			खंड-क (अपठित बोध)		
			विषय-वस्तु	**उपभार**	**कुल भार**
1			अपठित गदयांश व पदयांश पर बोध, चिंतन, विश्लेषण, सराहना आदि पर बहुविकल्पीय, अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न		
	अ		एक अपठित गदयांश लगभग 250 शब्दों का इसके आधार पर एक अंकीय तीन बहुविकल्पीय प्रश्न (1X 3=3), अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न (2X2=4) पूछे जाएँगे ।	7	14
	ब		एक अपठित काव्यान्श लगभग 120 शब्दों का इसके आधार पर एक अंकीय तीन बहुविकल्पीय प्रश्न (1X 3=3), अतिलघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न (2X2=4) पूछे जाएँगे ।	7	
2			व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषयवस्तु का बोध, भाषिक बिन्दु/ संरचना आदि पर अतिलघूत्तरात्मक/ लघूत्तरात्मक प्रश्न । (1X16) (कुल 20 प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 16 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे ।		16
			खंड-ख (व्यवहारिक व्याकरण)		
	1		रचना के आधार पर वाक्य भेद (1X4=4) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	2		वाच्य (1X4=4) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	3		पद परिचय (1X4=4) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
	4		अलंकार-(अर्थालंकार : उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण) (1X4=4) (5 में से 4 प्रश्न करने होंगे)	4	
3			**खंड-ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)**		30
	अ		**गद्य खंड पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-2)**	11	
		1	क्षितिज (भाग-2) से निर्धारित पाठों में से गदयांश के आधार पर विषय-वस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर एक अंकीय पाँच **बहुविकल्पीय प्रश्न** पूछे जाएँगे । (1X5)	5	
		2	क्षितिज (भाग-2) से निर्धारित पाठों में से विषय-वस्तु का ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति आदि पर तीन प्रश्न पूछे जाएँगे । (विकल्प सहित - 25-30 शब्द सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2X3)	6	
	ब		**काव्यखंड पाठ्यपुस्तक (क्षितिज भाग-2)**	11	
	ब	1	क्षितिज (भाग-2) से निर्धारित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर एक अंकीय पाँच **बहुविकल्पीय प्रश्न** पूछे जाएँगे । (1X5)	5	
		2	क्षितिज (भाग-2) से निर्धारित पाठों में से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्य बोध परखने हेतु तीन प्रश्न पूछे जाएँगे । (विकल्प सहित - 25-30 शब्द सीमा वाले 4 में से 3 प्रश्न करने होंगे) (2X3)	6	

	स	**पूरक पाठ्यपुस्तक (कृतिका भाग-2)**	8	
		कृतिका (भाग-2) से निर्धारित पाठों पर आधारित दो प्रश्न पूछे जाएँगे। (4X2) (विकल्प सहित- 50-60 शब्द- सीमा वाले 3 में से 2 प्रश्न करने होंगे।	8	
4		**खंड-घ (रचनात्मक लेखन)**		20
	i	विभिन्न विषयों और संदर्भों पर विद्यार्थियों की तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को रखने के लिए संकेत बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यवहारिक जीवन से जुड़े हुए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लेखन (6X1=6)	6	
	ii	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केंद्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषय में से किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र (5X1=5)	5	
	iii	रोजगार से संबंधित रिक्तियों के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त लेखन अथवा विविध विषयों पर आधारित लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लेखन (5X1=5)	5	
	iv	विषय से संबंधित लगभग 40 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन लेखन (4X1=4) अथवा संदेश लेखन लगभग 40 शब्दों में (शुभकामना, पर्व, त्योहारों एवं विशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश (4X1=4)	4	
		कुल		**80**
		आंतरिक मूल्यांकन	अंक	20
	अ	**समसामयिक आकलन**	5	
	ब	**बहुविध आकलन**	5	
	स	**पोर्टफोलियो**	5	
	द	**श्रवण एवं वाचन**	5	
				100
		कुल		

निर्धारित पुस्तकें :-

1 क्षितिज भाग-2 , एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

2 कृतिका भाग-2 , एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

नोट – निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे–

क्षितिज, भाग – 2	काव्य खंड	• देव- सवैया, कवित्त (पूरा पाठ) • गिरिजाकुमार माथुर – छाया मत छूना (पूरा पाठ) • ऋतुराज – कन्यादान (पूरा पाठ)
	गद्य खंड	• महावीरप्रसाद द्विवेदी – स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन (पूरा पाठ) • सर्वेश्वर दयाल सक्सेना- मानवीय करुणा की दिव्य चमक (पूरा पाठ)
कृतिका, भाग – 2	• एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! (पूरा पाठ) • जार्ज पंचम की नाक (पूरा पाठ)	

कक्षा दसवीं हेतु प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिए कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

सीबीएसई पाठयक्रम की अधिक जानकारी हेतु नीचे दिए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

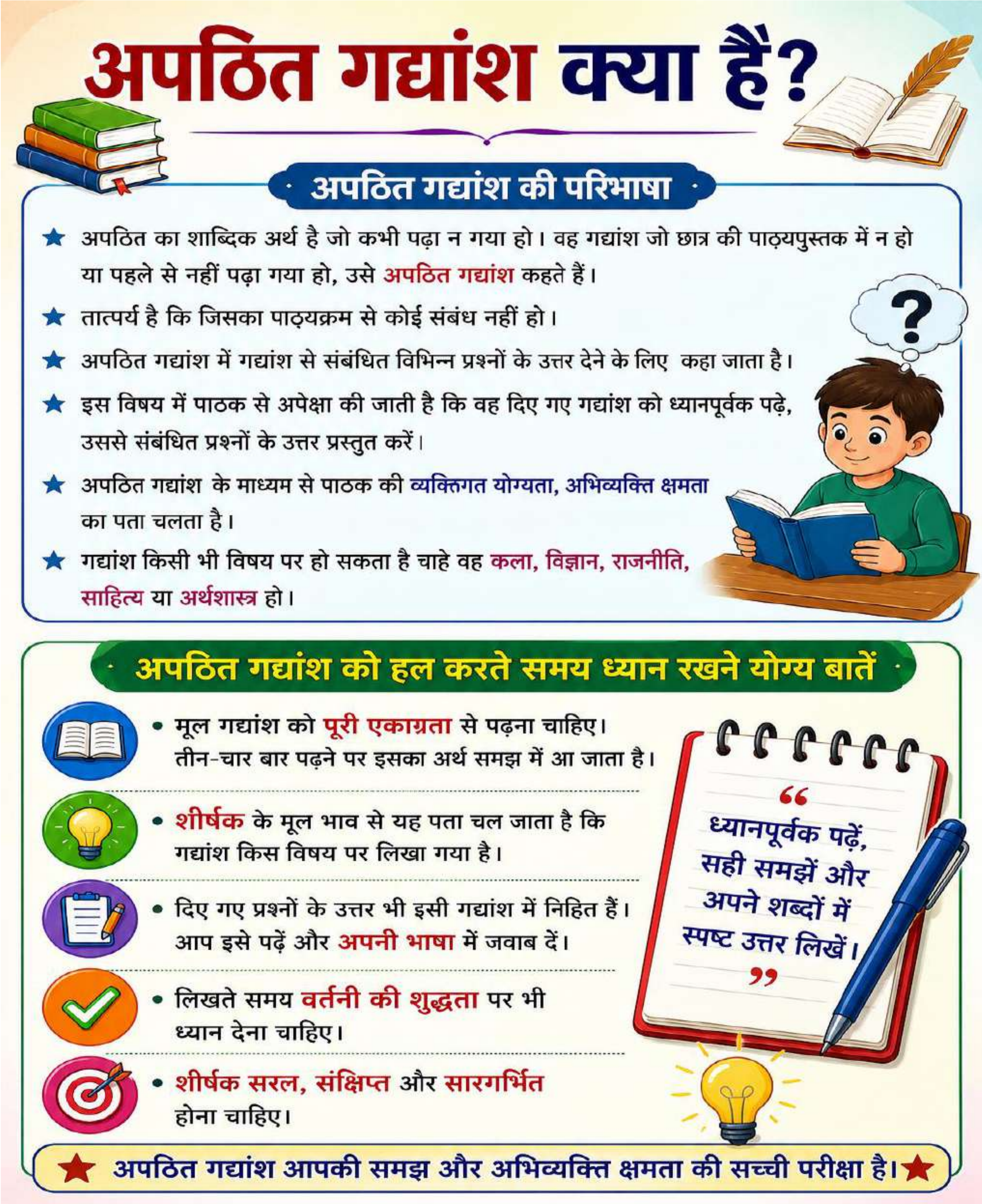

याद रखने का सूत्र:-

पढ़ो → समझो → प्रश्न पढ़ो → उत्तर खोजो → लिखो → जाँचो

गद्यांश- 1

निम्नलिखित अपठित गद्यांशों पर आधारित बहुविकल्पात्मक एवं लघूत्तरीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर लिखिए।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, बैंकिंग तथा उद्योगों में इसके उपयोग ने कार्यों को अधिक तेज़ और प्रभावी बनाया है। अनेक विशेषज्ञों का मानना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जीवन को सरल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। दूसरी ओर कुछ लोग यह चिंता व्यक्त करते हैं कि मशीनों पर बढ़ती निर्भरता मनुष्य की सृजनात्मकता और निर्णय क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़ी मात्रा में उपलब्ध आँकड़ों का विश्लेषण कर शीघ्र निर्णय लेने में सक्षम है, किंतु उसमें मानवीय संवेदनाएँ, नैतिक विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व का अभाव होता है। यदि किसी तकनीक का उपयोग केवल लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाए और उसके सामाजिक प्रभावों की उपेक्षा की जाए, तो उसके दुष्परिणाम भी सामने आ सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि तकनीकी प्रगति के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का संरक्षण भी किया जाए। वास्तव में तकनीक का उद्देश्य मनुष्य का स्थान लेना नहीं, बल्कि उसकी क्षमताओं को और अधिक विकसित करना होना चाहिए।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. गद्यांश का केंद्रीय विचार क्या है?

(क) कृत्रिम बुद्धिमत्ता से बढ़ती बेरोजगारी

(ख) केवल तकनीकी विकास को बढ़ावा देना

(ग) तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखना

(घ) मशीनें मानव से श्रेष्ठ कार्य कर सकती हैं

2. गद्यांश के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सबसे बड़ी सीमा क्या है?

(क) कार्यों की गति धीमी होती है (ख) आँकड़ों का विश्लेषण न कर पाना

(ग) मानवीय संवेदनाओं और नैतिक विवेक का अभाव (घ) अधिक लागत

3. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन- (A): तकनीकी प्रगति के साथ मानवीय मूल्यों का संरक्षण आवश्यक है।

कारण- (R): कृत्रिम बुद्धिमत्ता में मानवीय संवेदनाएँ और नैतिक विवेक नहीं होते।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

4. लेखक ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ और सीमाओं के बीच संतुलन की आवश्यकता क्यों बताई है?

5. गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि केवल तकनीकी दक्षता किसी निर्णय को पूर्णतः उचित क्यों नहीं बना सकती।

उत्तरमाला-

1. (ग) तकनीकी प्रगति और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखना
2. (ग) मानवीय संवेदनाओं और नैतिक विवेक का अभाव
3. (क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
4. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ और सीमाओं के बीच संतुलन की आवश्यकता है क्योंकि तकनीक लाभदायक होने के बावजूद मानवीय संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों का स्थान नहीं ले सकती।
5. तकनीकी दक्षता आँकड़ों के आधार पर निर्णय लेती है, जबकि उचित निर्णय के लिए संवेदनशीलता, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व भी आवश्यक हैं। इसीलिए केवल तकनीकी दक्षता किसी निर्णय को पूर्णतः उचित नहीं बना सकती।

गद्यांश- 2

डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति के स्वरूप को व्यापक बनाया है। आज कोई भी व्यक्ति अपने विचारों को कुछ ही क्षणों में लाखों लोगों तक पहुँचा सकता है। इससे लोकतांत्रिक मूल्यों को बल मिला है और अनेक सामाजिक मुद्दों पर जन-जागरूकता बढ़ी है। किंतु इसके साथ ही गलत सूचनाओं, अफवाहों और भ्रामक प्रचार का प्रसार भी तेजी से बढ़ा है। कई बार लोग बिना सत्यापन किए किसी सूचना को साझा कर देते हैं, जिससे सामाजिक तनाव उत्पन्न हो सकता है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र का महत्वपूर्ण आधार है, परंतु यह स्वतंत्रता जिम्मेदारी के साथ जुड़ी होती है। यदि व्यक्ति अपने अधिकारों का उपयोग दूसरों की गरिमा, सुरक्षा और सामाजिक सद्भाव को ध्यान में रखकर करे, तभी उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए आवश्यक है कि सोशल मीडिया का उपयोग विवेक, संवेदनशीलता और तथ्यपरक दृष्टिकोण के साथ किया जाए।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. गद्यांश का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(क) सोशल मीडिया का विरोध करना (ख) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त करना

(ग) सोशल मीडिया के अवसरों और चुनौतियों पर विचार करना (घ) तकनीक का प्रचार करना

2. गद्यांश के अनुसार सामाजिक तनाव का प्रमुख कारण क्या हो सकता है?

(क) तकनीकी विकास (ख) सूचना का सत्यापन किए बिना साझा करना

(ग) सोशल मीडिया (घ) अभिव्यक्ति की ज्यादा स्वतंत्रता

3. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन- (A): अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी आवश्यक है।

कारण- (R): बिना सत्यापन के फैलाई गई सूचना सामाजिक तनाव उत्पन्न कर सकती है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, पर R व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य, R असत्य

(घ) A असत्य, R सत्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न

4. लेखक ने सोशल मीडिया के विवेकपूर्ण उपयोग पर बल क्यों दिया है?

5. सोशल मीडिया पर सूचना साझा करने से पहले किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तरमाला-

1. (ग) सोशल मीडिया के अवसरों और चुनौतियों पर विचार करना।
2. (ख) सूचना का सत्यापन किए बिना साझा करना।
3. (क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
4. विवेकपूर्ण उपयोग दूसरों की गरिमा, सुरक्षा और सामाजिक सद्भाव को ध्यान में रखकर करेंगे, तभी उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
5. गलत सूचनाओं, अफवाहों और भ्रामक प्रचार का प्रसार तेजी से बढ़ा है। अत: बिना सत्यापन के सूचना को साझा नहीं करना चाहिए।

गद्यांश- 3

वैज्ञानिक दृष्टिकोण केवल विज्ञान विषय का ज्ञान नहीं है, बल्कि सोचने का एक तरीका है। इसका अर्थ है- किसी भी तथ्य को तर्क, प्रमाण और परीक्षण के आधार पर स्वीकार करना। समाज में अनेक धारणाएँ और मान्यताएँ प्रचलित होती हैं, किंतु वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यक्ति को उन्हें बिना जाँच-परख के स्वीकार करने से रोकता है। वैज्ञानिक सोच का विकास व्यक्ति को जिज्ञासु बनाता है। वह प्रश्न पूछता है, कारण खोजता है और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकालता है। यही प्रवृत्ति ज्ञान और नवाचार की आधारशिला है। दूसरी ओर, अंधविश्वास और पूर्वाग्रह व्यक्ति की तार्किक क्षमता को सीमित कर सकते हैं। आज के जटिल और तेजी से बदलते समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का महत्व और अधिक बढ़ गया है। यह व्यक्ति को सूचनाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने तथा सही और गलत में अंतर करने की क्षमता प्रदान करता है। इसलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण केवल वैज्ञानिकों के लिए ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. गद्यांश के अनुसार अंधविश्वास का सबसे संभावित प्रभाव क्या हो सकता है?

(क) तार्किक क्षमता का विकास (ख) जिज्ञासा में वृद्धि
(ग) तार्किक क्षमता का सीमित होना (घ) वैज्ञानिक खोजों में वृद्धि

2. यदि कोई व्यक्ति किसी सूचना को बिना प्रमाण के सत्य मान लेता है, तो वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण के किस सिद्धांत की उपेक्षा कर रहा है?

(क) जिज्ञासा (ख) तर्क और प्रमाण (ग) नवाचार (घ) कल्पनाशक्ति

3. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन- (A): वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है।
कारण- (R): यह केवल गलत का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में सहायता करता है।
(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R सही व्याख्या है।
(ख) A और R दोनों सत्य हैं, पर R सही व्याख्या नहीं है।
(ग) A सत्य है, R असत्य है।
(घ) A असत्य है, R सत्य है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

5. आधुनिक समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण क्यों आवश्यक है?

उत्तरमाला-

1. (ग) तार्किक क्षमता का सीमित होना 2.(ख) तर्क और प्रमाण 3.(ग) A सत्य है, R असत्य है।

4. वैज्ञानिक सोच का विकास व्यक्ति को जिज्ञासु बनाता है। वह प्रश्न पूछता है, कारण खोजता है और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकालता है। यही प्रवृत्ति ज्ञान और नवाचार की आधारशिला है।

5. सूचनाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने तथा सही और गलत में अंतर करने लिए आवश्यक है।

अपठित काव्यांश

अपठित काव्यांश वह कविता या गीत है, जो पहले से न पढ़ा गया हो। किसी भी काव्यांश को बिना किसी की सहायता से पढ़ना और पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित काव्यांश का लक्ष्य है।

सामान्य सुझाव-

- सर्वप्रथम अपठित पद्यांश या काव्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ें।
- सभी तत्सम तथा कठिन शब्दों को समझने का प्रयास करें।
- प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के उचित या सही विकल्प को दिए गए विकल्पों में से चुनने का प्रयास करें।
- शीर्षक चुनते समय सम्पूर्ण काव्यांश को ध्यान में रखकर ही काव्यांश के मूलभाव (केंद्रीय भाव) पर आधारित शीर्षक का दिए गए विकल्पों में से चयन करें।

अग्रलिखित अपठित काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पात्मक एवं लघूत्तरीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर लिखिए।

काव्यांश- 1

"बहुत घुटन है बंद घरों में, खुली हवा तो आने दो,
संशय की खिड़कियाँ खोल, किरणों को मुसकाने दो।
ऊँचे-ऊँचे भवन उठ रहे, पर आँगन का नाम नहीं,
चमक-दमक, आपा-धापी है, पर जीवन का नाम नहीं।
लौट न जाए सूर्य द्वार से, नया संदेशा लाने दो।
हर माँ अपना राम जोहती, कटता क्यों वनवास नहीं,
मेहनत की सीता भी भूखी, रुकता क्यों उपवास नहीं।
बाबा की सूनी आँखों में, चुभता तिमिर भगाने दो।
हर उदास राखी गुहारती, भाई का वह प्यार कहाँ?
डरे-डरे रिश्ते भी कहते, अपनों का संसार कहाँ?
गुमसुम गलियों को मिलने दो, खुशबू तो बिखराने दो।"

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. आज रिश्तों के डरे-डरे होने का क्या कारण है?

(क) अपनेपन की कमी के कारण। (ख) आतंक व भय का माहौल होने के कारण।
(ग) भूख और बेकारी के कारण। (घ) पर्यावरण प्रदूषण के कारण।

2. 'तिमिर' शब्द का अर्थ काव्य पंक्ति के संदर्भ में क्या है?

(क) अकेलापन (ख) उदासी (ग) दुःख (घ) बीमारी

3. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): सूर्य द्वार से ही लौट जाएगा।

कारण (R): ऊँचे भवन होने तथा आँगन न होने के कारण।

(क) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) गलत है।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

4. कवि "बंद घरों में घुटन" और "खुली हवा" के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है?

5. "ऊँचे-ऊँचे भवन उठ रहे, पर आँगन का नाम नहीं" पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरमाला-

1. (क) अपनेपन की कमी के कारण, 2. (क) अकेलापन, 3. (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं।

4. कवि समाज में बढ़ती संकीर्णता, अविश्वास और भावनात्मक दूरी को "घुटन" के रूप में प्रस्तुत करता है। वह लोगों से अपने विचारों को खुला रखने, सकारात्मक सोच अपनाने तथा प्रेम और विश्वास का वातावरण बनाने का संदेश देता है।

5. इस पंक्ति के माध्यम से कवि भौतिक विकास और मानवीय संबंधों के बीच बढ़ती दूरी की ओर संकेत करता है। आज लोगों के पास बड़े-बड़े मकान तो हैं, परंतु उनमें अपनापन, पारिवारिक सौहार्द और आत्मीयता का अभाव है।

काव्यांश- 2

"कोलाहल हो या सन्नाटा, कविता सदा सृजन करती है
जब भी आँसू हुआ पराजित, कविता सदा जंग लड़ती है
जब भी कर्ता हुआ अकर्ता, कविता ने जीना सिखलाया
यात्राएँ जब मौन हो गईं, कविता ने चलना सिखलाया
जब भी तम का ज़ुल्म बढ़ा है, कविता नया सूर्य गढ़ती है,
जब गीतों की फसलें लुटीं, शीलहरण होता कलियों का,
तब-तब चैन लुटा गलियों का, अपने भी हो गए पराए
शब्दहीन जब हुई चेतना, यों झूठे अनुबंध हो गए
घर में ही वनवास हो रहा, यों गूंगे संबंध हो गए।"

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

(1) 'जब भी आँसू हुआ पराजित, कविता सदा जंग लड़ती है'- इस पंक्ति का क्या आशय है?

(क) कविता केवल दुःख का वर्णन करती है।

(ख) कविता कठिन परिस्थितियों में संघर्ष और साहस की प्रेरणा देती है।

(ग) कविता युद्ध का समर्थन करती है।

(घ) कविता आँसुओं को समाप्त कर देती है।

(2) निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन- (A): 'घर में ही वनवास हो रहा' पारिवारिक दूरी और भावनात्मक अलगाव को व्यक्त करती है।
कारण- (R): परिवार के सभी सदस्य घर छोड़कर जंगल में रहने चले गए हैं।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

3. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): 'कविता सदा आर्थिक मदद करती है।'

कारण (R): कविता संघर्ष की प्रेरणा देती है।

(क) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) गलत है।

(ख) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

4. कवि के अनुसार कठिन परिस्थितियों में कविता की क्या भूमिका होती है?

5. "जब भी तम का ज़ुल्म बढ़ा है, कविता नया सूर्य गढ़ती है" पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरमाला-

1. (ख) कविता कठिन परिस्थितियों में संघर्ष और साहस की प्रेरणा देती है।
2. (ग) A सत्य है, R असत्य है।
3. (ख) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है।
4. कवि के अनुसार कठिन परिस्थितियों में कविता मनुष्य को संघर्ष करने, आशा बनाए रखने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। जब अंधकार और निराशा बढ़ती है, तब कविता नया मार्ग और नई ऊर्जा प्रदान करती है।
5. इस पंक्ति का भाव यह है कि जब समाज में अन्याय, अज्ञान या निराशा बढ़ जाती है, तब कविता लोगों में जागरूकता, साहस और आशा का संचार करती है। कविता परिवर्तन और नवचेतना का माध्यम बनती है।

काव्यांश- 3

"जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था; माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया। अंबर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे, कितने इस के प्यारे छूटे,
जो छूट गए फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर, कब अंबर शोक मनाता है?
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम, थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया;
मधुबन की छाती को देखो, सूखी कितनी इसकी कलियाँ,

मुरझाई कितनी वल्लरियाँ, जो मुरझाई फिर कहाँ खिली,
पर बोलो सूखे फूलों पर, कब मधुवन शोर मचाता है?
जो बीत गई सो बात गई।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. कविता का केंद्रीय भाव क्या है?

(क) अतीत की घटनाओं पर शोक करना
(ख) खोई हुई वस्तुओं को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करना
(ग) बीती हुई बातों को स्वीकार कर जीवन में आगे बढ़ना
(घ) जीवन की असफलताओं से डरना

2. कवि ने अंबर और टूटे तारों का उदाहरण क्यों दिया है?

(क) आकाश की सुंदरता का वर्णन करने के लिए
(ख) यह दिखाने के लिए कि प्रकृति भी हानि के बाद आगे बढ़ती रहती है
(ग) तारों की संख्या बताने के लिए
(घ) खगोल विज्ञान का महत्व समझाने के लिए

3. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): कवि अतीत की हानियों को जीवन का स्वाभाविक हिस्सा मानता है।
कारण (R): प्रकृति में भी अनेक तारे टूटते और फूल मुरझाते हैं, फिर भी जीवन की गति नहीं रुकती।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(ख) A और R दोनों सत्य हैं, पर R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(ग) A सत्य है, R असत्य है।
(घ) A असत्य है, R सत्य है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

4. "जो बीत गई सो बात गई" पंक्ति के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

5. कवि ने मुरझाए फूलों और टूटे तारों के उदाहरणों का प्रयोग किस उद्देश्य से किया है?

उत्तरमाला-

1. (ग) बीती हुई बातों को स्वीकार कर जीवन में आगे बढ़ना
2. (ख) यह दिखाने के लिए कि प्रकृति भी हानि के बाद आगे बढ़ती रहती है
3. (क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
4. कवि यह संदेश देना चाहता है कि बीती हुई घटनाओं, दुखों और हानियों पर लगातार शोक करने के बजाय उन्हें स्वीकार करके जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। अतीत को बदला नहीं जा सकता, इसलिए वर्तमान और भविष्य पर ध्यान देना अधिक उचित है।
5. कवि ने यह स्पष्ट करने के लिए इन उदाहरणों का प्रयोग किया है कि प्रकृति में हानि, परिवर्तन और वियोग एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जिस प्रकार प्रकृति इन घटनाओं पर रुकती नहीं, उसी प्रकार मनुष्य को भी जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए।

1. रचना के आधार पर वाक्य भेद

वाक्य- शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जिसका कुछ अर्थ निकलता हो, उसे वाक्य कहते हैं। जैसे-

(1) मोहन पुस्तक पढ़ता है।   (2) तुम अभी सो जाओ।

(3) शिक्षक ने समझाया कि भाषा अर्जित संपत्ति है।

वाक्य के भेद-

(1) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं। इनके विषय में आप कक्षा नवीं में पढ़ चुके हैं।

(2) रचना के आधार पर वाक्य भेद- रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं:- सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य

(क) सरल वाक्य- जिस वाक्य में कर्ता की एक ही मुख्य क्रिया होती है, उसे सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) लोकेन्द्र चित्र बनाता है। (2) पुष्पा विद्यालय जाएगी।   (3) हमने खेल देखा।

इन वाक्यों में एक ही मुख्य क्रिया 'बनाता है', 'जाएगी', 'देखा' का प्रयोग है।

- सरल वाक्यों में एक से अधिक क्रियाएँ हो सकती है किन्तु मुख्य क्रिया एक ही होती है। जैसे 'मोहन गाते हुए विद्यालय जाता है।' इस वाक्य में 'गाना' और 'जाता है' दो क्रियाएँ हैं किन्तु 'जाता है' मुख्य क्रिया एक ही है।

(ख) संयुक्त वाक्य- जब दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चय बोधक शब्द [**और, तथा, व, एवं, किन्तु, पर, परंतु, लेकिन, या, अथवा, इसलिए आदि**] से जुड़े होते हैं तो वह संयुक्त वाक्य कहलाता है। जैसे- (1) मैं आज घर गया और वह शहर चला गया।

(2) बच्चे विद्यालय में हैं किन्तु वे खेल रहे हैं।

(3) वहाँ मोहन आएगा या सोहन।

ध्यान दें- ये सभी वाक्य 'और', 'किन्तु' एवं 'या' के प्रयोग से जुड़े हैं।

(ग) मिश्र वाक्य- जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। जैसे:-

(1) शिक्षक ने बताया कि भारत एक कृषि प्रधान देश है।

प्रधान उपवाक्य- शिक्षक ने बताया।

आश्रित उपवाक्य- भारत एक कृषि प्रधान देश है। 'कि' योजक पद है।

(2) वे लोग यहीं रुकेंगे, जो आज शाम को आएँगे।

प्रधान उपवाक्य- लोग यहीं रुकेंगे।

आश्रित उपवाक्य- आज शाम को आएँगे। वे... जो योजक पद हैं।

(3) बच्चे वहाँ गए थे, जहाँ ऊँचे मकान हैं।

प्रधान उपवाक्य- बच्चे वहाँ गए थे।

आश्रित उपवाक्य- जहाँ ऊँचे मकान हैं। वहाँ... जहाँ योजक पद हैं।

उपवाक्य- वाक्य का वह भाग जिससे अधूरा अर्थ व्यक्त होता है तथा जिसमें उद्देश्य और विधेय भी होता है। उसे उपवाक्य कहते हैं। जैसे- मैं उसे खूब पहचानता हूँ जो कल घर आया था। इस उदाहरण में दो उपवाक्य हैं:-

पहला- मैं उसे खूब पहचानता हूँ तथा दूसरा-जो कल घर आया था।

उपवाक्य दो तरह के हैं- (1) प्रधान उपवाक्य और (2) आश्रित उपवाक्य

प्रधान उपवाक्य- वाक्य का वह अंश जो स्वतंत्र होता है और जिसमें मुख्य क्रिया होती है, वह प्रधान उपवाक्य कहलाता है। जैसे ऊपर के उदाहरण में, मैं उसे खूब पहचानता हूँ प्रधान उपवाक्य है।

आश्रित उपवाक्य- वाक्य का वह अंश जो प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होता है और जिसमें क्रिया पूरक के रूप में होती है, वह आश्रित उपवाक्य कहलाता है। जैसे ऊपर के उदाहरण में, जो कल घर आया था आश्रित उपवाक्य है।

विशेष- आश्रित उपवाक्यों में कि, क्योंकि, जब, जो, जिसे, जहाँ, जितना, जिसमें, जिसको आदि प्रयुक्त होते हैं।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद हैं :-

(1) संज्ञा आश्रित उपवाक्य (2) विशेषण आश्रित उपवाक्य (3) क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य।

जिन्हें संक्षेप में संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य तथा क्रियाविशेषण उपवाक्य के नाम से जानते हैं।

संज्ञा उपवाक्य- जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की संज्ञा या कर्म के रूप में प्रयुक्त होता है, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। इसकी मुख्य पहचान है- दो उपवाक्यों के बीच योजक शब्द **"कि" या अल्पविराम चिह्न (,)** का प्रयोग होता है। जैसे-

- अध्यापक ने बताया **कि** कल विद्यालय का अवकाश रहेगा।
- रमेश ने दिनेश को कहा, मैं बाजार जा रहा हूँ।

विशेषण उपवाक्य- जो उपवाक्य प्रधान वाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, या विशेषण का काम करता है, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं। विशेषण उपवाक्य की शुरुआत 'जो', 'जिसने', 'जिसे', 'जिन्हें' आदि शब्दों से होती है। जैसे-

- यह वही लड़का है, **जो कल कक्षा में प्रथम आया था।**
- **जिनको चित्रकला प्रतियोगिता में हिस्सा लेना हैं**, वे अपना नाम कक्षा मॉनिटर को लिखवा दें।

क्रिया विशेषण उपवाक्य- जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की क्रिया की विशेषता (रीति, समय, स्थान, कारण आदि के आधार पर) बताता है, उसे क्रियाविशेषण उपवाक्य कहते हैं। क्रियाविशेषण उपवाक्यों में जितना, जिस तरह, जब, जहाँ, जिधर, जैसे-जैसे, यदि, अगर आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

- **जब मैं स्टेशन पहुँचा,** तब गाड़ी छूट चुकी थी।
- **यदि मेहनत करोगे,** तो अवश्य सफल हो जाओगे।

वाक्य-परिवर्तन

वाक्य के एक प्रकार से दूसरे प्रकार के वाक्य में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को वाक्य परिवर्तन कहते हैं।

सरल से संयुक्त

1	सूर्यास्त होने पर अंधकार छा गया।	सूर्यास्त हुआ और अंधकार छा गया।

2	वह भोजन करने के बाद विद्यालय जाता है।	वह भोजन करता है और विद्यालय जाता है।
3	बादल घिरकर भी न बरसे।	बादल घिरे परंतु बरसे नहीं।
4	रमेश बीमार होने के कारण घूमने नहीं गया।	रमेश बीमार था इसलिए घूमने नहीं गया।
5	आप खाना खाकर आराम करें।	आप खाना खाएँ और आराम करें।

संयुक्त से सरल

1	नरेश विद्यालय गया पर पढ़ा नहीं।	नरेश विद्यालय जाकर भी पढ़ा नहीं।
2	वह बाज़ार गया और उसने फल खरीदे।	वह फल खरीदने के लिए बाज़ार गया।
3	सीता ने कहानी सुनाई औए गीता रो पड़ी।	सीता के कहानी सुनाते ही गीता रो पड़ी।
4	**मोहन मेहनती है, इसलिए कक्षा में प्रथम आता है।**	**मेहनती होने के कारण मोहन कक्षा में प्रथम आता है।**
5	बिजली गई और टी.वी. बंद हो गया।	बिजली जाते ही टी.वी. बंद हो गया।

सरल से मिश्र

1	मेहनती छात्र सफल होते हैं।	जो छात्र मेहनती होते हैं, वे सफल होते हैं।
2	ईमानदार व्यक्ति सबका विश्वास जीतता है।	जो व्यक्ति ईमानदार होता है, वह सबका विश्वास जीतता है।
3	सूर्योदय होते ही पक्षी चहचहाने लगे।	जैसे ही सूर्योदय हुआ, पक्षी चहचहाने लगे।
4	बीमार होने के कारण वह स्कूल नहीं गया।	वह बीमार था इसलिए वह स्कूल नहीं गया।
5	सत्य बोलने वाला व्यक्ति सम्मान पाता है।	जो व्यक्ति सत्य बोलता है, वह सम्मान पाता है।

मिश्र से सरल

1	जो छात्र नियमित अध्ययन करते हैं, वे परीक्षा में सफल होते हैं।	नियमित अध्ययन करने वाले छात्र परीक्षा में सफल होते हैं।
2	जब वर्षा रुकी, तब बच्चे मैदान में खेलने लगे।	वर्षा रुकने पर बच्चे मैदान में खेलने लगे।
3	क्योंकि वह बीमार था, इसलिए विद्यालय नहीं गया।	बीमारी के कारण वह विद्यालय नहीं गया।
4	जब सूरज निकला, तब अंधकार दूर हो गया।	सूरज निकलते ही अंधकार दूर हो गया।
5	जैसे ही घंटी बजी, छात्र कक्षा में पहुँच गए।	घंटी बजते ही छात्र कक्षा में पहुँच गए।

संयुक्त से मिश्र

1	राम ने परिश्रम किया और वह सफल हो गया।	राम सफल हो गया क्योंकि उसने परिश्रम किया था।
2	वर्षा हुई और किसान प्रसन्न हो गए।	जब वर्षा हुई, तब किसान प्रसन्न हो गए।
3	मैं बाज़ार गया और पुस्तक खरीद लाया।	जब मैं बाज़ार गया, तब पुस्तक खरीद लाया।
4	माता ने समझाया और बालक अपनी गलती मान गया।	जब माता ने समझाया, तब बालक अपनी गलती मान गया।
5	**पक्षी घोंसले से निकले और आकाश में उड़ने लगे।**	जब पक्षी घोंसले से निकले, तब आकाश में उड़ने लगे।

मिश्र से संयुक्त

1	क्योंकि बिजली चली गई थी, इसलिए हम अंधेरे में बैठे रहे।	बिजली चली गई थी और हम अंधेरे में बैठे रहे।
2	यदि तुम मेहनत करोगे, तो सफलता पाओगे।	मेहनत करो और सफलता पाओ।
3	जैसे ही ट्रेन स्टेशन पर पहुँची, यात्री उतरने लगे।	ट्रेन स्टेशन पर पहुँची और यात्री उतरने लगे।
4	जब बारिश हुई तब मोर नाचने लगे।	बारिश हुई और मोर नाचने लगे।
5	जब शिक्षक कक्षा में आए, तब सभी छात्र खड़े हो गए।	शिक्षक कक्षा में आए और सभी छात्र खड़े हो गए।

अभ्यास हेतु प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़कर रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार बताइए।

1. लोकेन्द्र पुस्तकालय में चित्र बनाता है।
2. पुष्पा प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए शहर जाएगी।
3. मैं आज घर गया और वह शहर चला गया।
4. बच्चे विद्यालय में हैं किन्तु वे खेल रहे हैं।
5. वहाँ मोहन आयेगा या फिर सोहन आयेगा।
6. सोहन ने परिश्रम किया किन्तु सफल नहीं हो पाया।
7. किसान बीज बोते हैं और फ़सल उगाते हैं।
8. रमेश सड़क पर तेजी से दौड़ सकता है।
9. रमेश जैसे ही बाजार पहुँचा वैसे ही बिजली चली गई।
10. श्यामा पुरस्कार पाने से बहुत खुश थी।
11. बस रामपुर पहुँची और यात्री बैठने लगे।
12. मेहनत करने से ही सफलता मिलाती है।
13. जब वर्षा हुई तब किसान प्रसन्न हो गए।
14. भानु के उदय होते ही अंधकार दूर हो गया।
15. श्याम पुस्तक खरीदने के लिए बाज़ार जायेगा।
16. वह बाज़ार गया और उसने फल खरीदे।
17. जो व्यक्ति सत्य बोलता है, वह सम्मान पाता है।
18. रमेश बीमार होने के कारण घूमने नहीं गया।
19. आप दवा खायें आराम करें।
20. चलो घर चलकर बात करते हैं।

2. वाच्य

किसी वाक्य में क्रिया के जिस रूप से कर्ता, कर्म अथवा भाव की प्रधानता का पता चले, वह वाच्य कहलाता है। जैसे:-

(1) वह पुस्तक पढ़ता है। (2) उसके द्वारा या उससे पुस्तक पढ़ी जाती है।

(3) उससे पढ़ा जाता है।

इन उदाहरणों में 'पढ़ता है', 'पढ़ी जाती है', और 'पढ़ा जाता है' क्रिया के तीन अगल-अलग रूप हैं।

वाच्य के भेद:- वाच्य के तीन भेद हैं :-

(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य

कर्तृवाच्य- जब वाक्य में क्रिया, कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है अर्थात कर्ता की प्रधानता होती है, तब वहाँ कर्तृवाच्य होता है। कर्तृवाच्य वाक्यों में कर्ता के बाद 'ने' कारक चिह्न या शून्य कारक चिह्न होता है। शून्य कारक चिह्न से तात्पर्य है कि कोई भी कारक चिह्न नहीं होता है। क्रिया सकर्मक तथा अकर्मक दोनों हो सकती है। जैसे:-

(1) चिड़िया आसमान में उड़ती है। (2) श्यामा चित्र बनाती थी।

इन उदाहरणों में 'उड़ती है', और 'बनाती थी' क्रियाएँ कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हैं ।

ध्यान देने योग्य बात- भूतकाल के वे वाक्य, जिनमें कर्ता के बाद 'ने' कारक चिह्न हो, वहाँ क्रिया कर्म के अनुसार आएगी। जैसे-

(1) राम ने कविता सुनाई और सीता ने कविता सुनाई। (कर्ता बदलने पर भी क्रिया नहीं बदली)

(2) रमेश ने खाना खाया और रमा ने खाना खाया। (कर्ता बदलने पर भी क्रिया नहीं बदली)

कर्मवाच्य- जब वाक्य में क्रिया, कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है अर्थात कर्म की प्रधानता होती है, तब वहाँ कर्मवाच्य होता है। कर्मवाच्य वाक्यों में कर्ता के बाद कारक चिह्न 'से' या द्वारा जुड़ा रहता है। क्रिया हमेशा सकर्मक होती है। मुख्य क्रिया के साथ 'जाना' क्रिया का भी प्रयोग होता है। जैसे: -

(1) सोहन से गीत गाया जाता है। (2) श्यामा द्वारा चित्र बनाया जाता था।

(3) उनसे कोलकाता जाया जाएगा।

इन उदाहरणों में 'गाया जाता है', 'बनाया जाता था' और 'जाया जाएगा' क्रियाएँ कर्म के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हैं।

भाववाच्य- जब वाक्य में क्रिया न तो कर्ता और न ही कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है बल्कि भाव के अनुसार होती है अर्थात भाव की प्रधानता होती है तब वहाँ भाववाच्य होता है। भाववाच्य वाक्यों में 'कर्म' का प्रयोग नहीं किया जाता है। क्रिया हमेशा अकर्मक होती है। भाववाच्य वाक्यों में भी कर्ता के बाद कारक चिह्न 'से' या 'द्वारा' जुड़ा रहता है। मुख्य क्रिया के साथ 'जाना' क्रिया का भी प्रयोग होता है। जैसे:-

(1) चिड़िया से उड़ा नहीं जाता है।

(2) श्यामा से हँसा जाता था।

(3) उनसे जाया जाएगा।

इन उदाहरणों में 'उड़ा नहीं जाता है', 'हँसा जाता था' और 'जाया जाएगा' क्रियाएँ भाव के अनुसार पुल्लिंग, एकवचन, प्रथम पुरुष में हैं।

वाच्य पर आधारित अभ्यास प्रश्न:-

1. मैं यह भाषा नहीं पढ़ सकूँगा। इस वाक्य को 'कर्मवाच्य' में बदलें।

उत्तर- मुझसे यह भाषा नहीं पढ़ी जा सकेगी।

2. निम्नलिखित वाक्य का वाच्य बताइए- भगवान हमारी रक्षा करते हैं।

उत्तर- कर्तृवाच्य

3. क्या तुमने खाना खा लिया है? इस वाक्य को 'कर्मवाच्य' में बदलें?

उत्तर- क्या तुम्हारे द्वारा खाना खा लिया गया है?

4. निम्नलिखित वाक्य का वाच्य बताइए- नानी के द्वारा कहानी सुनाई गई।

उत्तर- कर्मवाच्य

5. गायिका द्वारा गीत गाया जा रहा है? इस वाक्य को 'कर्तृवाच्य' में बदलें।

उत्तर- गायिका गीत गा रही है।

6. निम्न वाक्य का वाच्य बताइए- अब मुझसे चला नहीं जाता।

उत्तर- भाववाच्य

7. पक्षी से उड़ा जा रहा है। इस वाक्य को 'कर्तृवाच्य' में बदलें।

उत्तर- पक्षी उड़ रहा है।

8. निम्नलिखित वाक्य को कर्तृवाच्य में बदलिए- पुलिस के द्वारा डाकू पकड़ा गया।

उत्तर- पुलिस ने डाकू को पकड़ा।

9. रमेश के द्वारा सब्ज़ी खरीदी जा रही थी। इस वाक्य को 'कर्तृवाच्य' में बदलें-

उत्तर- रमेश सब्ज़ी खरीद रहा था।

10. निम्नलिखित वाक्य को भाववाच्य में बदलिए- मैं अब चल नहीं सकता।

उत्तर- मुझसे अब नहीं चला जाता।

11. निम्नलिखित वाक्य का वाच्य बताइए- पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

उत्तर- कर्तृवाच्य

स्व-मूल्यांकन के लिए प्रश्न

प्रश्न 1. मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलेज वालों ने नोटिस थमा दिया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

प्रश्न 2. उनके द्वारा कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

प्रश्न 3. मनुष्य द्वारा सुई-धागे का आविष्कार किया गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

प्रश्न 4. बालगोबिन भगत ने पतोहू की शादी कराई। (वाच्य पहचान कर भेद बताइए)

प्रश्न.5 बालगोबिन भगत प्रभातियाँ गाते थे। (कर्मवाच्य में बदलिए)

प्रश्न.6 बालगोबिन भगत कबीर को साहब मानते थे। (कर्मवाच्य में बदलिए)

प्रश्न.7 जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा। (वाच्य पहचान कर भेद बताइए)

प्रश्न.8 मन्नू घर की चारदीवारी के भीतर नहीं बैठ सकती थी। (भाववाच्य में बदलिए)

प्रश्न.9 कैप्टन द्वारा चश्मा बदल दिया जाता है। (वाच्य पहचान कर भेद बताइए)

प्रश्न.10 शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। (कर्मवाच्य में बदलिए)

3. पद-परिचय

पद- व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयोग किए गए शब्द को ही पद कहते हैं। जैसे- प्रमोद पत्र लिखेगा। इस वाक्य में 'प्रमोद', 'पत्र' और 'लिखेगा' कुल तीन पद हैं। वाक्य से स्वतंत्र होने पर ये सभी शब्द कहलाएँगे।

पद-परिचय- वाक्य में प्रयोग किए गए पदों को पहचानकर उनका व्याकरणिक परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है। जैसे ऊपर के उदाहरण में प्रमोद व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुलिंग, एकवचन, कर्ता कारक है। पत्र जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, कर्मकारक है। 'लिखेगा' सकर्मक क्रिया, भविष्य काल, पुलिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य है।

किस पद में क्या बताना जरूरी है?

1. संज्ञा में उपभेद, लिंग, वचन, कारक और क्रिया के साथ संबंध।

2. सर्वनाम में उपभेद, लिंग, वचन, कारक और क्रिया के साथ संबंध।

3. विशेषण में उपभेद, लिंग, वचन और विशेषण का विशेष्य ।

4. क्रिया में उपभेद, कर्म और बनावट के आधार पर, लिंग, वचन, काल और वाच्य।

5. अव्यय- निम्नलिखित अव्यय पदों का पद-परिचय देना होता है:-

क. क्रिया विशेषण उपभेद, क्रिया सम्पन्न होने की दशा, क्रिया की विशेषता बताने वाला पद।

ख. संबंधबोधक- भेद, जिन पदों से संबंध बनता हो।

ग. समुच्चयबोधक- उपभेद, जिन पदों, वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़ता हो।

घ. विस्मयादिबोधक उपभेद, जिस भाव का बोध कराता हो।

अन्य पद-

ड. प्रविशेषण- पहचान और वह विशेषण जिसकी विशेषता बताता हो।

च. निपात पहचान और वह पद जिस पर ज़ोर देता हो।

पद परिचय हेतु स्मरणीय बिन्दु

संज्ञा- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक।

सर्वनाम- पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक और निजवाचक।

विशेषण- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक और सार्वनामिक।

क्रिया-

- कर्म के आधार पर- अकर्मक और सकर्मक।
- काल के आधार पर- वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यकाल।
- बनावट (रचना) के आधार पर- सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया और नामधातु क्रिया

क्रिया विशेषण- रीतिवाचक, स्थानवाचक, कालवाचक और परिमाणवाचक।

संबंधबोधक- (मुख्य रूप से) कालवाचक, स्थानवाचक, दिशावाचक, साधनवाचक और तुलनावाचक।

समुच्चयबोधक- समानाधिकरण और व्यधिकरण।

विस्मयादिबोधक- (मुख्य रूप से) हर्षसूचक, शोकसूचक, घृणासूचक, आश्चर्यसूचक, भयसूचक और संबोधन सूचक।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न.निम्नलिखित प्रश्नों में रेखांकित पदों के सही परिचय का चयन करें।

1. **मुंशी प्रेमचंद** ने गोदान की रचना की।

उत्तर- व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्ताकारक, पुल्लिंग, एकवचन

2. रेखा **नित्य** दौड़ने जाती है।

उत्तर- कालवाचक क्रियाविशेषण, 'दौड़ने जाती है' क्रिया की विशेषता

3. बागों में फूल **खिलते हैं**।

उत्तर- सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, वर्तमान काल, पुल्लिंग, बहुवचन

4. **लाल** गुलाब देखकर मन खुश हो गया। रेखांकित पद का परिचय है-

उत्तर- गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, गुलाब विशेष्य का विशेषण

5. राधिका ने **तुम्हें** बुलाया है।

उत्तर- मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम, एकवचन, कर्मकारक, पुल्लिंग/स्त्रीलिंग

6. **रिया** पटना जा रही है।

उत्तर- व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक, स्त्रीलिंग, एकवचन

7. मैं यहीं केले **खरीदता हूँ।**

उत्तर- सकर्मक क्रिया, वर्तकाल, पुल्लिंग, बहुवचन

8. राकेश **आठवीं** कक्षा में पढ़ता है।

उत्तर- संख्यावाचक विशेषण, क्रमसूचक, स्त्रीलिंग, बहुवचन, विशेष्य-कक्षा

9. बिल्ली गाड़ी **के नीचे** बैठी हैं।

उत्तर- संबंधबोधक अव्यय, बिल्ली और गाड़ी का संबंध स्थापित कर रहा है।

10. **मैं** दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।

उत्तर- उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम, कर्ता कारक, पुल्लिंग, एकवचन

स्व-अभ्यास हेतु

प्रश्न. निम्नलिखित प्रश्नों में रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए।

1. घोड़ा **तेज़** दौड़ रहा है।
2. **गरीब** मज़दूर बहुत परिश्रम कर रहा है।
3. कल मेरा दोस्त दिल्ली **गया**।
4. **दीपक** बाज़ार जा रहा है।
5. **वाह!** कितना सुन्दर मोर है।
6. **हमें** राष्ट्रभक्तों का सम्मान करना चाहिए।
7. दिनेश **और** गणेश बाज़ार जा रहे हैं।
8. गिलास में **थोड़ा** दूध है।
9. उसने **मेहनत** से सब कुछ हासिल किया।
10. नदी के किनारे मेरा घर है।

क्या सीखा?

पद-परिचय

परिभाषा

किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के उस रूप को, जो व्याकरण की दृष्टि से उसके कार्य या अर्थ के आधार पर पहचाना जाता है, **पद-परिचय** कहलाता है।

पद के भेद

हिंदी व्याकरण में पद के मुख्य पाँच भेद होते हैं –

1. संज्ञा
2. सर्वनाम
3. विशेषण
4. क्रिया
5. अव्यय

उदाहरण सहित पद-परिचय

पद	परिभाषा	उदाहरण (वाक्य)	पद-परिचय
1. संज्ञा	किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव या गुण के नाम को संज्ञा कहते हैं।	राम विद्यालय जाता है।	राम = संज्ञा
2. सर्वनाम	जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।	वह पुस्तक पढ़ता है।	वह = सर्वनाम
3. विशेषण	जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।	सुंदर फूल खिल रहे हैं।	सुंदर = विशेषण
4. क्रिया	जो शब्द किसी काम के होने या करने का बोध कराएँ, उन्हें क्रिया कहते हैं।	बच्चे खेल रहे हैं।	खेल रहे हैं = क्रिया
5. अव्यय	जो शब्द न संज्ञा, न सर्वनाम, न विशेषण और न क्रिया हों, उन्हें अव्यय कहते हैं।	वह घर के पास रहता है।	के पास = अव्यय

ध्यान रखें

किसी भी वाक्य में प्रयुक्त शब्दों की पहचान उनके कार्य या अर्थ के आधार पर करें, यही **पद-परिचय** है।

4. अलंकार

अलंकार- 'अलंकार' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है-'आभूषण' यानी गहना। अलंकार शब्द 'अलम्' और 'कार' दो शब्दों के योग से बना है। 'अलम्' का अर्थ है- 'शोभा' तथा 'कार' का अर्थ हैं- करने वाला'। अर्थात् काव्य की शोभा (सौन्दर्य) बढ़ाने वाले शोभाकारक तत्वों को अलंकार कहते हैं।

जैसे-(1) बालकु बोलि बधौ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।। (अनुप्रास अलंकार)

(2) प्रीति-नदी में पाऊँ न बोरयो, दृष्टि न रूप परागी। (रूपक अलंकार)

काव्य का सौन्दर्य दो रूपों अर्थात शब्द एवं अर्थ की सुन्दरता में वृद्धि अथवा चमत्कार उत्पन्न करने वाले कारकों को अलंकार कहते हैं।

अलंकारों के प्रयोग से काव्य रुचिकर और पठनीय बनता है। भाषा की गुणवत्ता बढ़ जाती है और उसमें सजीवता आ जाती है। अभिव्यक्ति में सरसता और स्पष्टता आने से कविता संप्रेषणीय बन जाती है। जैसे आभूषण नारियों का **शृंगार** है, उसी प्रकार साहित्य में 'अलंकार' काव्य का **शृंगार** है।

अलंकार के मुख्यतः दो भेद हैं- (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

शब्दालंकार- जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से काव्य-सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

जैसे-(1) अवधि अधार आस आवन की, तन मन विथा सही।

(2) चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल-थल में।

प्रमुख रूप से प्रयुक्त शब्दालंकार निम्नलिखित हैं-

(1) अनुप्रास अलंकार (2) यमक अलंकार (3) श्लेष अलंकार आदि

अर्थालंकार- जहाँ काव्य में अर्थ के माध्यम से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

जैसे- (1) चरण कमल बन्दौ हरिराई।

(2) कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।

कक्षा-10 के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित अर्थालंकार शामिल हैं -

(1) उत्प्रेक्षा अलंकार (2) अतिशयोक्ति अलंकार (3) मानवीकरण अलंकार (4) रूपक अलंकार (5) उपमा अलंकार

(1) उत्प्रेक्षा अलंकार- जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना व्यक्त की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

पहचान- मनु, मानो, मनहु, जनु, जानो, जनहु, जान पड़ता है आदि शब्दों का प्रायः प्रयोग होता है।

जैसे-(1) तुम्ह तौ काल हाँक **जनु** लावा। बार बार जैसे मोही लागि बोलावा।।

(2) सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात।

मानहु नीलमणि शैल पर, आतप परयो प्रभात।।

(2) अतिशयोक्ति अलंकार- जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि वह लोक व्यवहार में असंभव लगे, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे- (1) हनुमान की पूँछ में, लग न पाई आग।

लंका सारी जल गई, गए निशाचर भाग।।

(2) आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।

राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।

(3) मानवीकरण अलंकार- जहाँ काव्य में प्रकृति की वस्तुओं में मानवीय कार्य-व्यवहार दिखाया जाए, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

जैसे- 1. मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

2. दिवसावसान का समय, मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी परी-सी, धीरे-धीरे

3. पेड़ झुक झाँकने लगे, गर्दन उचकाए

(4) उपमा अलंकार- जब किसी अत्यंत प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति की तुलना समान गुणधर्म के आधार पर की जाती है, तब वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं:-

उपमेय: जिसकी तुलना की जाती है (जिसका वर्णन हो रहा हो)।

उपमान: जिससे तुलना की जाती है (जो प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति हो)।

समान धर्म: उपमेय और उपमान का वह गुण जो दोनों में समान रूप से पाया जाता है।

वाचक शब्द: समानता दिखाने वाले शब्द; जैसे- सा, से, सी, सम, समान, सरिस, सदृश, आदि।

उदाहरण- सीता का मुख चन्द्र सदृश सुंदर है।

उपमेय- सीता का मुख **उपमान- चन्द्र**

समान गुणधर्म- सुंदरता **वाचक शब्द- सदृश**

अन्य उदाहरण- 1. पीपर पात सरिस मन डोला।
2. महाराणा प्रताप शेर के समान बहादुर थे।

(5) रूपक अलंकार- जहाँ अत्यधिक समानता के कारण उपमेय (जिसकी तुलना की जाए) और उपमान (जिससे तुलना की जाती है) को एक मान लिया जाता है, यानी दोनों के बीच के भेद को समाप्त कर दिया जाता है। काव्य में जहाँ उपमेय पर उपमान का भेद रहित आरोप किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है। एक वस्तु को दूसरी वस्तु के रूप में ही प्रस्तुत कर दिया जाता है।

रूपक अलंकार के उदाहरण-

उदाहरण- '**चरण-कमल** बंदौ हरिराई।' इस उदाहरण में चरणों को कमल का रूप माना गया है।

अन्य उदाहरण 1.पायो जी मैंने **राम-रतन** धन पायो।
2. मैया मैं तो **चंद्र-खिलौना** लेहौं।

अभ्यास कार्य

अग्रलिखित काव्य पंक्तियों में अलंकारों की पहचान करें:-

1. उदित उदयगिरि मंच पर, रघुवर बाल पतंग
2. उसकी मुस्कान को देखकर, अंधेरी रात में भी उजाला हो जाता है।
3. कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
   हिम के कणों से पूर्ण **मानो** हो गए पंकज नए॥
4. "लो यह लतिका भी भर लाई, मधु मुकुल नवल रस गागरी।"
5. पेड़ ने अपनी शाखाएँ फैलाकर हमें गले लगाया।
6. हरिपद कोमल कमल **से**।
7. नील गगन-**सा** शांत हृदय था हो रहा।
8. वह इतना बलवान है कि एक ही झटके में पूरे पहाड़ को उठा सकता है।

9. मुनि **पद-कमल** बंदि दोउ भ्राता

10. धाए काम-धाम सब त्यागी। **मनहु** रंक निधि लूटन लागी।।

11. 'फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।'

12. 'मुख बाल रवि **सम** लाल होकर ज्वाला-सा हुआ बोधित।'

उत्तरमाला-

1. रूपक 2. अतिशयोक्ति 3. उत्प्रेक्षा 4. मानवीकरण 5. मानवीकरण 6. उपमा

7. उपमा 8. अतिशयोक्ति 9. रूपक 10. उत्प्रेक्षा 11. मानवीकरण 12. उपमा

क्या सीखा?

खंड-ग

(पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

सूरदास के पद

कविता का मूल भाव-

सूरदास जी द्वारा रचित सूरसागर के भ्रमरगीत से लिया गया है। प्रस्तुत पदों में सूरदास जी ने गोपियों एवं उद्धव के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन किया है। गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य कर रही हैं कि उद्धव कृष्ण के पास रहकर भी प्रेम की अनुभूति नहीं कर पाए।

पहले पद में गोपियों की यह शिकायत वाजिब लगती है कि यदि उद्धव कभी स्नेह के धागे से बँधे होते तो वे विरह की वेदना को अनुभूत अवश्य कर पाते। गोपियाँ उद्धव की तुलना कमल के पत्तों व तेल के मटके के साथ करती हैं क्योंकि जिस प्रकार कमल के पत्ते हमेशा जल के अंदर ही रहते हैं, लेकिन उन पर जल के कारण कोई दाग दिखाई नहीं देता और जिस प्रकार तेल की मटकी पानी के प्रभाव से अप्रभावित रहती है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण के साथ रहने पर भी तुम्हारे ऊपर उनके प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। दूसरे पद में गोपियों की यह स्वीकारोक्ति कि उनके मन की अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं, कृष्ण के प्रति उनके प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त करती है। तीसरे पद में, वे उद्धव की योग साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट करती हैं। गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे श्रीकृष्ण तो हमारे लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं। जिस तरह हारिल पक्षी अपने पंजों में लकड़ी को बड़ी ही ढ़ढ़ता से पकड़े रहता है, उसे कहीं भी गिरने नहीं देता, उसी प्रकार हमने भी मन, वचन और कर्म से नंद पुत्र श्री कृष्ण को अपने ह्रदय के प्रेम-रूपी पंजों से बड़ी ही ढ़ढ़ता से पकड़ा हुआ है अर्थात दृढ़तापूर्वक अपने ह्रदय में बसाया हुआ है। अंत में गोपियों द्वारा उद्धव को राजधर्म(प्रजा का हित) याद दिलाया जाना, सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता है। गोपियाँ व्यंग्यपूर्वक उद्धव से कहती हैं कि श्री कृष्ण ने राजनीति का पाठ पढ़ लिया है। वे तो दूसरों को अन्याय से बचाते हैं, फिर उन पर अन्याय क्यों कर रहे हैं? सूरदास के शब्दों में गोपियाँ कहती हैं कि राजधर्म तो यही कहता है कि प्रजा के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए अथवा सताना नहीं चाहिए।

पद्यांश-1

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद- नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सुतौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ‘ सूर’ तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

प्रश्न- उपर्युक्त पठित पद के आधार पर सही उत्तर का चयन करें।

प्रश्न 1. यदि गोपियाँ उद्धव के उपदेश को स्वीकार कर लेतीं, तो पद की भावना में सबसे बड़ा परिवर्तन क्या होता?

(क) कृष्ण के प्रति प्रेम और बढ़ जाता। (ख) विरह भाव समाप्त होकर वैराग्य भाव पैदा हो जाता
(ग) गोपियाँ ब्रज छोड़ देतीं। (घ) कृष्ण तुरंत लौट आते।

प्रश्न 2. उपर्युक्त पद में गोपियों ने योग को क्या कहा है?

(i) कड़वी ककड़ी (ii) ब्याधि (iii) हारिल पक्षी की लकड़ी

(क) विकल्प i (ख) विकल्प ii (ग) विकल्प iii (घ) विकल्प i और ii

प्रश्न 3 हारिल पक्षी की लकड़ी के समान किसे कहा गया है?

(क) सूरदास (ख) उद्धव (ग) कृष्ण (घ) गोपियाँ

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन - गोपियाँ योग की शिक्षा नहीं लेना चाहती।

कारण - गोपियों के हृदय में केवल श्रीकृष्ण ही बसे हुए हैं।

क) कथन सही है किंतु कारण गलत है। ख) कथन गलत है किंतु कारण सही है।

(ग) कथन और कारण दोनों सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(घ) कथन और कारण दोनों सही है परंतु कारण /कथन की सही व्याख्या नहीं है।

प्रश्न 5 योग का नाम सुनते ही गोपियों को कैसा लगता है?

1. कड़वी ककड़ी के समान 2. हारिल की लकड़ी के समान
2. एक ऐसी बीमारी के समान जो पहले ना देखी ना सुनी 4. श्री कृष्ण के आने के समान

(क) केवल कथन 1 सही है (ख) केवल कथन 1 और कथन 2 सही है

(ग) केवल कथन 1 और कथन 3 सही है (घ) केवल कथन 1 और कथन 4 सही है

उत्तरमाला- 1-(ख) 2-(घ) 3-(ग) 4-(ग) 5-(ग)

पद्यांश- 2

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।

प्रश्न- उपर्युक्त पठित पद के आधार पर सही उत्तर का चयन करें।

1. पद का केंद्रीय संदेश क्या है?

(क) योग का महत्व समझाना (ख) राजनीति की शिक्षा देना

(ग) प्रेम, नैतिकता और राजधर्म के आदर्शों पर बल देना (घ) युद्ध की तैयारी करना

2. यदि गोपियों के दृष्टिकोण से देखा जाए, तो उद्धव का योग संदेश किस प्रकार की समस्या प्रस्तुत करता है?

(क) आध्यात्मिक समस्या (ख) भाषागत समस्या

(ग) भावनात्मक यथार्थ और दार्शनिक आदर्श के बीच संघर्ष (घ) राजनीतिक समस्या

3. गोपियों द्वारा कृष्ण के लिए 'राजनीति पढ़ि आए' कहना किस भाव को व्यक्त करता है?

(क) प्रशंसा (ख) व्यंग्य एवं उपालंभ (ग) सम्मान (घ) भय

4. गोपियों के अनुसार उपुर्यक्त कथनों में कौन-सा/कौनसे कथन सही है?

1. श्री कृष्ण ने प्रेम के स्थान पर योग संदेश भेजा। 2. बुद्धि चतुराई में कृष्ण कुशल हो गए।
3. गोपियों के मन को श्रीकृष्ण ने चुरा लिया था।

कूट- (क) केवल 1 (ख) केवल 2 (ग) कथन 1 और 2 (घ) कथन 1, 2, और 3

5. गोपियों के अनुसार सच्चा राजधर्म क्या है?

(क) प्रजा को नहीं सताना (ख) प्रजा के कष्टों का निवारण करना

(ग) प्रजा के हित में कार्य करना (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला- 1.(ग) 2.(ग) 3.(ख) 4.(घ) 5.(घ)

पाठ आधारित-प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर- गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित उदाहरणों से की है:-

(1) गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते से की है, जो तालाब के जल में रहते हुए भी जल की ऊपरी सतह पर ही रहता है। अर्थात् जल का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। श्री कृष्ण का सान्निध्य पाकर भी वह श्रीकृष्ण के प्रभाव से मुक्त हैं।

(2) वह जल के मध्य रखे तेल के गागर (मटके) की भाँति हैं, जिस पर जल की एक बूँद भी टिक नहीं पाती। उद्धव पर श्री कृष्ण का प्रेम अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाया है।

प्रश्न 2. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर- गोपियों ने कमल के पत्ते, तेल की मटकी और प्रेम की नदी के उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं। उनका कहना है कि वे कृष्ण के साथ रहते हुए भी प्रेमरूपी नदी में उतरे ही नहीं, अर्थात साक्षात प्रेमस्वरूप श्रीकृष्ण के पास रहकर भी वे उनके प्रेम से वंचित हैं।

प्रश्न 3. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर- गोपियाँ कृष्ण के आगमन की आशा में दिन गिनती जा रही थीं। वे अपने तन-मन की व्यथा को चुपचाप सहती हुई कृष्ण के प्रेम रस में डूबी हुई थीं। कृष्ण ने उन्होंने योग का संदेश देने के लिए उद्धव को भेज दिया। विरह की अग्नि में जलती हुई गोपियों को जब उद्धव ने कृष्ण को भूल जाने और योग-साधना करने का उपदेश देना प्रारम्भ किया, तब गोपियों की विरह वेदना और भी बढ़ गयी। इस प्रकार उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम किया।

प्रश्न 4. गोपियों के अनुसार प्रेम की क्या मर्यादा होती है?

उत्तर- गोपियों के अनुसार प्रेम की मर्यादा प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान ही प्रेम की मर्यादा है, लेकिन कृष्ण ने गोपियों की प्रेम रस के उत्तर में योग की शुष्क धारा भेज दी। इस प्रकार कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी। वापस लौटने का वचन देकर भी वे गोपियों से मिलने नहीं आए।

प्रश्न 5. 'क्या गोपियाँ कृष्ण से अनन्य प्रेम करती थीं?' सूरदास के पदों के आधार पर उत्तर लिखिए।

उत्तर- हाँ, गोपियाँ कृष्ण से अनन्य प्रेम करती थीं। गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को हारिल पक्षी के उदाहरण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। वे खुद को हारिल पक्षी व श्रीकृष्ण को लकड़ी की भाँति बताती हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी सदैव अपने पंजे में कोई लकड़ी अथवा तिनका पकड़े रहता है, उसे किसी भी दशा में नहीं छोड़ता। उसी प्रकार गोपियों ने भी मन, कर्म और वचन से कृष्ण को अपने हृदय में दृढ़तापूर्वक बसा लिया है। वे जागते, सोते स्वप्नावस्था में, दिन-रात कृष्ण-कृष्ण की ही रट लगाती रहती हैं। साथ ही गोपियों ने अपनी तुलना उन चीटियों के साथ की है जो गुड़ (श्रीकृष्ण भक्ति) पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती है और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं प्राण त्याग देती है।

प्रश्न 6. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर- प्रस्तुत पदों में योग साधना के ज्ञान को निरर्थक बताया गया है। यह ज्ञान गोपियों के अनुसार अव्यावहारिक और अनुपयुक्त है। उनके अनुसार यह ज्ञान उनके लिए कड़वी ककड़ी के समान है जिसे निगलना बड़ा ही मुश्किल है। सूरदास जी गोपियों के माध्यम से आगे कहते हैं कि यह एक बीमारी है। वो भी ऐसा रोग जिसके बारे में तो उन्होंने पहले कभी न सुना है और न देखा है। इसलिए उन्हें इस ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। उन्हें योग का आश्रय तभी लेना पड़ेगा जब उनका चित्त एकाग्र नहीं होगा। परन्तु कृष्णमय होकर यह योग शिक्षा तो उनके लिए अनुपयोगी है। उनके अनुसार कृष्ण के प्रति एकाग्र भाव से भक्ति करने वाले को योग की ज़रूरत नहीं होती।

प्रश्न 7. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर- गोपियों के अनुसार राजा का धर्म उनकी प्रजा की हर तरह से रक्षा करना तथा नीति से राजधर्म का पालन करना होता है। एक राजा तभी अच्छा कहलाता है जब वह अनीति का साथ न देकर नीति का साथ दे।

प्रश्न 8. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर- गोपियों को लगता है कि कृष्ण ने अब राजनीति सीख ली है। उनकी बुद्धि पहले से भी अधिक चतुर हो गयी है। पहले वे प्रेम का बदला प्रेम से चुकाते थे, परंतु अब प्रेम की मर्यादा भूलकर योग का संदेश देने लगे हैं। कृष्ण पहले दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित रहते थे, परंतु अब अपना भला ही देख रहे हैं। उन्होंने पहले अन्याय से लोगों को मुक्ति दिलाई है, परंतु अब नहीं। श्रीकृष्ण ने गोपियों से मिलने के बजाय योग की शिक्षा देने के लिए उद्धव को भेज दिया। श्रीकृष्ण के इस कदम से गोपियों का मन और भी आहत हुआ है। कृष्ण में आए इन्हीं परिवर्तनों को देखकर गोपियाँ स्वयं के मन को श्रीकृष्ण के अनुराग से वापस पाना चाहती है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न:-

प्रश्न 1. आपके अनुसार उद्धव भाग्यशाली हैं अथवा दुर्भाग्यशाली? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

उत्तर- मेरे अनुसार उद्धव वास्तव में भाग्यवान न होकर अति भाग्यहीन हैं। वे कृष्णरूपी सौन्दर्य तथा प्रेम-रस के सागर के सान्निध्य में रहते हुए भी उस असीम आनंद से वंचित हैं। वे प्रेम बंधन में बंधने एवं मन के प्रेम में अनुरक्त होने की सुखद अनुभूति से पूर्णतया अपरिचित हैं।

प्रश्न 2. चंचल मन के लिए योग की आवश्यकता होती है किन्तु गोपियों के अनुसार उन्हें योग की आवश्यकता नहीं है। ऐसा गोपियों ने क्यों कहा?

उत्तर- उद्‌धव अपने योग के संदेश में मन की एकाग्रता का उपदेश देतें हैं, परन्तु गोपियों का मन तो कृष्ण के अनन्य प्रेम में पहले से ही एकाग्र है। इस प्रकार योग-साधना का उपदेश उनके लिए निरर्थक है। योग की आवश्यकता तो उन्हें है जिनका मन स्थिर नहीं हो पाता, इसीलिए गोपियाँ चंचल मन वाले लोगों को योग का उपदेश देने की बात कहती हैं।

प्रश्न 3. सूरदास ने गोपियों और उद्‌धव के संवाद के माध्यम से कौन-सा व्यापक संदेश दिया है?

उत्तर: सूरदास ने इस संवाद के माध्यम से यह संदेश दिया है कि सच्ची भक्ति और निष्कपट प्रेम ज्ञान, योग और वैराग्य से भी श्रेष्ठ हैं। गोपियों का कृष्ण के प्रति अटूट प्रेम दर्शाता है कि ईश्वर को पाने का सबसे सहज मार्ग प्रेम और समर्पण है। कवि ने भक्ति की महत्ता स्थापित करते हुए यह भी दिखाया है कि भावनात्मक सत्य और आत्मिक प्रेम का स्थान जीवन में अत्यंत ऊँचा है।

क्या सीखा?

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

कविता का मूल भाव-

प्रस्तुत पाठ में दिए गए पद रामचरितमानस के बालकांड से लिए गए अंश हैं। इनके कवि तुलसीदास जी हैं। इन पदों में वर्णन किया गया है कि श्री राम जी के द्वारा शिव धनुष तोड़े जाने के कारण जब परशुराम जी क्रोधित हो जाते हैं तब उन के क्रोध को देखकर जब जनक के दरबार में सभी लोग भयभीत हो गए। परशुराम ने कहा- ने जिस भगवान शिव के इस धनुष को तोड़ा है, वह सहस्रबाहु के समान उनका शत्रु है। परशुराम जी के इन क्रोधपूर्ण वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी मुस्कुराए और परशुराम जी का अपमान करते हुए बोले कि बचपन में उन्होंने ऐसे छोटे-छोटे बहुत से धनुष तोड़ डाले थे, किंतु ऐसा क्रोध तो कभी किसी ने नहीं किया। लक्ष्मण श्रीराम की ओर देखकर बोले कि इस पुराने धनुष के टूटने से क्या हानि हो गई, यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम जी का क्रोध और बढ़ गया और वह अपने फरसे की ओर देखकर बोले कि क्या तुम मेरे स्वभाव के विषय में नहीं जानते? मैं केवल बालक समझकर तुम्हारा वध नहीं कर रहा हूँ। वे पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के घोर शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हैं। लक्ष्मण की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम जी को और क्रोध आ गया और वह विश्वामित्र से बोले कि हे विश्वामित्र! यह बालक कुबुद्धि वाला और कुटिल लगता है और यह काल के वश में होकर अपने ही कुल के लिए घातक बन रहा है। अभी यह क्षणभर में काल का ग्रास हो जाएगा अर्थात् मैं क्षणभर में इसे मार डालूँगा। यदि तुम इस बालक को बचाना चाहते हो तो, इसे मेरे प्रताप, बल और क्रोध के बारे में बता कर अधिक बोलने से मना कर दीजिए। लक्ष्मण इतने पर भी नहीं माने और परशुराम को क्रोध दिलाते हुए बोले कि जो शूरवीर होते हैं वे व्यर्थ में अपनी बड़ाई नहीं करते, बल्कि युद्ध भूमि में अपनी वीरता को सिद्ध करते हैं। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करने वाला कायर ही हो सकता है।

पद्यांश-1

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने॥
बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस किन्हि गोसाईँ॥
येही धनु पर ममता केहि हेतू। सुनी रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार्।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार॥

प्रश्न- उपर्युक्त पठित पद्य के आधार पर सही उत्तर का चयन करें।

1. यदि लक्ष्मण परशुराम को शांत करना चाहते तो निम्न में से कौन सा उपयुक्त उत्तर होता?

(क) “धनुष टूट गया तो क्या हुआ?” (ख) “आपका क्रोध अनुचित है।”

(ग) "यदि आपको दुःख पहुँचा है तो उसके लिए क्षमा चाहता हूँ।"

(घ) "आप हमें डरा नहीं सकते।"

2. लक्ष्मण के कथन– "बहु धनुही तोरी लरिकाईं"– से उनके व्यक्तित्व की कौन सी विशेषता सबसे अधिक उभरती है?

(क) कूटनीतिक व्यवहार (ख) विनम्रता

(ग) निर्भीकता एवं व्यंग्यात्मकता (घ) आत्मग्लानि

3. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:

कथन (A): तुलसीदास ने इस संवाद के माध्यम से केवल वीरता का चित्रण नहीं किया है।

कारण (R): इस प्रसंग में गर्व, सम्मान-बोध, संवाद-कौशल और मनोवैज्ञानिक संघर्ष का भी चित्रण हुआ है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, पर R सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

4. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): परशुराम का क्रोध केवल धनुष टूटने के कारण था।

कारण (R): उन्हें लगा कि शिव के प्रति सम्मान और उनकी अपनी प्रतिष्ठा को चुनौती दी गई है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, पर R सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

5. यदि किसी संगठन में एक वरिष्ठ अधिकारी अपने अधिकार के अपमान के कारण क्रोधित हो जाए और एक कनिष्ठ कर्मचारी व्यंग्यपूर्ण उत्तर दे, तो इस पद के आधार पर कौन-सी स्थिति परशुराम और लक्ष्मण के संवाद से सर्वाधिक मेल खाती है?

(क) संवाद के माध्यम से विवाद का समाधान

(ख) अधिकार-बोध और आत्मसम्मान का टकराव

(ग) सहयोगात्मक नेतृत्व का उदाहरण

(घ) अनुशासनात्मक प्रक्रिया का पालन

उत्तरमाला- 1-(ग) 2-(ग) 3-(क) 4-(घ) 5-(ख)

पद्यांश- 2

लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना॥
का छति लाभु जून धनु तोरें। देखा राम नयन के भोरें॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥
बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥
बालकु बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही॥

प्रश्न- उपर्युक्त पठित पद्य के आधार पर सही उत्तर का चयन करें।

प्रश्न 1. लक्ष्मण के अनुसार धनुष टूटने की घटना को किस दृष्टि से देखा जाना चाहिए?

(क) अपराध के रूप में (ख) संयोगवश हुई घटना के रूप में

(ग) युद्ध की चुनौती के रूप में (घ) षड्यंत्र के रूप में

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): लक्ष्मण परशुराम के क्रोध करने पर व्यंग्य करते हैं।

कारण (R): वे धनुष टूटने की घटना को सामान्य बताते हुए राम को दोषमुक्त सिद्ध करते हैं।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

प्रश्न 3. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): परशुराम लक्ष्मण पर क्रोधित नहीं होते हैं।

कारण (R): वे लक्ष्मण को केवल बालक समझकर उसे प्यार से समझाते हैं।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A और R दोनों असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

प्रश्न 4. परशुराम द्वारा स्वयं को क्षत्रियकुल द्रोही कहने से उनके व्यक्तित्व का कौन-सा गुण उभरता है?

(क) करुणा और दया (ख) विनम्रता

(ग) अपने पराक्रम और पहचान पर गर्व (घ) भय और असुरक्षा

प्रश्न 5. यदि लक्ष्मण परशुराम के क्रोध के सामने मौन रहते, तो प्रसंग का प्रभाव किस प्रकार बदल जाता?

(क) राम का गौरव बढ़ जाता। (ख) संवाद की रोचकता और संघर्ष कम हो जाता।

(ग) परशुराम तुरंत प्रसन्न हो जाते। (घ) धनुष पुनः जुड़ जाता।

उत्तरमाला- 1-(ख) 2-(क) 3-(ग) 4-(ग) 5-(ख)

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए -

i. हमें तो यह शिव धुनष साधारण धनुष की भाँति लगा।

ii. श्री राम ने इसे तोड़ा नहीं, बस उनके छूते ही धनुष स्वतः टूट गया।

iii. पुराने धनुष के टूटने से किसी की क्या हानि हो गई।

iv. उन्होंने ऐसे अनेक धनुषों को बालपन में यूँ ही तोड़ दिया था। तब तो किसी ने ऐसा क्रोध नहीं किया।

प्रश्न 2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई, उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर श्री राम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने नम्रतापूर्ण वचनों का सहारा लेकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया। श्री राम उनके क्रोध पर शीतल जल के समान शब्दों व आचरण का आश्रय ले रहे थे। यही कारण था कि उन्होंने स्वयं को उनका सेवक बताया व उनसे अपने लिए आज्ञा करने का निवेदन किया। उनकी भाषा अत्यंत कोमल व मीठी थी और परशुराम के क्रोधित होने पर भी वह अपनी कोमलता को नहीं छोड़ते थे। इसके विपरीत लक्ष्मण परशुराम की भाँति ही क्रोधी स्वभाव के हैं। निडरता तो जैसे उनके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी। इसलिए परशुराम का फरसा व क्रोध उनमें भय उत्पन्न नहीं कर पाता। लक्ष्मण परशुराम जी के साथ व्यंग्यपूर्ण वचनों का सहारा लेकर अपनी बात को उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। तनिक भी इस बात की परवाह किए बिना कि परशुराम कहीं और क्रोधित न हो जाएँ।

प्रश्न 3. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर- लक्ष्मण- हे मुनिः बचपन में हमने खेल-खेल में ऐसे बहुत से धनुष तोड़े हैं तब तो आप कभी क्रोधित नहीं हुए थे। फिर इस धनुष के टूटने पर इतना क्रोध क्यों कर रहे हैं?

परशुराम- अरे, राजपुत्र! तू काल के वश में आकर ऐसा बोल रहा है। यह शिव जी का धनुष है।

प्रश्न. 4 परशुराम ने क्या चेतावनी दी थी?

उत्तर- परशुराम ने चेतावनी दी थी कि यदि शिव का धनुष तोड़ने वाले को सभा से अलग नहीं किया गया, तो वे सभा में उपस्थित सभी राजाओं का वध कर देंगे।

प्रश्न. 5 लक्ष्मण ने परशुराम के क्रोध को अकारण क्यों कहा?

उत्तर- लक्ष्मण ने परशुराम के क्रोध को अकारण इसलिए कहा क्योंकि धनुष के टूटने में राम का कोई दोष नहीं है। वह तो उनके छूते ही टूट गया था और पुराने धनुष के टूटने पर क्रोध क्यों करना। लक्ष्मण के अनुसार उनके लिए सब धनुष एक समान हैं, यह कोई विशेष धनुष न था।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. परशुराम के क्रोध को क्या केवल शिवधनुष के टूटने से जोड़ना उचित है? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- परशुराम का क्रोध केवल शिवधनुष के टूटने के कारण नहीं था। वे भगवान शिव के परम भक्त थे और धनुष को अपनी आस्था तथा गौरव का प्रतीक मानते थे। उन्हें लगा कि धनुष का टूटना शिव के सम्मान और उनकी श्रद्धा का अपमान है। इसलिए उनका क्रोध भावनात्मक और धार्मिक दोनों कारणों से उत्पन्न हुआ।

प्रश्न 2. लक्ष्मण के व्यवहार को आप साहस मानते हैं या उद्दंडता? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- लक्ष्मण के व्यवहार में साहस और उद्दंडता दोनों के तत्व दिखाई देते हैं। वे अपने भाई राम के सम्मान की रक्षा के लिए निर्भीकता से बोलते हैं, जो उनके साहस को दर्शाता है। किंतु परशुराम जैसे सम्मानित ऋषि के प्रति व्यंग्यपूर्ण भाषा का प्रयोग उनके व्यवहार को कुछ हद तक उद्दंड भी बनाता है।

प्रश्न 3. राम और लक्ष्मण की प्रतिक्रियाओं की तुलना करते हुए स्पष्ट कीजिए कि संघर्ष की स्थिति में कौन-सा दृष्टिकोण अधिक प्रभावी है?

उत्तर- संघर्ष की स्थिति में राम का संयमित और विनम्र दृष्टिकोण अधिक प्रभावी है। वे धैर्यपूर्वक परिस्थिति को समझते हैं और शांतिपूर्ण समाधान का प्रयास करते हैं। लक्ष्मण का साहस प्रशंसनीय है, किंतु उनकी तीखी प्रतिक्रिया विवाद को बढ़ा देती है। इसलिए नेतृत्व और समस्या-समाधान के लिए राम का दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त माना जा सकता है।

प्रश्न 4. तुलसीदास ने इस संवाद के माध्यम से मानव स्वभाव के किन पक्षों को उजागर किया है?

उत्तर- तुलसीदास ने इस संवाद में क्रोध, अहंकार, साहस, धैर्य, आत्मसम्मान और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों का चित्रण किया है। परशुराम का क्रोध, लक्ष्मण का साहस और राम का धैर्य मानव स्वभाव के विभिन्न पक्षों को सामने लाते हैं। इससे पाठ केवल धार्मिक कथा न रहकर व्यवहारिक जीवन की शिक्षा बन जाता है।

क्या सीखा?

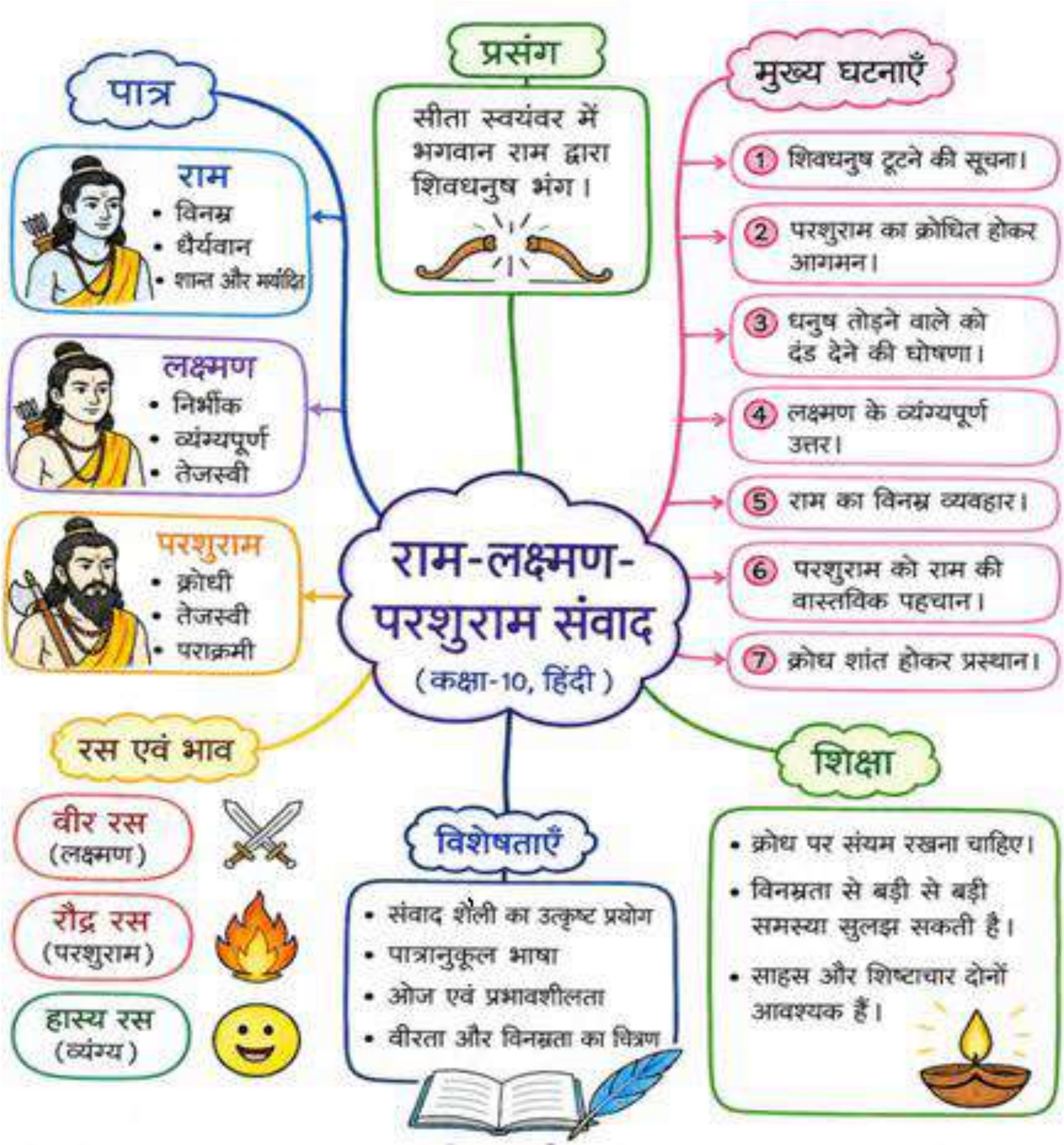

आत्मकथ्य

कविता का मूल भाव-

मुंशी प्रेमचंद के संपादन में निकलने वाली उस समय की 'हंस' पत्रिका के आत्मकथा के भाग के लिए अत्यंत प्रसिद्ध या मशहूर छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद से भी आत्मकथा लिखने के लिए कहा गया। कवि को जब अपनी आत्मकथा लिखने का प्रस्ताव मिला, तब अतीत में घटी हुई सभी घटनाएँ एक-एक करके उनकी आँखों के सामने आने लगती हैं। जिस कारण कवि अपनी आत्मकथा नहीं सुनाना चाहते और वे कई तरह के तर्क देते हैं, जिससे उन्हें अपनी आत्मकथा न सुनानी पड़े। इन्हीं तर्कों को इस काव्य में दर्शाया गया है। कवि जयशंकर प्रसाद भौंरे के माध्यम से अपनी कथा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जिस तरह से एक भौंरा फूलों के आसपास गुंजार करते हुए मँडराता फिरता है, ठीक उसी प्रकार आज कवि का मन रूपी भँवरा भी अतीत की यादों के आसपास गुनगुना कर गुंजार करते हुए न जाने अपनी कौन सी कहानी कहना चाह रहा है। उनके जीवन में सुख की जगह दुख और निराशा ने ले ली है। कवि अपने दोस्तों से पूछते हैं कि क्या तुम मेरी कहानी को सुनकर सुख प्राप्त कर सकोगे? मेरा जीवन रूपी घड़ा एकदम खाली है, जिसमें कोई भाव नहीं है। कवि यहाँ पर कहते हैं कि जिस व्यक्ति का स्वभाव जितना ज्यादा सरल होता है, उसको लोग उतना ही ज्यादा धोखा देते हैं। साथ ही साथ वे अपने निजी पलों को भी दुनिया के सामने नहीं बताना चाहते। कवि कहते हैं कि उनको जीवन में वह सुख कहाँ मिला, जिसका वे स्वप्न देखा करते थे। जिस सुख की उन्होंने कल्पना की थी। वह सुख उनकी बाहों में आते-आते, अचानक धोखा देकर भाग गया। वे कहते हैं कि उन्होंने अभी तक कोई बड़ी उपलब्धि हासिल नहीं की है और न ही वे अभी अपने दुखों को कुरेदना चाहते हैं। आज वे अपनी पत्नी की ही यादों का सहारा लेकर अपने जीवन के रास्ते की थकान दूर करते हैं अर्थात् उसी की यादें उनके थके हुए जीवन का सहारा बनीं। कवि आगे कहते हैं कि यह ज्यादा बढ़िया रहेगा कि वे चुप रहकर, बड़ी शान्ति के साथ, अन्य लोगों की कहानियों या आत्मकथाओं को सुनें। कवि यहाँ पर एक तर्क देते हुए कहते हैं कि वैसे अपने दुःख भरे क्षणों को याद करने का अभी सही समय नहीं है क्योंकि उनका दुःख इस समय शांत है। वह अभी थककर सोया है। कवि अपने दुखद क्षणों को भूलना चाहते है। वो वापस अपने दुखद अतीत को कुरेद कर फिर से दुखी नहीं होना चाहते हैं।

पाठ आधारित पद्यांश

मधुप गुन-गुना कर कह जाता, कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ, देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास,
यह लो, करते ही रहते हैं, अपना व्यंग्य-मलिन उपहास।
तब भी कहते हो-कह डालूँ, दुर्बलता अपनी बीती,
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे- यह गागर रीती।

प्रश्न- उपर्युक्त पठित काव्यांश के आधार पर सही उत्तर का चयन करें।

1. निम्न में से कौन-सा कथन कवि के विचारों की सबसे संतुलित आलोचना प्रस्तुत करता है?

(क) कवि का दृष्टिकोण पूरी तरह गलत है।

(ख) कवि का दृष्टिकोण विनम्रता सिखाता है, किंतु अनुभव साझा करने के सकारात्मक पक्ष को

सीमित कर देता है।

(ग) कवि समाज से घृणा करता है।

(घ) कवि जीवन के संघर्षों को महत्वहीन मानता है।

2. मधुप को किसका प्रतीक बताया गया है?

(क) स्वप्न का (ख) प्रेम का (ग) मन का (घ) दुख का

3. कविता के आधार पर निम्न में से कौन-सा व्यक्ति कवि की विचारधारा के सबसे निकट है?

(क) जो हर उपलब्धि का प्रचार करता है।

(ख) जो अपनी कठिनाइयों का प्रदर्शन करके सहानुभूति चाहता है।

(ग) जो अपने अनुभवों से सीखता है और विनम्र बना रहता है।

(घ) जो दूसरों के दुखों का उपहास करता है।

4. यदि कवि आज के समय में सोशल मीडिया पर अपनी जीवन-कथा साझा करने का निर्णय लेता, तो उसकी मूल भावना के सबसे अधिक विपरीत कौन-सा उद्देश्य होता?

(क) दूसरों को प्रेरित करना (ख) आत्मचिंतन करना

(ग) लोकप्रियता और सहानुभूति प्राप्त करना (घ) अनुभवों को अभिव्यक्त करना

5. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन (A): कवि अपनी आत्मकथा सुनाने से बचना चाहता है।

कारण (R): उसे लगता है कि उसके जीवन के दुख संसार के अन्य लोगों के दुखों से अलग और अधिक महत्वपूर्ण हैं।

(A) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(B) A और R दोनों सत्य हैं, पर R सही व्याख्या नहीं है।

(C) A सत्य है, R असत्य है।

(D) A असत्य है, R सत्य है।

उत्तरमाला- 1-(ख) 2-(ग) 3-(ग) 4-(ग) 5-(ग)

पाठ आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं?

उत्तर- कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहते हैं क्योंकि जीवन में बहुत सारी पीड़ादायक घटनाएँ हुई हैं। अपनी सरलता के कारण उसने कई बार धोखा भी खाया है। कवि के पास मात्र कुछ सुनहरे क्षणों की स्मृतियाँ ही शेष हैं जिसके सहारे वह अपनी जीवन-यात्रा पूरी कर रहा है। उन यादों को उसने अपने अंतरमन में सँजोकर रखा है और उन्हें वह प्रकट करना नहीं चाहता है। कवि को लगता है कि उनकी आत्मकथा में ऐसा कुछ भी नहीं हैं जिसे महान और सुखद मानकर लोग आनंदित होंगें। इन्हीं कारणों से कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहते हैं।

प्रश्न 2. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर- कवि कहता है कि उसके लिए आत्मकथा सुनाने का यह उचित समय नहीं है। कवि द्वारा ऐसा कहने का कारण यह है कि उसके जीवन में ऐसी कोई उपलब्धि नहीं मिली है, जिसे वह लोगों के सामने प्रेरणास्वरूप रख सके। कवि का जीवन दुःख और अभावों से भरा रहा हैं। कवि को अपने जीवन में जो बाहरी पीड़ा मिली है, उसे वह चुपचाप अकेले ही सहता रहा है। जीवन के इस पड़ाव पर उसके जीवन के सभी दुःख तथा व्यथाएँ थककर सोई हुई है अर्थात बहुत मुश्किल से कवि को अपनी पुरानी

वेदना से मुक्ति मिली है। आत्मकथा लिखने के लिए कवि को अपने जीवन की उन सभी व्यथाओं को जगाना होगा। इन्हीं कारणों से कवि अपनी आत्मकथा अभी नहीं लिखना चाहता।

प्रश्न 3. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर- स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का आशय जीवनमार्ग की प्रेरणा से है। कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए कवि स्वयं को जीवन यात्रा से थका हुआ मानता है। जिस प्रकार 'पाथेय' यात्रा में यात्री को सहारा देता है, आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, ठीक उसी प्रकार स्वप्न में देखे हुए किंचित सुख की स्मृति भी कवि को जीवन मार्ग में आगे बढ़ने का सहारा देती है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) मिला कहाँ वह सुख, जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।
आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि वे जिस प्रेम के सपने देख रहे थे, वो उन्हें कभी प्राप्त नहीं हुआ। कवि ने जिस सुख की कल्पना की थी, वह उसे कभी प्राप्त न हुआ और उसका जीवन हमेशा उस सुख से वंचित ही रहा। इस दुनिया में सुख छलावा मात्र है। हम जिसे सुख समझते हैं, वह अधिक समय तक नहीं रहता है, स्वप्न की तरह जल्दी ही समाप्त हो जाता है।

(ख) जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में।
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

उत्तर- कवि अपनी प्रेयसी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि प्रेममयी भोर वेला भी अपनी मधुर लालिमा उसके गालों से लिया करती थी। कवि की प्रेमिका का मुख सौंदर्य ऊषाकालीन लालिमा से भी बढ़कर था।

प्रश्न 5. 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की' कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों से कवि का आशय निजी प्रेम के उन मधुर और सुख-भरे क्षणों से है, जो कवि ने अपनी प्रेमिका के साथ व्यतीत किये थे। चाँदनी रातों में बिताए गए वे सुखदायक क्षण किसी उज्ज्वल गाथा की तरह ही पवित्र है जो कवि के लिए अपने अन्धकारमय जीवन में आगे बढ़ने का एकमात्र सहारा बने हुए हैं। इसीलिए कवि अपने जीवन की उन मधुर स्मृतियों को किसी से बाँटना नहीं चाहता बल्कि अपने तक ही सीमित रखना चाहता है।

प्रश्न 6. कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?

उत्तर- कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, उसे वह अपने प्रेमिका के रूप में व्यक्त किया है। यह प्रेमिका स्वप्न में कवि के पास आते-आते मुस्कराकर दूर चली जाती है और कवि को सुख से वंचित ही रहना पड़ता है। कवि कहता है कि अपने जीवन में वह जो सुख का सपना देखा था, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. क्या आप कवि के इस विचार से सहमत हैं कि व्यक्तिगत दुखों को सार्वजनिक नहीं करना चाहिए? अपना मत स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह व्यक्ति की परिस्थिति पर निर्भर करता है। कवि का विचार गरिमा और आत्मसंयम पर आधारित है, इसलिए वह उचित प्रतीत होता है। किंतु कई बार अपने अनुभव साझा करने से दूसरों को

प्रेरणा, सहारा और समाधान भी मिल सकता है। इसलिए संतुलित दृष्टिकोण अपनाना अधिक उचित होगा।

प्रश्न 2. 'व्यंग्य मलिन उपहास' पदबंध समाज की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है? स्पष्ट करें।

उत्तर- यह पदबंध समाज की उस प्रवृत्ति को उजागर करता है, जिसमें लोग दूसरों की असफलताओं, कमजोरियों या दुखों को समझने के बजाय उनका उपहास करते हैं। कवि को आशंका है कि उसकी जीवन-कथा भी सहानुभूति के बजाय आलोचना और उपहास का विषय बन सकती है। यह सामाजिक संवेदनहीनता की ओर संकेत करता है।

प्रश्न 3. यदि कवि आज के सोशल मीडिया युग में होता, तो उसकी सोच वर्तमान संस्कृति से किस प्रकार भिन्न होती?

उत्तर- आज सोशल मीडिया पर लोग अपनी निजी उपलब्धियों और कठिनाइयों को खुलकर साझा करते हैं। इसके विपरीत कवि निजी जीवन की गरिमा और आत्मसंयम में विश्वास रखता है। वह संभवतः आत्मप्रदर्शन से बचता और यह मानता कि व्यक्ति का मूल्य उसके कर्मों में है, न कि उसकी निजी कहानियों के प्रचार में।

क्या सीखा?

उत्साह

कविता का मूल भाव-

प्रस्तुत कविता निराला का एक आह्वान गीत है। इसमें कवि बादल से घनघोर गर्जन के साथ बरसने की अपील कर रहे हैं। बादल बच्चों के काले घुंघराले बालों जैसे हैं। कवि बादल से बरसकर सबकी प्यास बुझाने और गरजकर सुखी बनाने का आग्रह कर रहे हैं। कवि बादल में नवजीवन प्रदान करने वाली बारिश तथा सब कुछ तहस-नहस कर देने वाला वज्रपात, दोनों रूप देखते हैं इसलिए वे बादल से अनुरोध करते हैं कि वह अपने कठोर वज्रशक्ति को अपने भीतर छुपाकर सब में नई स्फूर्ति और नया जीवन डालने के लिए मूसलाधार बारिश करें। आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादल को देखकर कवि को लगता है कि वे बेचैन से हैं तभी उन्हें याद आता है कि समस्त धरती भीषण गर्मी से परेशान है इसलिए आकाश की अनजान दिशा से आकर काले-काले बादल पूरी तपती हुई धरती को शीतलता प्रदान करने के लिए बेचैन हो रहे हैं। कवि आग्रह करते हैं कि बादल खूब गरजे और बरसे। सम्पूर्ण धरती को तृप्त करें।

प्रश्न- दिए गए काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनिए।

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित-ललित, काले घुंघराले,
बाल कल्पना के-से पाले, विद्युत छबि उर में, कवि नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता फिर भर दो-
बादल गरजो!
विकल-विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर शीतल कर दो
बादल, गरजो!

प्रश्न- उपर्युक्त पठित काव्यांश के आधार पर सही उत्तर का चयन करें।

प्रश्न 1. कवि ने "वज्र छिपा, नूतन कविता" कहकर किस विचार को प्रमुखता दी है?
(क) केवल विनाश आवश्यक है। (ख) परिवर्तन के लिए शक्ति और सृजन दोनों आवश्यक हैं।
(ग) कविता का प्रकृति से कोई संबंध नहीं है। (घ) शक्ति का प्रयोग हमेशा हिंसा के लिए होता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करके उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए :-

कथन (A): "विश्व के निदाघ के सकल जन" पंक्ति केवल गर्मी से पीड़ित लोगों की ओर संकेत नहीं करती।

कारण (R): यहाँ 'निदाघ' जीवन के संघर्षों, निराशा और कष्टों का भी प्रतीक है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R सही व्याख्या नहीं है।
(ग) A सत्य है, R असत्य है।
(घ) A असत्य है, R सत्य है।

प्रश्न 3. कवि बादलों को "बाल-कल्पना के-से पाले" क्यों कहता है?

(क) बादल बच्चों से डरते हैं।

(ख) बादलों का आकार छोटा होता है।

(ग) बादलों में कल्पनाशीलता, कोमलता और सृजन की संभावनाएँ दिखाई देती हैं।

(घ) बादल केवल बच्चों को पसंद आते हैं।

प्रश्न 4. यदि किसी समाज में निराशा, बेरोज़गारी और उत्साहहीनता बढ़ जाए, तो कविता के अनुसार "बादल" किसका प्रतीक माना जा सकता हैं?

(क) विनाशकारी शक्ति (ख) परिवर्तनकारी नेतृत्व और नई ऊर्जा

(ग) आर्थिक संकट (घ) प्राकृतिक आपदा

प्रश्न 5. यदि किसी संगठन में लंबे समय से ठहराव और निराशा का वातावरण हो, तो कविता के अनुसार सबसे उपयुक्त समाधान क्या होगा?

(क) वर्तमान स्थिति को स्वीकार कर लेना (ख) केवल आलोचना करना

(ग) नई सोच, ऊर्जा और रचनात्मक नेतृत्व लाना (घ) सभी गतिविधियाँ बंद कर देना

उत्तरमाला 1.(ख) 2.(क) 3.(ग) 4.(ख) 5.(ग)

कविता आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है। क्यों?

उत्तर- कवि ने बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए नहीं बल्कि 'गरजने' के लिए कहा है, क्योंकि 'गरजना' विद्रोह का प्रतीक है। कवि ने बादल के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।

प्रश्न 2. कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?

उत्तर- यह एक आह्वान गीत है। कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादल का गरजना लोगों के मन में उत्साह भरता है इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।

प्रश्न 3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर- कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है-

i. जल बरसाने वाली शक्ति है।

ii. बादल पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाला है।

iii. बादल कवि में उत्साह और संघर्ष भर कविता में नया जीवन लाने में सक्रिय है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. कवि बादलों को केवल प्राकृतिक तत्व न मानकर परिवर्तन का प्रतीक क्यों मानता है?

उत्तर- कवि बादलों को नवजीवन, आशा और परिवर्तन का प्रतीक मानता है। वे सूखी और तप्त धरती को शीतलता प्रदान करते हैं। इसी प्रकार समाज और व्यक्ति के जीवन में नई ऊर्जा, रचनात्मकता और उत्साह लाने वाली शक्तियाँ भी बादलों के समान होती हैं। इसलिए बादल परिवर्तनकारी चेतना का प्रतीक बन जाते हैं।

प्रश्न 2. वर्तमान समय की किसी सामाजिक समस्या को ध्यान में रखते हुए बताइए कि कविता का संदेश किस प्रकार प्रासंगिक है।

उत्तर- आज बेरोज़गारी, पर्यावरण संकट और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ समाज को प्रभावित कर रही हैं। कविता का संदेश लोगों को निराशा से बाहर निकलकर सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देता है। यह कविता सिखाती है कि नई सोच, सामूहिक प्रयास और उत्साह से कठिन परिस्थितियों को बदला जा सकता है।

प्रश्न 3. यदि किसी समाज में निराशा और निष्क्रियता फैल जाए, तो कविता का संदेश उस समाज के लिए किस प्रकार उपयोगी हो सकता है?

उत्तर- कविता का संदेश ऐसे समाज को नई ऊर्जा और आशा प्रदान कर सकता है। कवि बादलों के माध्यम से सक्रियता, साहस और परिवर्तन का आह्वान करता है। वह बताता है कि कठिन परिस्थितियाँ स्थायी नहीं होतीं। सामूहिक प्रयास और सकारात्मक सोच से निराशा को दूर कर विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

अट नहीं रही है

कविता का मूल भाव-

प्रस्तुत कविता में कवि ने फाल्गुन के महीने का मानवीकरण चित्र प्रस्तुत किया है। फागुन यानी फ़रवरी-मार्च के महीने में वसंत ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु में पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नए पत्ते आते हैं। रंग-बिरंगे फूलों की बहार छा जाती है और उनकी सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। कवि को ऐसा प्रतीत होता है, मानो फागुन के साँस लेने पर सब जगह सुगंध फैल गयी हो। वे चाहकर भी अपनी आँखें इस प्राकृतिक सुंदरता से हटा नहीं सकते। इस मौसम में बाग-बगीचों, वन-उपवनों के सभी पेड़-पौधे नए-नए पत्तों से लद गए हैं, कहीं लाल रंग के हैं तो कहीं हरे और डालियाँ अनगिनत फूलों से लद गई हैं, जिससे कवि को ऐसा लग रहा है जैसे फागुन ने अपने गले में रंग-बिरंगे और सुगन्धित फूलों की माला पहन रखी हो। इस सर्वव्यापी सुंदरता का कवि को कहीं ओर-छोर नज़र में नहीं आ रहा है। कवि कहते हैं कि फागुन की सुंदरता अट नहीं रही है।

प्रश्न:- दिए गए काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनिए।

अट नहीं रही है, आभा फागुन की तन सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो
उड़ने को नभ में तुम, पर-पर कर देते हो
आँख हटाता हूँ तो, हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल, कहीं हरी, कहीं लाल
कहीं पड़ी है उर में, मंद गंध पुष्प माल
पाट-पाट शोभा श्री, पट नहीं रही है।

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथन/ कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।

कथन (A): कविता में फागुन को एक जीवंत शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

कारण (R): कवि फागुन को साँस लेते और वातावरण को प्रभावित करते हुए दिखाता है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

प्रश्न 2. यदि किसी कलाकार को वसंत ऋतु पर चित्र बनाना हो, तो कविता के आधार पर वह किस तत्व को सबसे अधिक महत्त्व देगा?

(क) वीरान और सूखे वृक्ष (ख) रंग-बिरंगे पत्ते, पुष्प और प्राकृतिक उल्लास

(ग) युद्ध और संघर्ष के दृश्य (घ) केवल मानव आकृतियाँ

प्रश्न 3. कवि द्वारा फागुन की आभा को "अट नहीं रही है" कहना किस भाव को व्यक्त करता है?

(क) प्रकृति के प्रति उदासीनता (ख) सौंदर्य की सीमितता

(ग) सौंदर्य की व्यापकता और प्रचुरता (घ) ऋतु परिवर्तन का भय

प्रश्न 4. फागुन माह में प्रकृति में क्या परिवर्तन होता है?

(क) पेड़ों पर नए पत्ते निकल आते हैं, जो कई रंगों के होते हैं

(ख) कहीं-कहीं कुछ पेड़ों पर लगता है कि भीनी-भीनी खुशबू देने वाले फूलों की माला लटकी हुई है

(ग) हर तरफ सुंदरता बिखरी पड़ी है और वह इतनी अधिक है कि धरा पर समा नहीं रही है

(घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 5. 'अट नहीं रही है', कविता की क्या विशेषता है?

(क) यह पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित है। (ख) इसमें फागुन माह का मानवीकरण किया गया है।

(ग) यह एक **शृंगार** रस प्रधान कविता है। (घ) कवि ने अपनी कल्पनाओं को रचा है।

उत्तरमाला - 1.(क) 2.(ख) 3.(ग) 4.(घ) 5.(ख)

कविता आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. छायावाद की एक खास विशेषता है अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए।

उत्तर- कविता के निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है कि प्रस्तुत कविता में अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाया गया है :

कहीं साँस लेते हो, घर घर भर देते हो
उड़ने को नभ में तुम, पर पर कर देते हो।

प्रश्न 2. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तर- फागुन का मौसम तथा दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। चारों तरफ का दृश्य अत्यंत स्वच्छ तथा हरा-भरा दिखाई दे रहा है। पेड़ों पर कहीं हरी तो कही लाल पत्तियाँ हैं, फूलों की मंद-मंद खुशबू हृदय को मुग्ध कर लेती है। इसीलिए कवि की आँख फागुन की सुंदरता से हट नहीं रही है।

प्रश्न 3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है?

उत्तर- प्रस्तुत कविता 'अट नहीं रही है' में कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी ने फागुन के सर्वव्यापक सौन्दर्य और मादक रूप के प्रभाव को दर्शाया है। पेड़-पौधे नए-नए पत्तों, फल और फूलों से अटे पड़े हैं, हवा सुगन्धित हो उठी है, प्रकृति के कण-कण में सौन्दर्य भर गया है।

प्रश्न 4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तर- फागुन में सर्वत्र मादकता मादकता छाई रहती है। प्राकृतिक शोभा अपने पूर्ण यौवन पर होती है। पेड़-पौधे नए पत्तों, फल और फूलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ-स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं। बाग-बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं। इस तरह फागुन का सौंदर्य बाकी ऋतुओं से भिन्न है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. कविता में वर्णित फागुन का वातावरण आज के पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में किस प्रकार महत्वपूर्ण प्रतीत होता है?

उत्तर- कविता में फागुन का प्राकृतिक वैभव, हरियाली और पुष्प-सुगंध का चित्रण है। आज पर्यावरण प्रदूषण और वनों की कटाई के कारण ऐसी प्राकृतिक सुंदरता संकट में है। कविता हमें प्रकृति के संरक्षण का संदेश देती है और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा प्रदान करती है।

प्रश्न 2. यदि आपको विद्यालय परिसर को अधिक सुंदर और आकर्षक बनाने की जिम्मेदारी दी जाए, तो कविता से प्रेरणा लेकर आप क्या कदम उठाएँगे?

उत्तर- मैं विद्यालय में अधिक पेड़-पौधे, फूलों की क्यारियाँ और हरित क्षेत्र विकसित करूँगा। विद्यार्थियों को प्रकृति संरक्षण के लिए प्रेरित करूँगा तथा पर्यावरण संबंधी गतिविधियाँ आयोजित करूँगा। कविता सिखाती है कि प्राकृतिक सौंदर्य केवल देखने की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन में आनंद और सकारात्मकता लाने का माध्यम भी है।

प्रश्न-3 कवि फागुन की आभा को 'अट नहीं रही है' ऐसा क्यों कहता है?

उत्तर- कवि फागुन की आभा को "अट नहीं रही है" इसलिए कहता है क्योंकि वसंत का सौंदर्य चारों ओर इतनी प्रचुरता से फैला हुआ है कि उसे किसी सीमा में बाँधा नहीं जा सकता। यह अभिव्यक्ति प्रकृति की असीम सुंदरता, जीवन्तता और उल्लासपूर्ण स्वरूप को प्रकट करती है, जो मनुष्य के मन को सहज ही आकर्षित कर लेता है।

क्या सीखा?

यह दंतुरित मुसकान

कविता का मूल भाव-

इस कविता में कवि नागार्जुन ने नवजात शिशु की मुसकान के सौंदर्य के बारे में बताया है। कवि कहते हैं कि शिशु की मुसकान इतनी मनमोहक और आकर्षक होती है कि किसी मृतक में भी जान डाल दे। खेलने के बाद धूल से भरा तुम्हारा शरीर देखकर ऐसा लगता है मानो कमल का फूल तालाब छोड़कर मेरी झोपड़ी में आकर खिल गया हों। तुम्हारे स्पर्श को पाकर पत्थर भी मानो पिघलकर जल हो गया हो यानी तुम्हारे जैसे शिशु का कोमल स्पर्श पाकर किसी भी पत्थर-हृदय व्यक्ति का दिल पिघल जाएगा।

कवि कहते हैं कि उनका मन बाँस और बबूल की भांति नीरस और ठूँठ हो गया था परन्तु तुम्हारे कोमलता का स्पर्श मात्र पड़ते ही हृदय भी शेफालिका के फूलों की भाँति झड़ने लगा। कवि के हृदय में वात्सल्य की धारा बह निकली और वे अपने शिशु से कहते हैं कि तुमने मुझे आज से पूर्व नहीं देखा है इसलिए मुझे पहचान नहीं रहे। वे कहते हैं कि तुम्हे थकान से उबारने के लिए मैं अपनी आँखे फेर लेता हूँ ताकि तुम भी मुझे एकटक देखने के श्रम से बच सको लेकिन जब भी हम दोनों की निगाहें मिलती हैं, तब तुम्हारी यह मुस्कान मुझे आकर्षित कर लेती है। कवि कहते हैं कि क्या हुआ यदि तुम मुझे पहचान नहीं पाए। यदि तुम्हारी माँ न होती तो आज मैं तुम्हारी यह मुसकान भी ना देख पाता। तुम्हारा मेरा क्या सम्बन्ध, यह तुम इसलिए नहीं जानते क्योंकि मैं इधर-उधर भटकता रहा, तुम्हारी ओर ध्यान ना दिया। तुम्हारी माँ ने ही सदा तुम्हें स्नेह-प्रेम दिया और देखभाल की।

प्रश्न:- दिए गए काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनिए।

पाठ आधारित पद्यांश

तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान,
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारा यह गात ....
छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे, जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल?
तुम मुझे पाए नहीं पहचान?
देखते ही रहोगे अनिमेष!
थक गए हो?
आँख लूँ मैं फेर?

कविता आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कवि के अनुसार छोटे से बच्चे की मन को हरने वाली मुसकान क्या-क्या कर सकती है?

(क) जीवन की कठिन परिस्थितियों से निराश-हताश हो चुके व्यक्तियों और यहाँ तक कि बेजान व्यक्ति को भी जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं।

(ख) छोटे-छोटे दाँतों वाली मुसकान को कोई देख ले तो वह एक बार प्रसन्नता से खिल उठे। उसके भी मन में इस दुनिया की ओर आकर्षण जाग उठे।

(ग) बच्चे की मधुर मुसकान देख कर पत्थर जैसे कठोर हृदय वाले मनुष्य का मन भी पिघलाकर अति कोमल हो जाता है।

(घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 2. किसको देखकर कवि का मन अथवा स्वभाव भी पिघल कर शेफालिका के फूलों की भाँति सरस और सुंदर हो गया है?

(क) बच्चे के सुन्दर मुख को देख कर (ख) बच्चे की मधुर मुस्कराहट को देखकर

(ग) बच्चे और उसकी माँ को देखकर (घ) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 3. बच्चा कवि को अपलक अर्थात बिना पलक झपकाए क्यों देख रहा है?

(क) क्योंकि बच्चा कवि को पहचान गया था।

(ख) क्योंकि कवि और बच्चे में अटूट सम्बन्ध था।

(ग) क्योंकि बच्चा पहली बार कवि को देख रहा था।

(घ) क्योंकि कवि बहुत बार बच्चे से मिल गया था।

प्रश्न 4. कवि "बाँस था कि बबूल?" प्रश्न के माध्यम से किस ओर संकेत करता है?

(क) वनस्पति विज्ञान के ज्ञान की ओर

(ख) बच्चे के स्पर्श से कठोर और रूखे स्वभाव में आए परिवर्तन की ओर

(ग) ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों की ओर

(घ) पेड़ों की उपयोगिता की ओर

प्रश्न 5. यदि कविता का केंद्रीय संदेश आज के समाज में लागू किया जाए, तो निम्नलिखित में से कौन-सा निष्कर्ष सबसे उपयुक्त होगा?

(क) जीवन में केवल भावनाएँ ही महत्वपूर्ण हैं।

(ख) बच्चों को सामाजिक समस्याओं से दूर रखना चाहिए।

(ग) प्रेम, अपनापन और निष्कपटता मानवीय संबंधों को पुनर्जीवित कर सकते हैं।

(घ) कठिनाइयों का समाधान केवल तकनीकी प्रगति से संभव है।

उत्तरमाला - 1.(घ) 2.(ख) 3.(ग) 4.(ख) 5.(ग)

कविता आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- प्रवास पर रहने के कारण कवि बच्चे की मुस्कान को पहली बार देखता है तो वह उसकी मुस्कान पर मुग्ध हो जाता है और उसकी उदासी एवं निराशा दूर हो जाती है।

प्रश्न 2. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

उत्तर- बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में बहुत अंतर होता है। बच्चे की मुसकान अत्यंत सरल, निश्छल, भोली और स्वार्थरहित होती है। इस मुसकान में स्वाभाविकता होती है। इसके विपरीत एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में स्वार्थपरता तथा बनावटीपन हो सकता है। वह अधिकतर तभी मुसकराता है जब उसका स्वार्थ होता है। इसमें कुटिलता देखी जा सकती है जबकि बच्चे की मुसकान में हमेशा सरलता दिखाई देती है।

प्रश्न 3. कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर- कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है:-

(क) कवि को लगता है कि कमल तालाब छोड़कर इसकी झोपड़ी में खिल गये हैं।

(ख) ऐसा लगता है जैसे पत्थर पिघलकर जलधारा के रूप में बह रहे हों।

(ग) बाँस या बबूल से शेफालिका के फूल झरने लगे हों।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल, बाँस था कि बबूल?

उत्तर- (क) 'छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात' का आशय यह है कि कवि को बच्चे का धूल धूसरित शरीर देखकर ऐसा लगता है जैसे कमल तालाब छोड़कर उसकी झोपड़ी में खिल गए हों अर्थात् बच्चे का रूप-सौंदर्य कमल पुष्प के समान सुंदर है।

उत्तर- (ख) कम उम्र वाले शिशु जिनके दाँत निकल रहे होते हैं, उनकी मुसकान मनोहारी होती है। ऐसे बच्चों की निश्छल मुसकान देखकर, उसका स्पर्श पाकर बाँस या बबूल से भी शेफालिका के फूल झड़ने लगते हैं अर्थात् कठोर हृदय वाला व्यक्ति भी सरस हो जाता है और मुसकराने लगता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न- 1. क्या आज के तकनीकी और व्यस्त जीवन में भी कविता का संदेश प्रासंगिक है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- हाँ, कविता का संदेश आज भी अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक जीवन में लोग तनाव, अकेलेपन और प्रतिस्पर्धा से घिरे हुए हैं। ऐसे समय में प्रेम, आत्मीयता और मानवीय संबंधों का महत्व और बढ़ जाता है। शिशु की मुस्कान हमें याद दिलाती है कि वास्तविक सुख भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि स्नेहपूर्ण संबंधों में है।

प्रश्न- 2. कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि बच्चों की उपस्थिति परिवार और समाज के लिए क्यों महत्वपूर्ण मानी जाती है।

उत्तर- बच्चे अपनी निष्कपटता, सहजता और आनंदमय स्वभाव से परिवार और समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। उनकी मुस्कान और व्यवहार लोगों के मन से तनाव और निराशा को कम करते हैं। कविता यह संदेश देती है कि बच्चे केवल परिवार का हिस्सा नहीं, बल्कि आशा, प्रेम और नवजीवन के प्रतीक भी हैं।

प्रश्न- 3. कविता का केंद्रीय संदेश आधुनिक समाज में मानवीय संबंधों को सुदृढ़ बनाने में किस प्रकार सहायक हो सकता है?

उत्तर- कविता सिखाती है कि निष्कपट प्रेम, आत्मीयता और संवेदनशीलता मानवीय संबंधों की आधारशिला हैं। आज के व्यस्त और स्वार्थपूर्ण वातावरण में यदि लोग एक-दूसरे के प्रति स्नेह और सम्मान का भाव रखें, तो संबंध अधिक मजबूत और सुखद बन सकते हैं। यही कविता का स्थायी और सार्वकालिक संदेश है।

फसल

कविता का मूल भाव-

इस कविता में कवि नागार्जुन मानव तथा प्रकृति के योग से उत्पन्न फसल के महत्त्व के बारे में बताता है। साथ ही इसे पैदा करने में किनका योगदान रहता है? उसे स्पष्ट किया है। वे कहते हैं कि इसे पैदा करने में एक या दो नदियों का पानी नहीं होता बल्कि अनेक नदियों के पानी का योगदान होता है अर्थात जब सभी नदियों का पानी भाप बनकर उड़ जाता है, तब सब बादल बनकर बरसते हैं जो कि फसल उपजाने में सहायक होता है। वे किसानों का महत्त्व स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि फसल तैयार करने में असंख्य लोगों के हाथों की मेहनत होती है। कवि बताते हैं कि हर मिट्टी की अलग अलग विशेषता होती है, उनके रूप, गुण, रंग एक सामान नहीं होते। सबका योगदान फसल को तैयार करने में है। कवि ने बताया है कि फसल बहुत चीज़ों का सम्मिलित रूप है। जैसे नदियों का पानी, हाथों की मेहनत, भिन्न मिट्टियों का गुण, सूर्य की किरणों का प्रभाव तथा मंद हवाओं का स्पर्श, इन सबके मिलने से ही हमारी फसल तैयार होती है।

प्रश्न:- दिए गए काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनिए।

पाठ आधारित पद्यांश

एक के नहीं, दो के नहीं,
ढ़ेर सारी नदियों के पानी का जादू;
एक के नहीं, दो के नहीं,
लाख-लाख कोट-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा;
एक की नहीं, दो की नहीं,
हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म;
फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह, नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है, भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

बहुविकल्पात्मक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1. यदि किसी क्षेत्र में पर्याप्त श्रम हो, लेकिन पानी और उपजाऊ मिट्टी का अभाव हो, तो कविता के अनुसार उसका संभावित परिणाम क्या होगा?

(क) भरपूर फसल होगी। (ख) फसल उत्पादन प्रभावित होगा।
(ग) श्रम की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। (घ) केवल सूरज की किरणों से फसल तैयार हो जाएगी।

प्रश्न 2. कवि ने "नदियों के पानी का जादू" कहकर किस तथ्य को रेखांकित किया है?

(क) पानी में अलौकिक शक्तियाँ होती हैं। (ख) सिंचाई कृषि की सफलता का आधार है।
(ग) नदियाँ केवल सौंदर्य का स्रोत हैं। (घ) फसल का श्रम से कोई संबंध नहीं है।

प्रश्न 3. यदि कोई व्यक्ति भोजन की बर्बादी करता है, तो कविता के संदेश के आधार पर उसका व्यवहार किस बात की उपेक्षा माना जाएगा?

(क) केवल किसान की मेहनत की (ख) केवल प्रकृति की

(ग) प्रकृति और मानव-श्रम दोनों के संयुक्त योगदान की (घ) केवल आर्थिक संसाधनों की

प्रश्न 4. यदि आधुनिक कृषि में मशीनों का उपयोग बढ़ जाए, तब भी कविता का केंद्रीय संदेश क्यों प्रासंगिक रहेगा?

(क) क्योंकि मशीनें प्रकृति का स्थान ले सकती हैं।

(ख) क्योंकि फसल केवल तकनीक से पैदा होती है।

(ग) क्योंकि कृषि आज भी प्रकृति, संसाधनों और मानवीय प्रयासों के संतुलन पर निर्भर है।

(घ) क्योंकि किसान की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी।

प्रश्न 5. "संदली" शब्द का क्या अर्थ हैं?

(क) काली मिट्टी (ख) उपजाऊ मिट्टी (ग) साफ मिट्टी (घ) खुशबूदार मिट्टी

उत्तरमाला- 1.(ख) 2.(ख) 3.(ग) 4.(ग) 5.(घ)

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'फसल' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर- फसल कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि मानव और प्रकृति के सहयोग से ही सृजन संभव है। फसल का नाम सुनते ही लहलहाती फसल और श्रमिक का श्रम आँखों के समक्ष घूमने लगता है।

प्रश्न 2. भाव स्पष्ट कीजिए-

रूपांतरण है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि यह फसल और कुछ नहीं सूरज की किरणों का बदला हुआ रूप है। फसलों की हरियाली सूरज की करने के प्रभाव के कारण ही आती है। फसलों को बढ़ाने में हवा की थिरकन का भी भरपूर योगदान है।

प्रश्न 3. कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर- कवि के अनुसार फसल पानी, मिट्टी, धूप, हवा और पानी का जादू समाया हुआ है। सूरज और हवा का प्रभाव है। इन सब के साथ किसानों और मजदूरों का श्रम सम्मिलित है।

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नोतर-

प्रश्न 1. कवि फसल को केवल कृषि उत्पाद न मानकर प्रकृति और मानव के श्रम का संयुक्त परिणाम क्यों मानता है?

उत्तर- कवि के अनुसार फसल केवल बीज बोने का परिणाम नहीं है। इसके निर्माण में नदियों का जल, मिट्टी की उर्वरता, सूर्य की किरणें, वायु का सहयोग तथा लाखों हाथों का श्रम शामिल होता है। इसलिए फसल प्रकृति और मनुष्य के सामूहिक प्रयास का जीवंत प्रतीक बन जाती है।

प्रश्न 2. भोजन की बर्बादी को कविता के संदर्भ में किस प्रकार देखा जा सकता है?

उत्तर- भोजन की बर्बादी फसल के निर्माण में लगे किसानों के श्रम, प्रकृति के संसाधनों और समय की उपेक्षा है। कविता हमें यह समझाती है कि एक अन्न का दाना अनेक प्राकृतिक शक्तियों और मानवीय प्रयासों का परिणाम है। इसलिए भोजन का सम्मान करना हमारा नैतिक दायित्व है।

प्रश्न 3. आधुनिक तकनीक के बढ़ते प्रयोग के बावजूद कविता का संदेश आज भी क्यों प्रासंगिक है?

उत्तर- यद्यपि कृषि में आधुनिक मशीनों का उपयोग बढ़ गया है, फिर भी फसल का उत्पादन प्रकृति के संसाधनों और मानवीय प्रयासों पर निर्भर है। मिट्टी, जल, सूर्य और वायु का महत्व आज भी बना हुआ है। इसलिए कविता का संदेश कि फसल सामूहिक योगदान का परिणाम है, आज भी उतना ही सार्थक है।

प्रश्न 4. कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि पर्यावरण संरक्षण और खाद्य-सुरक्षा के बीच क्या संबंध है।

उत्तर- कविता दर्शाती है कि फसल का अस्तित्व जल, मिट्टी, वायु और सूर्य जैसे प्राकृतिक तत्वों पर निर्भर है। यदि पर्यावरण प्रदूषित होगा या प्राकृतिक संसाधन नष्ट होंगे, तो कृषि उत्पादन प्रभावित होगा। इसलिए खाद्य-सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। यह कविता इसी पारस्परिक संबंध को उजागर करती है।

क्या सीखा ?

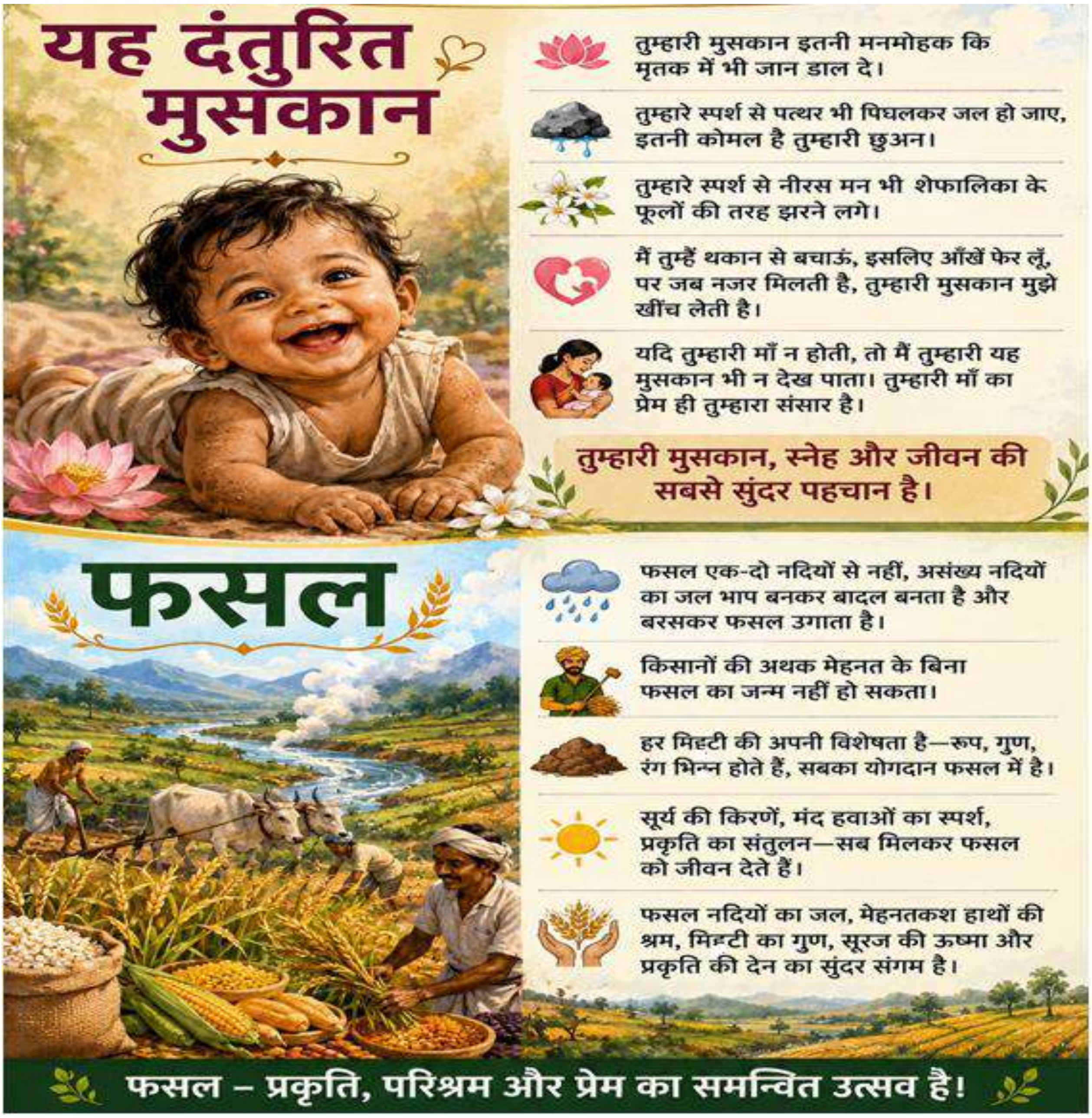

संगतकार

कविता का मूल भाव-

इस कविता में कवि मंगलेश डबराल ने गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। यह कविता मुख्य संगीतकार का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के ईद-गिर्द घूमती है। कवि संगतकार के उस हुनर के बारे में वर्णन करते है, जब मुख्य संगीतकार अपनी ही धुन में खो जाता है और अपने सुरों से भटकने लग जाता है, संगतकार उस समय सही सरगम को दोबारा पकड़ने में मुख्य गायक की मदद कर उसे उस विकट स्थिति से बाहर लाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि संगतकार हमेशा मूल स्वरों को ही दोहराता रहता हैं। जब मुख्य गायक गीत गाते हुए सुरों की दुनिया में खो जाता हैं और अंतरे के सुर-तान की बारीकियों में उलझकर बिखरने लगता हैं व मुख्य सुरों को भूल जाता हैं । तब वह संगतकार के गाने को सुनकर वापस मुख्य सुर से जुड़ जाता हैं। जब भी संगतकार मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलाता है यानी उसके साथ गाना गाता है तो उसकी आवाज़ में एक संकोच साफ सुनाई देता है। और उसकी हमेशा यही कोशिश रहती है कि उसकी आवाज़ मुख्य गायक की आवाज़ से धीमी रहे। अर्थात उसका स्वर भूल कर भी मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा न हो जाए, इसका ध्यान वह बहुत अच्छे से रखता है। लेकिन हमें इसे संगतकार की कमजोरी या असफलता नहीं माननी चाहिए क्योंकि वह मुख्य गायक के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए ऐसा करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपना स्वर ऊँचा कर वह मुख्य गायक के सम्मान को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता है। संगतकार जान-बूझकर अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा नहीं होने देते हैं। यह संगतकार द्वारा अपनी प्रतिभा का त्याग है जो योग्यता और सामर्थ्य होने पर भी मुख्य गायक की सफलता में बाधक नहीं बनता है और मानवता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

प्रश्न दिए गए काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनिए।

पद्यांश- 1

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर,
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था

बहुविकल्पात्मक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1. कवि संगतकार को "पीछे छूटा हुआ सामान समेटने वाला" क्यों कहता है?

(क) क्योंकि वह मंच की सफाई करता है।

(ख) क्योंकि वह मुख्य गायक की कमियों को संभालकर प्रस्तुति को संतुलित बनाता है।

(ग) क्योंकि उसका काम केवल सामान उठाना है।

(घ) क्योंकि वह कार्यक्रम का आयोजक होता है।

प्रश्न 2. यदि समाज संगतकार जैसे लोगों के योगदान को लगातार अनदेखा करता रहे, तो इसका सबसे गंभीर परिणाम क्या हो सकता है?

(क) प्रमुख व्यक्तियों की लोकप्रियता बढ़ेगी। (ख) सहयोग और टीम-भावना कमजोर पड़ जाएगी।

(ग) कला का विकास अधिक होगा। (घ) लोगों की जिम्मेदारियाँ कम हो जाएँगी।

प्रश्न 3. "जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन" पंक्ति का मुख्य आशय क्या है?

(क) संगतकार मुख्य गायक की आयु बताता है।

(ख) संगतकार उसे उसके प्रारंभिक संघर्षों और सीखने के दिनों की याद दिलाता है।

(ग) संगतकार केवल पुरानी बातें करता है।

(घ) मुख्य गायक अपना बचपन भूल जाता है।

प्रश्न 4. संगतकार हमेशा मुख्य गायक के लिए किसकी तरह कार्य करता है?

(क) एक शिष्य की तरह (ख) एक मार्गदर्शक की तरह

(ग) एक गुरु की तरह (घ) एक साथी की तरह

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): कविता उन लोगों के महत्व को रेखांकित करती है जो पर्दे के पीछे रहकर कार्य करते हैं।

कारण (R): समाज प्रायः केवल प्रमुख व्यक्तियों की उपलब्धियों को पहचानता है और सहयोगियों के योगदान को अनदेखा कर देता है।

(A) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(B) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R सही व्याख्या नहीं है।

(C) A सत्य है, R असत्य है। (D) A असत्य है, R सत्य है।

उत्तर- 1. (ख) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ख) 5. (क)

पद्यांश- 2

कभी-कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

बहुविकल्पात्मक प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1. फिर से गाया जा सकता है, गाया जा चुका राग" पंक्ति का आशय क्या है?

(क) पुराने रागों का कोई महत्त्व नहीं होता।

(ख) अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती।

(ग) सहयोग मिलने पर व्यक्ति पुनः प्रयास कर सकता है।

(घ) केवल संगतकार ही राग गा सकता है।

प्रश्न 2. यदि संगतकार मुख्य गायक का साथ न दे, तो कविता के अनुसार सबसे संभावित परिणाम क्या होगा?

(क) गायक का आत्मविश्वास कम हो सकता है।

(ख) राग और अधिक प्रभावशाली हो जाएगा।

(ग) संगतकार प्रसिद्ध हो जाएगा।

(घ) श्रोताओं की संख्या बढ़ जाएगी।

प्रश्न 3. कवि इस अंश के माध्यम से समाज को क्या संदेश देना चाहता है?

(क) केवल सफल व्यक्तियों का सम्मान करना चाहिए।

(ख) दूसरों की कमजोरियों का उपहास करना चाहिए।

(ग) प्रत्येक व्यक्ति को सहयोग और सहानुभूति की आवश्यकता होती है।

(घ) कला में केवल मुख्य कलाकार का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): संगतकार की भूमिका केवल संगीत तक सीमित नहीं है।

कारण (R): वह मुख्य गायक को भावनात्मक सहारा भी प्रदान करता है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सत्य है, R असत्य है।

(घ) A असत्य है, R सत्य है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथन और कारण पर विचार करते हुए उपयुक्त विकल्प का चयन कर लिखिए:-

कथन (A): कवि मुख्य गायक की हिचक को उसकी कमजोरी मानता है।

कारण (R): उसकी आवाज़ में झिझक और स्वर को ऊँचा न उठाने का प्रयास दिखाई देता है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

(ख) A सत्य है, R असत्य है।

(ग) A असत्य है, R सत्य है।

(घ) A और R दोनों असत्य हैं।

उत्तर- 1.(ग) 2.(क) 3.(ग) 4.(क) 5.(ग)

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

उत्तर- संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और भी बहुत से क्षेत्रों में होते हैं-

- खेल में जीत का श्रेय कैप्टन को मिलता है जबकि विजेता बनाने में कई खिलाड़ियों, उनके कोच और अन्य अनेक लोगों का का योगदान होता है।
- राजनीति के क्षेत्र में चुनाव में जीत केवल उम्मीदवार विशेष की होती है, परंतु उसे विजयी बनाने में छोटे नेताओं के अलावा चुनावी चंदा देने वाले, प्रचार करने वाले जैसे बहुतों का योगदान होता है।
- सिनेमा के क्षेत्र में फ़िल्म को सफल बनाने में अगणित लोगों का योगदान होता है।
- शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षाफल बढ़ने का श्रेय अधिकारियों को मिलता है पर उसके लिए अध्यापकगण एवं अन्य कर्मचारियों का अमूल्य योगदान होता है।

प्रश्न 2. संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

उत्तर- संगतकार विभिन्न रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं; जैसे

- वे मुख्य गायक की भारी आवाज़ में अपनी सुंदर और कमज़ोर आवाज़ की गूंज मिलाकर गायन को प्रभावपूर्ण बना देते हैं।
- गायक जब अंतरे के जटिल जंगल में खो जाते हैं तो संगतकार ही स्थायी को सँभाले रखकर उनकी मदद करते हैं।
- तारसप्तक गाते समय संगतकार उसके स्वर में स्वर मिलाकर उसे अकेले होने का अहसास नहीं होने देते हैं।
- संगतकार मुख्य गायक के स्वर से अपना स्वर ऊँचा न करके उसकी सफलता में बाधक नहीं बनते हैं।

प्रश्न 3. भाव स्पष्ट कीजिए।

और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है।
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है।
उसे विफलता नहीं।
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों का भाव यह है कि संगतकार जान-बूझकर अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा नहीं होने देते हैं। यह संगतकार द्वारा अपनी प्रतिभा का त्याग है, जो योग्यता और सामर्थ्य होने पर भी मुख्य गायक की सफलता में बाधक नहीं बनता है और मानवता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 4. कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नज़र आता है उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है। इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- तारसप्तक गाते समय स्वरों के उतार-चढ़ाव में जब मुख्य गायक की आवाज़ बैठने लगती है और उसकी आवाज़ कुछ गिरती हुई महसूस होती है, तब संगतकार मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिलाकर उसे सहारा देते हैं तथा उसको स्वर बिखरने से पहले ही सँभाल लेते हैं और उसके गायन की सफलता को विफलता में नहीं बदलने देते हैं। इस प्रकार मुख्य गायक की सफलता में संगतकार की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

प्रश्न 5. सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है, तब उसे सहयोगी किस तरह सँभालते हैं?

उत्तर- सफलता के शीर्ष पर पहुँचकर जब कोई व्यक्ति अचानक लड़खड़ा जाता है तो उसके सहयोगी उसे साहस एवं हौंसला बनाए रखने के लिए प्रेरित करते हैं। वे तन-मन से ही नहीं, आवश्यकता होने पर धन से भी उसकी सहायता करते हैं। वे उसे उसकी कमियों के प्रति सचेत करते हैं तथा दुबारा सफलता के शीर्ष पर पहुँचाने में मदद करते हैं।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. कविता में संगतकार को मुख्य गायक का सहायक मात्र न मानकर एक महत्वपूर्ण कलाकार क्यों माना गया है?

उत्तर- संगतकार केवल मुख्य गायक का साथ ही नहीं देता, बल्कि उसके भटकने या कठिन तानों में उलझने पर प्रस्तुति की लय और संतुलन बनाए रखता है। वह कार्यक्रम की निरंतरता सुनिश्चित करता है। इसलिए उसका योगदान अदृश्य होते हुए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है और उसे एक स्वतंत्र कलाकार के रूप में सम्मान मिलना चाहिए।

प्रश्न 2. यदि किसी संस्था की सफलता का श्रेय केवल उसके प्रमुख को दिया जाए, तो कविता के आधार पर आप इस स्थिति का मूल्यांकन कैसे करेंगे?

उत्तर- कविता के अनुसार यह दृष्टिकोण अधूरा है। किसी भी संस्था की सफलता के पीछे अनेक सहयोगियों का योगदान होता है। यदि केवल प्रमुख व्यक्ति को श्रेय दिया जाए, तो पर्दे के पीछे कार्य करने वाले लोगों की मेहनत की उपेक्षा होगी। सफलता वास्तव में सामूहिक प्रयास का परिणाम होती है।

प्रश्न 3. यदि संगतकार अपनी भूमिका ठीक से न निभाए, तो मुख्य गायक की प्रस्तुति पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर- यदि संगतकार सावधानी और दक्षता से अपना कार्य न करे, तो प्रस्तुति की लय, संतुलन और प्रभाव कमजोर पड़ सकते हैं। मुख्य गायक की प्रतिभा होने के बावजूद प्रस्तुति में सामंजस्य नहीं रहेगा। इससे स्पष्ट होता है कि सफलता के लिए सहयोगी भूमिकाएँ भी उतनी ही आवश्यक होती हैं जितनी नेतृत्वकारी भूमिकाएँ।

क्या सीखा?

नेताजी का चश्मा

पाठ सारांश-

हालदार साहब को हर पन्द्रहवें दिन कम्पनी के काम से एक छोटे कस्बे से गुजरना पड़ता था। उस कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का कारखाना, दो ओपन सिनेमाघर तथा एक नगरपालिका थी। नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती रहती थी। कभी सड़के पक्की करवाने का काम तो कभी शौचालय बनवा दिया, तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। एक बार नगरपालिका के एक उत्साही अधिकारी ने मुख्य बाज़ार के चैराहे पर सुभाषचन्द्र बोस की संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। चूँकि बजट ज्यादा नहीं था इसलिए मूर्ति बनाने का काम कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के शिक्षक को सौंपा गया। मूर्ति सुन्दर बनी थी बस एक चीज़ की कमी थी, नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। एक सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया। जब हालदार साहब आए तो उन्होंने सोचा वाह भई! यह आइडिया ठीक है। मूर्ति पत्थर की पर चश्मा रीयल। दूसरी बार जब हालदार साहब आए तो उन्हें मूर्ति पर तार का फ्रेम वाले गोल चश्मा लगा था। तीसरी बार फिर उन्होंने नया चश्मा पाया। इस बार वे पानवाले से पूछ बैठे कि नेताजी का चश्मा हर दिन बदल कैसे जाता है। पानवाले ने बताया कि यह काम कैप्टन चश्मेवाला करता है। हालदार साहब को समझते देर न लगी कि बिना चश्मे वाली मूर्ति कैप्टन को खराब लगती होगी इसलिए अपने उपलब्ध फ्रेम में से एक को वह नेताजी के मूर्ति पर फिट कर देता होगा। हालदार साहब ने पानवाले से जानना चाहा कि कैप्टेन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आजाद हिन्द फ़ौज का कोई भूतपूर्व सिपाही? पानवाला बोला कि वह लंगड़ा क्या फ़ौज में जाएगा, वह पागल है इसलिए ऐसा करता है। हालदार साहब को एक देशभक्त का मजाक बनते देखना अच्छा नहीं लगा। कैप्टेन को देखकर उन्हें आश्चर्य हआ चूँकि वह एक बूढ़ा मरियल-लंगड़ा सा आदमी था जिसके सिर पर गांधी टोपी तथा चश्मा था, उसके एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे में एक बांस में टंगे ढेरों चश्मे थे। वह उसका वास्तविक नाम जानना चाहते थे परन्तु पानवाले ने इससे ज्यादा बताने से मना कर दिया। दो साल के भीतर हालदार साहब ने नेताजी की मूर्ति पर कई चश्मे लगते हुए देखे।

एक बार जब हालदार साहब कस्बे से गुजरे तो मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं था। पूछने पर पता चला कि कैप्टेन मर गया, उन्हें बहुत दुःख हुआ। पंद्रह दिन बाद कस्बे से गुजरे तो सोचा कि वहाँ नहीं रुकेंगे, पान भी नहीं खाएंगे, मूर्ति की ओर देखेंगे भी नहीं। परन्तु आदत से मजबूर हालदार साहब की नजर चौराहे पर आते ही आँखे मूर्ति की ओर उठ गईं। वे जीप से उतरे और मूर्ति के सामने जाकर खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना हुआ छोटा-सा चश्मा रखा था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। यह देखकर हालदार साहब की आँखे नम हो गईं।

प्रश्न-1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए-

हालदार साहब को यह सब कुछ बड़ा विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था। इन्हीं ख़्यालों में खोए-खोए पान के पैसे चुकाकर, चश्मेवाले की देश-भक्ति के समक्ष नतमस्तक होते हुए वह जीप की तरफ चले, फिर रुके, पीछे मुड़े और पानवाले के पास जाकर पूछा, क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का

साथी है? या आज़ाद हिन्द फौज का भूतपूर्व सिपाही? पानवाला नया पान खा रहा था। पान पकड़े अपने हाथ को मुँह से डेढ़ इंच दूर रोककर उसने हालदार साहब को ध्यान से देखा, फिर अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाई और मुसकराकर बोला- नहीं साब! वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल! वो देखो, वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फोटो-वोटो छपवा दो उसका कहीं। हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक रह गए। एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है! हालदार साहब चक्कर में पड़ गए।

1. हालदार साहब चश्मेवाले की देशभक्ति के समक्ष नतमस्तक क्यों हैं?

(क) क्योंकि वह नेताजी का सैनिक था।
(ख) क्योंकि वह गरीब होते हुए भी नेताजी के प्रति सम्मान बनाए रखता था।
(ग) क्योंकि उसकी दुकान बहुत प्रसिद्ध थी।
(घ) क्योंकि वह नगरपालिका का कर्मचारी था।

2. पानवाले द्वारा कैप्टन को 'पागल' कहना किस सामाजिक प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है?

(क) समाज देशभक्तों का सम्मान करता है।
(ख) समाज हर व्यक्ति को समान दृष्टि से देखता है।
(ग) समाज अक्सर असाधारण कार्य करने वालों को गलत समझ लेता है।
(घ) समाज गरीब लोगों की सहायता करता है।

3. यदि हालदार साहब भी पानवाले की तरह कैप्टन को "पागल" मान लेते, तो कहानी का कौन-सा प्रमुख तत्त्व कमजोर पड़ जाता?

(क) हास्य का तत्व (ख) नगर विकास का महत्व
(ग) सच्ची देशभक्ति की पहचान (घ) नेताजी का ऐतिहासिक महत्व

4. "तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है?" इस कथन से हालदार साहब के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषता प्रकट होती है?

(क) अहंकार (ख) संवेदनशीलता और सहानुभूति (ग) चतुराई (घ) संदेहशीलता

5. निम्न में से कौनसा निष्कर्ष इस गद्यांश के आधार पर सर्वाधिक उचित है?

(क) कैप्टन आर्थिक रूप से संपन्न था।
(ख) कैप्टन नेताजी का व्यक्तिगत मित्र था।
(ग) कैप्टन का सम्मान उसके कार्यों से था, पद या पहचान से नहीं।
(घ) कैप्टन को लोग बहुत आदर देते थे।

प्रश्न	1	2	3	4	5
उत्तर	ख	ग	ग	ख	ग

भाग-1 लघु-उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'कैप्टन' शब्द सामान्यतः सेना से जुड़ा होता है, फिर चश्मेवाले के संदर्भ में इस संबोधन का प्रयोग किस भाव को व्यक्त करता है? तर्क सहित उत्तर दीजिए?

उत्तर- सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि उसके अंदर देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले सेनानियों का भरपूर सम्मान करता था। वह नेताजी की मूर्ति को बार-बार चश्मा पहना कर देश के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करता था। देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना उसके हृदय में किसी भी फ़ौजी से कम नहीं थी।

प्रश्न 2 आशय स्पष्ट कीजिए-

क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ न्योछावर करने वालों पर भी हँसती है और अपने स्वार्थ के मौके तलाशती है?

उत्तर- हालदार साहब बार-बार सोचते रहे कि उस कौम का भविष्य कैसा होगा जो उन लोगों की हँसी उड़ाती है जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी, जवानी-जिंदगी सब कुछ त्याग कर देते हैं। साथ ही वह ऐसे अवसर तलाशती रहती है, जिसमें उसकी स्वार्थ की पूर्ति हो सके, चाहे उसके लिए उन्हें अपनी नैतिकता को भी तिलांजलि क्यों न देनी पड़े। अर्थात आज हमारे समाज में स्वार्थ पूर्ति के लिए अपना ईमान तक बेच दिया जाता है। यहाँ देशभक्ति को मूर्खता समझा जाता है।

प्रश्न 3. लेखक ने पानवाले का चित्रण किन विशेषताओं के माध्यम से किया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सड़क के चौराहे के किनारे एक पान की दुकान में एक पानवाला बैठा है। वह काला तथा मोटा है, उसके सिर पर गिने-चुने बाल ही बचे हैं। वह एक तरफ ग्राहक के लिए पान बना रहा है, वहीं दूसरी ओर उसका मुँह पान से भरा है। पान खाने के कारण उसके होंठ लाल तथा कहीं-कहीं काले पड़ गए हैं। उसने अपने कंधे पर एक कपड़ा रखा हुआ है जिससे रह-रहकर अपना चेहरा साफ़ करता है।

प्रश्न 4. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है, पागल!"–इस कथन में निहित व्यंग्य एवं भावार्थ को स्पष्ट करते हुए कैप्टन के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- कैप्टन के बारे में हालदार साहब द्वारा पूछे जाने पर पानवाले ने टिप्पणी की कि वो लँगड़ा फ़ौज में क्या जाएगा, वह तो पागल है। पानवाले द्वारा ऐसी टिप्पणी करना उचित नहीं था। कैप्टन शारीरिक रूप से अक्षम था जिसके लिए वह फौज में नहीं जा सकता था परंतु उसके हृदय में जो अपार देशभक्ति की भावना थी, वह किसी फौजी से कम नहीं थी। कैप्टन अपने कार्यों से जो असीम देशप्रेम प्रकट करता था, उसी कारण पानवाला उसे पागल कहता था। ऐसा कहना पानवाले की स्वार्थपरता की भावना को दर्शाता है, जो सर्वथा अनुचित है। वास्तव में तो पागलपन की हद तक देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना रखनेवाला व्यक्ति श्रद्धा का पात्र है, उपहास का नहीं।

प्रश्न 5. जब तक हालदर साहब ने कैप्टन को नहीं देखा था तो उनके मन मस्तिष्क पर कैप्टन की कैसी छवि थी? अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर- हालदार साहब ने जब तक कैप्टन को नहीं देखा था तब तक उनके मन मस्तिष्क पर कैप्टन की एक भारी-भरकम मज़बूत शरीर वाली रौबदार छवि रही होगी। उन्हें लगता था फौज में होने के कारण लोग उन्हें कैप्टन कहते हैं।

प्रश्न 6. मूर्ति पर असली चश्मे को पहनाने पर हालदार साहब नागरिकों की देश-भक्ति की सराहना क्यों कर रहे हैं?

उत्तर- मूर्ति पर असली चश्मे को पहनाने पर हालदार साहब नागरिकों की देश-भक्ति की सराहना कर रहे हैं क्योंकि वह मूर्ति कोई आम मूर्ति नहीं थी बल्कि नेता जी सुभाष चंद्र बोस जी की थी और उस पर एक बहुत ही बड़ी कमी थी कि उस मूर्ति पर मूर्तिकार चश्मा बनाना भूल गया था जो कहीं न कहीं नेता जी का अपमान स्वरूप देखा जा सकता है क्योंकि नेता जी ने आज़ादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व त्याग दिया था और उनकी छवि को उनके ही सादृश्य प्रस्तुत करना हर देशवासी का कर्तव्य है और कस्बे के नागरिकों ने भी अपने इसी कर्तव्य का निर्वाह करने की कोशिश की थी। अतः हालदार साहब इस घटना को देश भक्ति से जोड़ कर देख रहे हैं।

प्रश्न 7. कैप्टन चश्मे वाले को देख कर हालदार साहब क्यों चौंक गए?

उत्तर- कैप्टन चश्मे वाले को देख कर हालदार साहब चौंक गए क्योंकि उसका व्यक्तित्व ऐसा था। एक हद से ज्यादा बूढ़ा, कमजोर-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी-सा लकड़ी का संदूक और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। उसे देख कर हवलदार साहब को बहुत बुरा लगा और वे सोचने लगे कि इस बेचारे की दुकान भी नहीं है! फेरी लगाता है! हालदार साहब अब और भी ज्यादा सोच में पड़ गए।

भाग-2 बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाना मुख्यतः किसका प्रतीक है?

(क) व्यापारिक लाभ का (ख) अंधविश्वास का

(ग) राष्ट्रीय नायकों के प्रति सम्मान का (घ) राजनीतिक प्रचार का

2. पानवाले द्वारा कैप्टन को 'पागल' कहना किस मानसिकता को दर्शाता है?

(क) देशभक्ति का सम्मान ख) बाहरी रूप देखकर निर्णय लेने की प्रवृत्ति

(ग) सहानुभूति की भावना (घ) मित्रता का भाव

3. कैप्टन की विकलांगता पाठक को क्या संदेश देती है?

(क) शारीरिक शक्ति ही सब कुछ है (ख) देशप्रेम शारीरिक सीमाओं से बड़ा होता है

(ग) विकलांग व्यक्ति समाज के लिए उपयोगी नहीं होते (घ) सैनिक बनना ही देशसेवा है

4. कहानी का शीर्षक 'नेताजी का चश्मा' सबसे अधिक किस ओर संकेत करता है?

(क) नेताजी के व्यक्तित्व की ओर (ख) दृष्टिकोण और राष्ट्रीय चेतना की ओर

(ग) चश्मा उद्योग की ओर (घ) बाजार व्यवस्था की ओर

5. कैप्टन के व्यवहार से यह निष्कर्ष निकलता है कि–

(क) सम्मान केवल बड़े लोग कर सकते हैं (ख) देशभक्ति के लिए पद आवश्यक है

(ग) सच्ची श्रद्धा कर्मों में दिखाई देती है (घ) मूर्तियों की पूजा ही देशभक्ति है

उत्तर- 1 (ग) 2 (ख) 3 (ख) 4 (ख) 5 (ग)

भाग-3 : आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच (CCT) आधारित प्रश्न

उत्तर हेतु विकल्प

क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

ख) A और R दोनों सत्य हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

ग) A सत्य है, परंतु R असत्य है।

घ) A असत्य है, परंतु R सत्य है।

1. **कथन (A):** चश्मा कहानी में दृष्टि और जागरूकता का प्रतीक है।
   कारण (R): चश्मा केवल आँखों की कमजोरी दूर करने का साधन है।
2. **कथन (A):** लेखक ने कैप्टन के माध्यम से आदर्श नागरिक का चित्र प्रस्तुत किया है।
   कारण (R): आदर्श नागरिक अपने राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करता है।

भाग-3 के प्रश्नों के उत्तर- 1 (ग) 2 (क)

भाग-4: दक्षता आधारित प्रश्न / Competency-Based Questions

"जब भी नेताजी की मूर्ति का चश्मा टूट जाता या गायब हो जाता, कैप्टन नया चश्मा लगवा देता था। स्वयं आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद वह यह कार्य पूरी श्रद्धा से करता था।"

1. इस प्रसंग से कैप्टन का कौनसा गुण सर्वाधिक उभरकर सामने आता है-?

(क) महत्वाकांक्षा (ख) स्वार्थपरता (ग) देशभक्ति और समर्पण (घ) क्रोध

2. आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद कैप्टन का व्यवहार किस मूल्य को स्थापित करता है?

(क) त्याग और कर्तव्यनिष्ठा (ख) व्यापारिक कुशलता

(ग) राजनीतिक समझ (घ) सामाजिक प्रतिष्ठा

3. **यदि कैप्टन यह कार्य बंद कर देता, तो सबसे अधिक कौन सा मूल्य प्रभावित होता?**

(क) राष्ट्रीय सम्मान (ख) आर्थिक विकास (ग) शिक्षा (घ) विज्ञान

4. "पानवाले ने कहा–'वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल!'"

पानवाले की टिप्पणी किस सामाजिक प्रवृत्ति की ओर संकेत करती है?

(क) सहिष्णुता (ख) पूर्वाग्रह और सतही मूल्यांकन

(ग) राष्ट्रप्रेम (घ) सहयोग

भाग-4 के प्रश्नों के उत्तर- 1 (ग) 2 (क) 3 (क) 4 (ख)

<u>अतिरिक्त अभ्यास प्रश्न</u>

1. **कैप्टन चश्मेवाला स्वतंत्रता सेनानी नहीं था, फिर वह देशभक्ति का प्रतीक कैसे बन जाता है?**
2. **कहानी में मूर्ति पर लगे चश्मे को केवल एक वस्तु न मानकर एक प्रतीक के रूप में देखा जाए तो वह क्या संदेश देता है?**
3. **पानवाले द्वारा कैप्टन को 'पागल' कहने के पीछे समाज की कौन-सी मानसिकता दिखाई देती है?**
4. **कहानी में लेखक ने छोटे चेतना का चित्रण किस प्रकार किया है से कस्बे के माध्यम से राष्ट्रीय?**
5. **'नेताजी का चश्मा' कहानी वर्तमान पीढ़ी को अपने राष्ट्रीय नायकों के प्रति क्या सीख देती है?**
6. **क्या कैप्टन को एक सामान्य चश्मेवाला कहना उसके व्यक्तित्व के साथ न्याय होगा? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।**

पाठ एक नज़र में - (त्वरित पुनरावृत्ति हेतु)

1. कस्बे का परिचय

- छोटा कस्बा, दो विद्यालय और एक सीमेंट कारखाना।
- दो सिनेमा घर तथा नगरपालिका थी।
- नगरपालिका विकास कार्य कराती रहती थी।

2. नेताजी की मूर्ति

- मुख्य चौराहे पर संगमरमर की मूर्ति लगाई गई।
- मूर्ति सुंदर थी, पर चश्मा बनाना भूल गए।
- मूर्ति पर असली चश्मे का फ्रेम लगा दिया गया।

3. हालदार साहब की जिज्ञासा

- हर पंद्रहवें दिन कस्बे से गुजरते थे।
- उन्होंने मूर्ति पर बदलते हुए चश्मे देखे।
- चश्मा बदलने का कारण जानना चाहा।

4. कैप्टन चश्मेवाला

- बूढ़ा, लंगड़ा और साधारण व्यक्ति था।
- सिर पर गांधी टोपी और हाथ में चश्मों की संदूकची रखता था।
- नेताजी की मूति पर नया चश्मा लगा देता था।

5. पानवाले का दृष्टिकोण

- कैप्टन को 'पागल' कहता था।
- उसके देशप्रेम को नहीं समझ पाया।
- बाहरी रूप देखकर उसका मूल्यांकन किया।

6. कैप्टन का देशप्रेम

- नेताजी के प्रति गहरी श्रद्धा रखता था।
- मूर्ति को बिना चश्मे के नहीं देख सकता था।
- कर्मों से सच्ची देशभक्ति दिखाता था।

7. कहानी का मार्मिक मोड़

- कैप्टन की मृत्यु हो गई।
- मूर्ति पर चश्मा लगना बंद हो गया।
- हालदार साहब को गहरा दु:ख हुआ।

8. सरकंडे का चश्मा

- बाद में मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा दिखाई दिया।
- किसी ने कैप्टन की भावना को आगे बढ़ाया।
- यह दृश्य देखकर हालदार साहब भावुक हो गए।

9. प्रमुख पात्र

पात्र	विशेषता
हालदार साहब	संवेदनशील एवं जिज्ञासु
कैप्टन	सच्चा देशभक्त
पानवाला	संकीर्ण सोच वाला
नेताजी की मूर्ति	राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक

10. कहानी का संदेश

- ✓ सच्ची देशभक्ति कर्मों में दिखाई देती है।
- ✓ किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके बाहरी रूप से नहीं करना चाहिए।
- ✓ राष्ट्रीय नायकों के प्रति सम्मान बनाए रखना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

<u>बालगोबिन भगत</u>

<u>पाठ सार</u>

बालगोबिन भगत मंझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। उनकी उम्र साठ वर्ष से उपर थी और बाल पक गए थे। वे लम्बी दाढ़ी नहीं रखते थे और कपड़े बिल्कुल कम पहनते थे। कमर में लंगोटी पहनते और सिर पर कबीरपंथियों की सी कनफटी टोपी। सर्दियों में ऊपर से कम्बल ओढ़ लेते। वे गृहस्थ होते हुई भी सही मायनों में साधु थे। माथे पर रामानंदी चन्दन का टीका और गले में तुलसी की जड़ों की बेडौल माला पहने रहते। उनका एक बेटा और पतोहू थे। वे कबीर को साहब मानते थे। किसी दूसरे की चीज़ नहीं छूते और न बिना वजह झगड़ा करते। उनके पास खेती-बाड़ी तथा साफ़-सुथरा मकान था। खेत से जो भी उपज होती, उसे पहले सिर पर लादकर कबीरपंथी मठ ले जाते और प्रसाद स्वरुप जो भी मिलता उसी से गुजर बसर करते।

वे कबीर के पदों का बहुत मधुर गायन करते। आषाढ़ के दिनों में जब समूचा गाँव खेतों में काम कर रहा होता तब बालगोबिन पूरा शरीर कीचड़ में लपेटे खेत में रोपनी करते हुए अपने मधुर गानों को गाते। भादों की अंधियारी में उनकी खँजड़ी बजती थी, जब सारा संसार सोया होता तब उनका संगीत जागता था। कार्तिक मास में उनकी प्रभातियाँ शुरू हो जातीं। वे पहले सुबह नदी-स्नान को जाते और लौटकर पोखर के ऊँचे भिंडे पर अपनी खँजड़ी लेकर बैठ जाते और अपना गाना शुरू कर देते। गर्मियों में अपने घर के आँगन में आसन जमा बैठते। उनकी संगीत साधना का चरमोत्कर्ष तब देखा गया जिस दिन उनका इकलौता बेटा मरा। बड़े शौक से उन्होंने अपने बेटे की शादी करवाई थी, बहू भी बड़ी सुशील थी। उन्होंने मरे हुए बेटे को आँगन में चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढांक रखा था तथा उस पर कुछ फूल बिखरा दिए थे। सामने बालगोबिन ज़मीन पर आसन जमाए गीत गाए जा रहे थे और बहू को रोने के बजाए उत्सव मनाने को कह रहे थे। चूँकि उनके अनुसार आत्मा परमात्मा पास चली गयी है, ये आनंद की बात है। उन्होंने बेटे की चिता को आग भी बहू से दिलवाई। जैसे ही श्राद्ध की अवधि पूरी हुई, बहू के भाई को बुलाकर उसका दूसरा विवाह करने का आदेश दिया। बहू जाना नहीं चाहती थी, साथ रहकर उनकी सेवा करना चाहती थी परन्तु बालगोबिन के आगे उसकी एक न चली। उन्होंने दलील दी कि अगर वह नहीं गई तो वे घर छोड़कर चले जाएंगे।

बालगोबिन भगत की मृत्यु भी उनके अनुरूप ही हुई। वे हर वर्ष गंगा स्नान को जाते। गंगा तीस कोस दूर पड़ती थी फिर भी वे पैदल ही जाते। घर से खाकर निकलते तथा वापस आकर खाते थे, बाकी दिन उपवास पर। किन्तु अब उनका शरीर बूढ़ा हो चुका था। इस बार लौटे तो तबीयत ख़राब हो चुकी थी किन्तु वे नेम-व्रत छोड़ने वाले न थे। वही पुरानी दिनचर्या शुरू कर दी। लोगों ने मना किया परन्तु वे टस से मस न हुए। एक दिन संध्या में गाना गाया परन्तु भोर में किसी ने गीत नहीं सुना, जाकर देखा तो पता चला बालगोबिन भगत नहीं रहे।

पठित गद्यांश आधारित प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

1.आसाढ़ की रिमझिम है। समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है। कहीं हल चल रहे हैं ; कहीं रोपनी हो रही है। धान के पानी-भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेंड पर बैठी हैं। आसमान बादल से घिरा; धूप का नाम नहीं। ठंडी पुरवाई चल रही। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर उठी। यह क्या है, यह कौन है! यह पूछना न पड़ेगा। बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे को, पंक्तिबद्ध, खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर, स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर! बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं; मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं, वे गुनगुनाने लगती हैं; हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं; रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती हैं! बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जादू! भादो की वह अंधेरी अधरतिया। अभी, थोड़ी ही देर पहले मूसलधार वर्षा खत्म हुई है। बादलों की गरज, बिजली की तड़प में आपने कुछ नहीं सुना हो, किन्तु अब झिल्ली की झंकार या दादुरों की टर्र-टर्र बालगोबिन भगत के संगीत को अपने कोलाहल में डुबो नहीं सकतीं।

(i) पुरवाई का क्या अर्थ आपको समझ आया?

(क) पुरानी बात (ख) पूर्वी हवा (ग) ठंडी हवा (घ) खुशी और मस्ती

(ii) बालगोबिन भगत के संगीत के जादू को कौन अपने शोर में नहीं डुबो सकते?

(क) मेंढक और झिल्ली (ख) दादु और उनकी बेटी झिल्ली

(ग) दादुर और इल्ली (घ) कोई नहीं

(iii) किसके पैर ताल से उठने लगते हैं?

(क) हलवाइयों के (ख) हल चलाने वालों के

(ग) गुनगुनाने वाली औरतों के (घ) बालगोबिन भगत के

निर्देश: प्रत्येक प्रश्न में दिए गए **Assertion (A)** और **Reason (R)** को पढ़कर सही विकल्प चुनिए।

विकल्प:

(क) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं, परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

(ग) A सत्य है, परन्तु R असत्य है। (घ) A असत्य है, परन्तु R सत्य है।

(iv) **कथन (A):** लेखक ने बालगोबिन भगत के संगीत को 'जादू' की संज्ञा दी है।

कारण (R): उनके संगीत से लोगों के मन, भाव और कार्य करने की गति में सकारात्मक परिवर्तन आ जाता था।

(v) **कथन (A):** बालगोबिन भगत केवल एक कुशल किसान थे।

कारण (R): वे रोपनी करते समय मधुर गीत भी गाते थे, जिनका लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ता था।

उत्तर (गद्यांश-1)

1	2	3	4	5
ख	क	ख	क	घ

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह! कुछ सुस्त और बोदा-सा था, किन्तु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज्यादा नज़र रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए, क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज़्यादा हकदार होते हैं। हमने सुना, बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफेद कपड़े से ढाँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा दिए हैं; फूल और तुलसीदल भी। सिरहाने एक चिराग जला रखा है। और, उसके सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं! वही पुराना स्वर, वही पुरानी तल्लीनता। घर में पतोहू रो रही है जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं। किन्तु, बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं! हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पतोहू के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात? मैं कभी-कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए। किन्तु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे उसमें उनका विश्वास बोल रहा था-वह चरम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

1. बालगोबिन भगत अपने सुस्त और बोदे बेटे को अधिक स्नेह क्यों देते थे?

(क) वह उनका इकलौता पुत्र था।

(ख) वह परिवार की आर्थिक सहायता करता था।

(ग) ऐसे व्यक्तियों को अधिक प्रेम और संरक्षण की आवश्यकता होती है।

(घ) वह अत्यंत धार्मिक स्वभाव का था।

2. बेटे की मृत्यु के समय बालगोबिन भगत का गायन किस तथ्य को सर्वाधिक स्पष्ट करता है?

(क) वे सामाजिक रीति-रिवाजों की उपेक्षा करते थे।

(ख) वे पुत्र के प्रति उदासीन थे।

(ग) वे मृत्यु को आत्मा के परमात्मा से मिलन के रूप में देखते थे।

(घ) वे लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते थे।

3. पाठ में वर्णित "वह चरम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है" से लेखक का क्या आशय है?

(क) शारीरिक शक्ति की विजय (ख) आध्यात्मिक आस्था की शक्ति

(ग) सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रभाव (घ) पारिवारिक परंपराओं का महत्व

4. पतोहू को रोने के स्थान पर उत्सव मनाने की सलाह देकर बालगोबिन भगत किस जीवन दर्शन को व्यक्त करते हैं?

(क) कर्मवाद (ख) भोगवाद (ग) आध्यात्मिक मिलन और मोक्षवाद (घ) भौतिकवाद

5. लेखक को एक क्षण के लिए यह क्यों लगा कि बालगोबिन भगत पागल हो गए हैं?

(क) वे जोर-जोर से रो रहे थे। (ख) वे मृत्यु के अवसर पर भी गा रहे थे।

(ग) वे गाँव वालों से झगड़ रहे थे। (घ) वे घर छोड़कर चले गए थे।

उत्तरमाला- 1-ग, 2-ग, 3-ख, 4-ग, 5-ख

भाग-1 लघु-उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. बालगोबिन भगत ने संन्यास ग्रहण किए बिना ही साधु सुलभ सम्मान कैसे प्राप्त किया? उनके व्यक्तित्व एवं आचरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बालगोबिन भगत गृहस्थ थे फिर भी उनकी बहुत सारी विशेषताएं उनको साधु बनाती है:-

i. कबीर के आदर्शों पर चलते थे, उन्हीं के गीत गाते थे।
II. कभी झूठ नहीं बोलते थे, खरा व्यवहार रखते थे।
iii. किसी से भी दो-टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से झगड़ा करते थे।
iv. किसी की चीज़ नहीं छूते थे न ही बिना पूछे व्यवहार में लाते थे।
v. जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे कबीरपंथी मठ में ले जाते, वहाँ से जो कुछ भी भेंट स्वरुप मिलता था उसे प्रसाद स्वरुप घर ले आते थे।
vi. उनमें लालच बिल्कुल भी नहीं था।

प्रश्न 2. पुत्र की मृत्यु जैसी पीड़ादायक स्थिति में भी बालगोबिन भगत का सामान्य लोगों से व्यवहार किस प्रकार भिन्न था? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बेटे की मृत्यु पर भगत ने पुत्र के शरीर को एक चटाई पर लिटा दिया, उसे सफेद चादर से ढक दिया तथा वे कबीर के भक्ति गीत गाकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने लगे। भगत ने अपनी पुत्रवधू से कहा कि यह रोने का नहीं बल्कि उत्सव मनाने का समय है। विरहिणी आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के पास चली गई है। उन दोनों के मिलन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं हो सकता। इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता का भाव व्यक्त किया।

प्रश्न 3. बालगोबिन भगत की दिनचर्या केवल उनकी आदतों का परिचय नहीं देती, बल्कि उनके जीवन दर्शन और आध्यात्मिक व्यक्तित्व को भी उजागर करती है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर- बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण इसलिए बन गई थी क्योंकि वे जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का अत्यंत गहराई से पालन करते हुए उन्हें अपने आचरण में उतारते थे। वृद्ध होते हुए भी उनकी स्फूर्ति में कोई कमी नहीं थी। सर्दी के मौसम में भी, भरे बादलों वाले भादों की आधी रात में भी वे भोर में सबसे पहले उठकर गाँव से दो मील दूर स्थित गंगा स्नान करने जाते थे, खेतों में अकेले ही खेती करते तथा गीत गाते रहते। विपरीत परिस्थिति होने के बाद भी उनकी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं आता था। एक वृद्ध में अपने कार्य के प्रति इतनी सजगता को देखकर लोग दंग रह जाते थे।

प्रश्न 4. धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं ? उस माहौल का शब्द- चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- आषाढ़ की रिमझिम फुहारों के बीच खेतों में धान की रोपाई चल रही थी। बादल से घिरे आसमान में, ठंडी हवाओं के चलने के समय अचानक खेतों में से किसी के मीठे स्वर गाते हुए सुनाई देते हैं। बालगोबिन भगत के कंठ से निकला मधुर संगीत वहाँ खेतों में काम कर रहे लोगों के मन में झंकार उत्पन्न करने लगा। स्वर के आरोह के साथ एक-एक शब्द जैसे स्वर्ग की ओर भेजा जा रहा हो। उनकी मधुर वाणी को सुनते ही लोग झूमने लगते हैं, स्त्रियाँ स्वयं को रोक नहीं पाती हैं तथा अपने आप उनके होंठ काँपकर गुनगुनाते लगते हैं। हलवाहों के पैर गीत के ताल के साथ उठने लगे। रोपाई

करने वाले लोगों की उँगलियाँ गीत की स्वरलहरी के अनुरूप एक विशेष क्रम से चलने लगीं बालगोबिन भगत के गाने से संपूर्ण सृष्टि मिठास में खो जाती है।

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत के चरित्र का मूल्यांकन करते हुए बताइए कि उनके व्यक्तित्व में कौन से गुण विद्यमान हैं ऐसे, जो उन्हें कबीर के आदर्शों का सच्चा अनुयायी सिद्ध करते हैं।

उत्तर- भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के निम्नलिखित कारण रहे होंगे-

i. कबीर का आडम्बरों से रहित सादा जीवन, ii. सामाजिक कुरीतियों का अत्यंत विरोध करना
iii. कामनाओं से रहित कर्मयोग का आचरण, iv. ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम
v. भक्ति से परिपूर्ण मधुर गीतों की रचना, vi. आदर्शों को व्यवहार में उतारना

प्रश्न 6. बालगोबिन भगत अपने पुत्र की पत्नी को तसल्ली देने के लिए क्या कहते हैं?

उत्तर- गाते-गाते कभी कभी पुत्र की पत्नी के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। अपनी बहू को समझाते हुए कहते कि आत्मा परमात्मा के पास चली गई,
विरहिणी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन ही बात हो सकती है?

प्रश्न 7. बालगोबिन भगत की बहू अपने मायके क्यों नहीं जाना चाहती थी परंतु भगत ने क्या कहकर उसे विवश किया?

उत्तर- जैसे ही पितरों अथवा मृत व्यक्तियों के लिए किया जाने वाला धार्मिक कर्मकांड, पिंडदान आदि का समय पूरा हुआ, वैसे ही अपनी बहू के भाई को बुलाकर उसे उसके साथ विदा कर दिया, और यह आदेश दिया कि वह इसकी दूसरी शादी करा देगा। किन्तु उनकी बहु रो-रोकर कहती रही कि वह चली जाएगी तो बुढ़ापे में कौन बालगोबिन भगत के लिए भोजन बनाएगा? यदि कभी बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा? वह बाल गोबिन भगत के पैर पड़ती रही कि वह उसे अपने चरणों से अलग न करें! लेकिन भगत जी का निर्णय अटल था। उन्होंने अपनी बहस का अंत करते हुए कहा कि वह चली जाए, नहीं तो वे ही इस घर को छोड़कर चले जाएंगे। अब इस तरह की बात के आगे बेचारी की क्या चलती? कहने का तात्पर्य यह है कि न चाहते हुए भी बालगोबिन भगत की बहू को उन्हें बुढ़ापे में अकेले छोड़कर जाना पड़ा।

प्रश्न 8. भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- बालगोबिन भगत साठ वर्ष से अधिक उम्र वाले गोरे-चिट्टे इंसान थे। उनके बाल सफ़ेद हो चुके थे। उनका चेहरा सफ़ेद बालों से जगमगाता रहता था। कपड़ों के नाम पर उनके शरीर पर एक लँगोटी और सिर पर कनफटी टोपी धारण करते थे और गले में तुलसी की बेडौल माला पहने रहते थे। उनके माथे पर रामानंदी टीका सुशोभित होता था। सर्दियों में वे काली कमली ओढ़े रहते थे।

भाग-2 बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. यदि बालगोबिन भगत कबीर के अनुयायी न होते, तो उनके व्यक्तित्व में किस विशेषता का अभाव सबसे अधिक दिखाई देता?

(क) खेती-किसानी (ख) आध्यात्मिक समभाव (ग) पारिवारिक प्रेम (घ) सामाजिक प्रतिष्ठा

2. बालगोबिन भगत द्वारा पतोहू को रोने के स्थान पर उत्सव मनाने के लिए कहना किस जीवन दर्शन का प्रतीक है?

(क) भौतिकवादी दृष्टिकोण (ख) कर्मकांडवादी दृष्टिकोण
(ग) आत्मा की अमरता में विश्वास (घ) सामाजिक विद्रोह

3. लेखक को क्षणभर के लिए भगत के 'पागल' होने का संदेह क्यों हुआ?

(क) क्योंकि वे लोगों से बात नहीं करते थे।

(ख) क्योंकि उनका व्यवहार सामान्य मानवीय अपेक्षाओं से भिन्न था।

(ग) क्योंकि वे गाँव छोड़कर चले गए थे।

(घ) क्योंकि वे कबीर के पद गाते थे।

4. बालगोबिन भगत के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

(क) धार्मिक कर्मकांडों का पालन (ख) सामाजिक नेतृत्व

(ग) कथनी और करनी में एकरूपता (घ) आर्थिक सम्पन्नता

उत्तरमाला- 1-ख, 2-ग, 3-ख, 4-ग

भाग-3 : आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच (CCT) आधारित प्रश्न

1. यदि आज के समय में बालगोबिन भगत जैसे व्यक्ति किसी सामाजिक संकट के दौरान लोगों को धैर्य और सकारात्मकता का संदेश दें तो उनकी शिक्षाएँ मूल रूप से किस मूल्य को मजबूत करेंगी?

(क) भौतिक सफलता को सर्वोपरि मानना

(ख) प्रतिस्पर्धा एवं व्यक्तिगत लाभ को बढ़ावा देना

(ग) आत्मबल, मानवीय संवेदना और आध्यात्मिक संतुलन बनाएँ रखना

(घ) कठिन परिस्थियों से बचकर निकाल जाना

2. बालगोबिन भगत की सोच आधुनिक समाज के लिए किस रूप में सबसे अधिक प्रेरणादायक है?

(क) अंधविश्वास को बढ़ावा देने में (ख) दुःख में भी मानसिक संतुलन बनाए रखने में

(ग) सामाजिक नियमों की अवहेलना करने में (घ) परिवार से दूरी बनाने में

3.यदि बालगोबिन भगत के पुत्र की मृत्यु के स्थान पर कोई अन्य सामान्य ग्रामीण व्यक्ति होता, तो सबसे संभावित प्रतिक्रिया क्या होती?

(क) आध्यात्मिक उत्सव (ख) वैराग्यपूर्ण गीत-गायन (ग) शोक और विलाप (घ) मौन साधना

4. बालगोबिन भगत का जीवन किस समकालीन समस्या के समाधान में सबसे अधिक उपयोगी हो सकता है?

(क) पर्यावरण प्रदूषण (ख) मानसिक तनाव और निराशा (ग) बेरोजगारी (घ) जनसंख्या वृद्धि

5. यदि विद्यालय में 'आदर्श जीवन' पर चर्चा हो तो बालगोबिन भगत का कौन-सा गुण सबसे अधिक प्रस्तुत किया जाना चाहिए?

(क) कृषि कार्य (ख) सामाजिक लोकप्रियता

(ग) आध्यात्मिक दृढ़ता और आचरण की शुचिता (घ) पारिवारिक संपत्ति

उत्तरमाला - 1-ग, 2-ख, 3-ग, 4-ख, 5-ग

भाग-4 : दक्षता आधारित प्रश्न / Competency-Based Questions

1. बालगोबिन भगत के पुत्र की मृत्यु पर उनके व्यवहार का कौन-सा निष्कर्ष सबसे उचित है?

(क) वे सामाजिक रीति-रिवाजों का विरोध करते थे।

(ख) वे जीवन और मृत्यु को आध्यात्मिक दृष्टि से देखते थे।

(ग) वे पारिवारिक दायित्वों से विमुख थे।

(घ) वे भावनाओं को महत्व नहीं देते थे।

2. बालगोबिन भगत के जीवन का अध्ययन करने से कौन-सा जीवन कौशल सर्वाधिक विकसित होता है?

(क) नेतृत्व क्षमता (ख) आर्थिक प्रबंधन

(ग) विपरीत परिस्थितियों में भावनात्मक संतुलन (घ) प्रतियोगी भावना

3. बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए कौन सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?

(क) वे केवल धार्मिक व्यक्ति थे।

(ख) वे एक सफल किसान मात्र थे।

(ग) वे आध्यात्मिकता, मानवता और कर्मशीलता के समन्वित प्रतीक थे।

(घ) वे समाज से कटे हुए व्यक्ति थे।

उत्तरमाला (दक्षता आधारित प्रश्न) 1-ख, 2-ग, 3-ग

अतिरिक्त अभ्यास प्रश्न-

1. **बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व में गृहस्थ और साधु जीवन का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उनके जीवन व्यवहार के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।**
2. **बालगोबिन भगत की दिनचर्या उनके अनुशासन, आध्यात्मिकता और कर्मशीलता को किस प्रकार अभिव्यक्त करती है?**
3. **बालगोबिन भगत का चरित्र यह सिद्ध करता है कि सच्ची साधना केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**
4. **बालगोबिन भगत के जीवन से यह शिक्षा किस प्रकार मिलती है कि आध्यात्मिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व एक दूसरे के पूरक हैं?**
5. **यदि बालगोबिन भगत की मृत्यु-दृष्टि को आधुनिक समाज अपनाए तो लोगों के जीवन दृष्टिकोण में क्या परिवर्तन आ सकते हैं ? अपने विचार लिखिए |**
6. **बालगोबिन भगत को केवल एक धार्मिक व्यक्ति मानना उनके व्यक्तित्व का अधूरा मूल्यांकन क्यों होगा? उनके चरित्र का समग्र विश्लेषण कीजिए।**

उच्च चिंतन स्तर प्रश्न

1. **बालगोबिन भगत के जीवन और आचरण का मूल्यांकन करते हुए स्पष्ट कीजिए कि वे कबीर की शिक्षाओं के जीवंत प्रतिरूप क्यों प्रतीत होते हैं।**
2. **'विश्वास मनुष्य को दुःख और मृत्यु जैसी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देता है।' इस कथन को बालगोबिन भगत के चरित्र के आलोक में स्पष्ट कीजिए।**
3. **बालगोबिन भगत का जीवन इस धारणा को किस प्रकार चुनौती देता है कि आध्यात्मिकता प्राप्त करने के लिए संसार का त्याग आवश्यक है?**
4. **बालगोबिन भगत के चरित्र में निहित जीवन मूल्यों का विश्लेषण करते हुए बताइए कि वे आज के युवाओं के लिए आदर्श क्यों हैं।**
5. **बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व में आस्था, मानवता और वैराग्य का संतुलन किस प्रकार दिखाई देता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**

पाठ एक नज़र में (त्वरित पुनरावृत्ति हेतु)

1. व्यक्तित्व एवं रहन-सहन

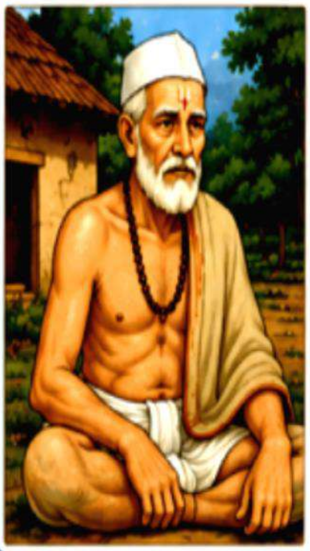

- गोरे-चिट्टे, मंझोले कद, साठ वर्ष से अधिक आयु।
- लंगोटी, कबीरपंथी टोपी, चंदन का तिलक और तुलसी की माला धारण करते थे।
- गृहस्थ होते हुए भी सच्चे साधु और कबीर के अनन्य भक्त थे।

2. भक्ति और जीवन-दर्शन

- खेती की उपज पहले कबीरपंथी मठ में अर्पित करते थे।
- किसी की वस्तु नहीं छूते और झगड़े से दूर रहते थे।
- प्रसाद में जो मिलता, उसी से जीवन-यापन करते थे।

3. संगीत-साधना

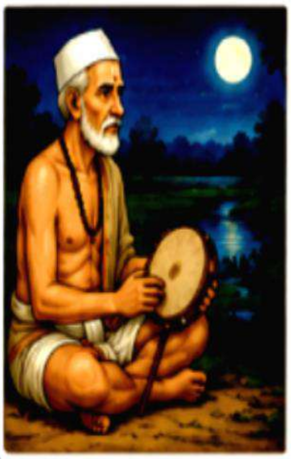

- खेतों में काम करते हुए कबीर के पद गाते थे।
- भादों की रातों और कार्तिक की प्रभात में खंजड़ी के साथ भजन गाते थे।
- संगीत उनकी जीवन की साधना और आध्यात्मिक शक्ति था।

4. पुत्र-वियोग में अद्भुत वैराग्य

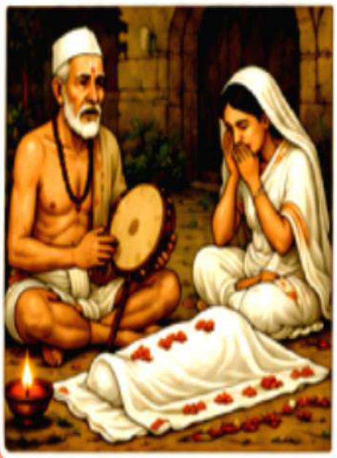

- इकलौते पुत्र की मृत्यु पर भी भजन गाते रहे।
- मृत्यु को आत्मा का परमात्मा से मिलन मानकर उत्सव का भाव रखा।
- बहू से बेटे की चिता को अग्नि दिलवाई।

5. प्रगतिशील सोच

- बहू को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।
- बहू के पुनर्विवाह का समर्थन कर समाज को नई दिशा दी।
- व्यक्तिगता मोह से ऊपर उठकर उसके भविष्य को महत्व दिया।
- कर्म, करुणा और सामाजिक सुधार का उदाहरण प्रस्तुत किया।

6. मृत्यु भी जीवन जैसी

- वृद्धावस्था में भी प्रतिवर्ष पैदल गंगा-स्नान करते थे।
- बीमारी में भी नियम और व्रत नहीं छोड़े।
- एक सुबह भजन की ध्वनि न सुनाई दी—बालगोबिन भगत शांत हो चुके थे।

लखनवी अंदाज

पाठ का सारांश

लेखक को पास में ही कहीं जाना था। लेखक ने यह सोचकर सेकंड क्लास का टिकट लिया कि उसमें भीड़ कम होगी । वे आराम से खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखते हुए किसी नई कहानी के बारे में सोच सकेंगे। पैसेंजर ट्रेन चलने को थी। लेखक दौड़कर एक डिब्बे में चढ़े परन्तु अनुमान के विपरीत

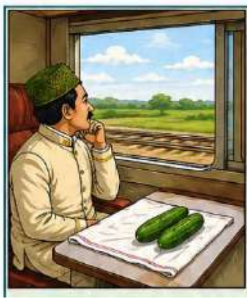

उन्हें डिब्बा खाली नहीं मिला। डिब्बे में पहले से ही लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सज्जन पालथी मारे बैठे थे । उनके सामने दो ताज़े चिकने खीरे तौलिये पर रखे थे। लेखक का अचानक चढ़ जाना उस सज्जन को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने लेखक से मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। लेखक को लगा शायद नवाब ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए लिया है ताकि वे अकेले यात्रा कर सकें परन्तु अब उन्हें ये बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था कि कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्ज़े में सफर करता देखे। उन्होंने शायद खीरा भी अकेले सफर में वक़्त काटने के लिए खरीदा होगा परन्तु अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाए। नबाब साहब खिड़की से बाहर देख रहे थे परन्तु लगातार कनखियों से लेखक की ओर देख रहे थे। अचानक ही नबाब साहब ने लेखक को सम्बोधित करते हुए खीरे का लुत्फ़ उठाने को कहा परन्तु लेखक ने शुक्रिया करते हुए मना कर दिया। नबाब ने बहुत ढंग से खीरे को धोकर छीला, काटा और उसमे जीरा, नमक-मिर्च बुरककर तौलिये पर सजाते हुए पुनः लेखक से खाने को कहा किन्तु वे एक बार मना कर चुके थे इसलिए आत्मसम्मान बनाए रखने के लिए दूसरी बार पेट खराब होने का बहाना बनाया। लेखक ने मन ही मन सोचा कि मियाँ रईस बनते हैं लेकिन लोगों की नजर से बच सकने के ख्याल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं। नबाब साहब खीरे की एक फाँक को उठाकर होठों तक ले गए, उसको सूँघा। खीरे की स्वाद का आनंद में

उन्होंने पलकें मूँद ली। मुंह में आए पानी का घूँट गले से उतर गया, तब नबाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। इसी प्रकार एक-एक करके फाँक को उठाकर सूंघते और फेंकते गए। सारे फाँकों को फेंकने के बाद उन्होंने तौलिये से हाथ और होठों को पोंछा। फिर गर्व से लेखक की ओर देखा और इस नायाब इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक ने सोचा कि खीरा इस्तेमाल करने से क्या पेट भर सकता है ? तभी नबाब साहब ने डकार ले ली और बोले, “खीरा होता है लजीज पर पेट पर बोझ डाल देता है।“ यह सुनकर लेखक ने सोचा कि जब खीरे की गंध से पेट भर जाने की डकार आ जाती है तो बिना विचार, घटना और पात्रों के इच्छा मात्र से नई कहानी बन सकती है।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए ।

ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। संभव है, नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफ़ेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे। ... अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफ़ेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ? हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे।

'ओह', नवाब साहब ने सहसा हमें संबोधन किया, 'आदाब-अर्ज़', जनाब, खीरे का शौक फरमाएँगे ? नवाब साहब का सहसा भाव-परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। भाँप लिया, आप शराफत का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं। जवाब दिया, 'शुक्रिया, किबला शौक फरमाएँ। 'नवाब साहब ने फिर एक पल खिड़की से बाहर देखकर गौर किया और दृढ़ निश्चय से खीरों के नीचे रखा तौलिया झाड़कर सामने बिछा लिया। सीट के नीचे से लोटा उठाकर दोनों खीरों को खिड़की से बाहर धोया और तौलिए से पोंछ लिया। जेब से चाकू निकाला। दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला। फिर खीरों को बहुत एहतियात से छीलकर फाँकों को करीने से तौलिए पर सजाते गए।

1. लेखक द्वारा नवाब साहब के व्यवहार का विश्लेषण करने से उनके व्यक्तित्व का कौन सा पक्ष सबसे अधिक उजागर होता है?

(क) आर्थिक दूरदर्शिता (ख) सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की चिंता

(ग) यात्राओं के प्रति अरुचि (घ) दूसरों के प्रति उदारता

2. नवाब साहब द्वारा अचानक लेखक को खीरा खाने का निमंत्रण देने के पीछे सबसे संभावित मनोवैज्ञानिक कारण क्या था?

(क) वे लेखक से मित्रता करना चाहते थे। (ख) वे अपनी उदारता का प्रदर्शन करना चाहते थे।

(ग) वे अपने संकोच और दिखावे को छिपाना चाहते थे। (घ) वे खीरा साझा करने के आदी थे।

3. लेखक ने नवाब साहब के आग्रह को स्वीकार न करके किस मानवीय प्रवृत्ति को प्रदर्शित किया?

(क) स्वार्थ (ख) आत्मसम्मान (ग) अहंकार (घ) संकोच

4. खीरे को धोने, छीलने और करीने से सजाने की प्रक्रिया नवाब साहब के किस गुण को सबसे अधिक दर्शाती है?

(क) दिखावटी नफासत और औपचारिकता (ख) व्यावहारिक बुद्धिमत्ता

(ग) समय-प्रबंधन क्षमता (घ) सादगी

5. प्रस्तुत प्रसंग का व्यंग्यात्मक केंद्र क्या है?

(क) रेल यात्रा की कठिनाइयाँ (ख) खीरे का स्वाद

(ग) सामाजिक दिखावा और झूठी प्रतिष्ठा (घ) लेखक की कल्पनाशीलता

उत्तरमाला - 1-ख, 2-ग, 3-ख, 4-क, 5-ग

आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच (CCT) आधारित प्रश्न

1. यदि लेखक नवाब साहब का खीरा स्वीकार कर लेते, तो कहानी के व्यंग्यात्मक प्रभाव में सबसे अधिक क्या परिवर्तन आता?

क) व्यंग्य और गहरा हो जाता। ख) नवाब साहब का दिखावा कम उजागर होता।

ग) लेखक की कल्पनाशीलता समाप्त हो जाती। घ) कहानी का स्थान बदल जाता।

2. यदि नवाब साहब वास्तव में सरल और निष्कपट व्यक्ति होते, तो उनके व्यवहार में कौन सा परिवर्तन दिखाई देता?

क) वे लेखक की उपेक्षा करते। ख) वे खीरे को अकेले खाते।

ग) वे बिना औपचारिकता के सहजता से खीरा साझा करते। घ) वे खीरे फेंक देते।

3. लेखक द्वारा नवाब साहब के मनोभावों का अनुमान लगाना किस क्षमता का परिचायक है?

क) नेतृत्व क्षमता　　ख) कल्पनाशील एवं विश्लेषणात्मक दृष्टि

ग) आर्थिक समझ　　घ) राजनीतिक जागरूकता

4. यदि यह घटना आज के सोशल मीडिया युग में घटती, तो लोग नवाब साहब के व्यवहार को किस रूप में देख सकते थे?

क) प्रेरणादायक व्यवहार　　ख) आदर्श शिष्टाचार

ग) दिखावे और छवि-निर्माण का उदाहरण　　घ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण

5. प्रस्तुत प्रसंग सबसे अधिक किस जीवन मूल्य पर प्रकाश डालता है?

क) सादगी और स्वाभाविकता　　ख) धन-संचय　　ग) यात्रा-प्रेम　　घ) सामाजिक प्रतिस्पर्धा

उत्तरमाला-　1-ख,　2-ग,　3-ख,　4-ग,　5-क

(2)

लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं। ग्राहक के लिए जीरा-मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया भी हाज़िर कर देते हैं। नवाब साहब ने बहुत करीने से खीरे की फाँकों पर जीरा-मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी। उनकी प्रत्येक भाव-भंगिमा और जबड़ों के स्फुरण से स्पष्ट था कि उस प्रक्रिया में उनका मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से प्लावित हो रहा था। हम कनखियों से देखकर सोच रहे थे, मियाँ रईस बनते हैं, लेकिन लोगों की नज़रों से बच सकने के खयाल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं। नवाब साहब ने फिर एक बार हमारी ओर देख लिया, 'वल्लाह, शौक कीजिए , लखनऊ का बालम खीरा है !' खीरे की एक फाँक उठाकर होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा। स्वाद के आनंद में पलकें मुँद गईं। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए। नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पोंछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख लिया, मानो कह रहे हों - यह है खानदानी रईसों का तरीका। नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। हमें तसलीम में सिर खम कर लेना पड़ा -यह है खानदानी तहज़ीब, नफ़ासत और नज़ाकत !

1. नवाब साहब द्वारा खीरे की फाँकों को केवल सूँघकर बाहर फेंक देना उनके व्यक्तित्व के किस पक्ष को सबसे प्रभावी ढंग से उजागर करता है?

क) आत्मसंयम और सादगी　　ख) दिखावटी रईसी और बनावटी तहज़ीब

ग) स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता　　घ) अतिथि-सत्कार की भावना

2. लेखक का यह विचार कि "मियाँ रईस बनते हैं लेकिन लोगों की नज़र से बच सकने के ख़्याल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं"- किस बिडम्बना की ओर संकेत करता है ?

क) आर्थिक स्थिति और सामाजिक प्रतिष्ठा के विरोधाभास की ओर

ख) भोजन और स्वास्थ्य के संबंध की ओर

ग) यात्रा और मनोरंजन के संबंध की ओर

घ) ग्रामीण और शहरी संस्कृति के अंतर की ओर

3. खीरे की तैयारी के दौरान नवाब साहब की भाव-भंगिमाओं का वर्णन लेखक ने मुख्यतः किस उद्देश्य से किया है ?

(क) खीरे की गुणवत्ता का वर्णन करने के लिए

(ख) लखनऊ की खान-पान संस्कृति का प्रचार करने के लिए

(ग) नवाब साहब के आडंबरपूर्ण व्यवहार पर व्यंग्य करने के लिए

(घ) लेखक की भूख को व्यक्त करने के लिए

4. यदि नवाब साहब वास्तव में खीरे का स्वाद लेना चाहते, तो उनके व्यवहार में कौन सा परिवर्तन दिखाई देता?

(क) वे खीरे को और अधिक सजाते। (ख) वे खीरे की फाँकों को सूँघने के बाद खा लेते।

(ग) वे लेखक को बार-बार खाने का आग्रह करते। (घ) वे खिड़की से बाहर देखते रहते।

5. प्रस्तुत प्रसंग के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे उपयुक्त निष्कर्ष प्रस्तुत करता है?

क) सच्ची तहज़ीब व्यक्ति को स्वाभाविक बनाती है।

ख) सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता कभी-कभी व्यक्ति को हास्यास्पद बना देती है।

ग) भोजन का आनंद केवल उसकी सुगंध में निहित होता है।

घ) यात्रा के दौरान औपचारिकता आवश्यक है।

उत्तरमाला- 1-ख, 2-क**,** **3**-ग, 4-ख, 5-ख

भाग : 1- लघु-उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. नवाब साहब के व्यवहार और शारीरिक मुद्राओं का सूक्ष्म अवलोकन करने पर लेखक को यह आभास क्यों हुआ कि वे संवाद स्थापित करने में रुचि नहीं रखते थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भीड़ से बचकर यात्रा करने के उद्देश्य से जब लेखक सेकंड क्लास के डिब्बे में चढ़ा तो देखा उसमें एक नवाब साहब पहले से बैठे थे। लेखक को देखकर

- नवाब साहब के चिंतन में व्यवधान पड़ा, जिससे उनके चेहरे पर व्यवधान के भाव उभर आए।
- नवाब साहब की आँखों में असंतोष का भाव उभर आया।
- उन्होंने लेखक से बातचीत करने की पहल नहीं की।
- लेखक की ओर देखने के बजाय वे खिड़की से बाहर देखते रहे।
- कुछ देर बाद वे डिब्बे की स्थिति को देखने लगे।

  इन हाव-भावों को देखकर लेखक ने जान लिया कि नवाब साहब उनसे बातचीत करने के इच्छुक नहीं हैं।

प्रश्न 2. नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर- नवाब साहब ने यत्नपूर्वक खीरा काटकर नमक-मिर्च छिड़का और सूँघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। उनका ऐसा करना उनकी नवाबी ठसक दिखाता है। वे लोगों के कार्य व्यवहार से हटकर अलग कार्य करके अपनी नवाबी दिखाने की कोशिश करते हैं। उनका ऐसा करना उनके अमीर स्वभाव और नवाबीपन दिखाने की प्रकृति या स्वभाव को इंगित करता है।

प्रश्न 3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- लेखक का मानना है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है अर्थात विचार, घटना और पात्र के बिना कहानी नहीं लिखी जा सकती है। मैं लेखक के इन विचारों से पूर्णतया सहमत हूँ। वास्तव में कहानी किसी घटना विशेष का वर्णन ही तो है। इसका कारण क्या था, कब घटी, परिणाम क्या रहा तथा इस घटना से कौन-कौन प्रभावित हुए आदि का वर्णन ही कहानी है। अतः किसी कहानी के लिए विचार, घटना और पात्र बहुत ही आवश्यक हैं।

प्रश्न 4. यदि आपको इस निबंध के मूल भाव, व्यंग्य और संदेश को ध्यान में रखते हुए इसका नया शीर्षक निर्धारित करना हो, तो आप कौन सा शीर्षक चुनेंगे और क्यों?

उत्तर- मैं इस निबंध को दूसरा नाम देना चाहूँगा 'रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई' या नवाबी दिखावा। इसका कारण यह कि नवाब साहब की नवाबी तो कब की छिन चुकी थी पर उनमें अभी नवाबों वाली ठसक और दिखावे की प्रवृत्ति थी। कुछ और शीर्षक ये भी हो सकते हैं- • नवाबी शान का प्रदर्शन • दिखावे की दुनिया • नवाब साहब का अंदाज़ •शिष्टाचार या आडंबर? • अकेलेपन का नवाबी रंग, • व्यवहार की बनावट, • नवाबी तहज़ीब का एक चित्र • एक रेलयात्रा- अनेक संकेत

प्रश्न 5- दूसरी बार खीरा खाने के बारे में पूछने पर लेखक ने क्या बहाना बना कर मना किया?

उत्तर- नवाब साहब ने एक बार लेखक की ओर देख लिया और फिर उनसे एक बार खीरा खाने के लिए पूछ लिया, और साथ ही साथ उन खीरों की खासियत बताते हुए कहते हैं कि वे खीरे लखनऊ के सबसे प्रिय खीरे हैं। लेखक बताते हैं कि नमक - मिर्च छिड़क दिए जाने से उन ताज़े खीरे के पानी से भरे लम्बे-लम्बे टुकड़ों को देख कर उनके मुँह में पानी ज़रूर आ रहा था, लेकिन लेखक पहले ही इनकार कर चुके थे, जिस कारण लेखक ने अपना आत्मसम्मान बचाना ही उचित समझा, और उन्होंने नवाब साहब का शुक्रिया करते हुए उत्तर दिया कि इस वक्त उन्हें खीरे खाने की इच्छा महसूस नहीं हो रही है, और साथ ही साथ लेखक ने अपनी पाचन शक्ति कमज़ोर होने का बहाना बनाते हुए नवाब साहब को ही खीरे खाने को कहा।

प्रश्न 6 - नवाब साहब ने खीरे के टुकड़ों के साथ क्या किया?

उत्तर- नवाब साहब ने खीरे के एक टुकड़े को उठाया और अपने होंठों तक ले गए , फिर उस टुकड़े को सूँघा, उस खीरे के स्वाद की कल्पना की ख़ुशी में लेखक की पलकें बंद हो गई अर्थात नवाब साहब केवल खीरे को सूँघ कर उसके स्वाद का अंदाजा लगा रहे थे। खीरे के स्वाद के अंदाज़े से नवाब साहब के मुँह में भर आए पानी का घूँट उनके गले से नीचे उतर गया। यह सब करने के बाद नवाब साहब ने खीरे के टुकड़े को बिना खाए ही खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब ने खीरे के हर एक टुकड़े को नाक के पास ले जाकर, अपनी कल्पना में ही खीरे के रस का स्वाद ले कर खीरे के हर टुकड़े को खिड़की के बाहर फेंकते गए। लेखक बताते हैं कि नवाब साहब ने खीरे के सभी टुकड़ों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से अपने हाथ और होंठ पोंछ लिए।

प्रश्न 7 - लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों लिया?

उत्तर- लेखक बताते हैं कि आराम से अगर लोकल ट्रेन के सेकंड क्लास में जाना हो तो उसके लिए कीमत भी अधिक लगती है। लेखक को बहुत दूर तो जाना नहीं था। लेकिन लेखक ने टिकट सेकंड क्लास का ही ले लिया ताकि वे अपनी नई कहानी के संबंध में सोच सके और खिड़की से प्राकृतिक

दृश्य का नज़ारा भी ले सकें, इसलिए भीड़ से बचकर, शोरगुल से रहित ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो, लेखक ने चुना।

प्रश्न 8- सेकंड क्लास के डिब्बे में लेखक के अंदाज़े के विपरीत क्या घटा?

उत्तर- लेखक जिस लोकल ट्रेन से जाना चाहता था, किसी कारण थोड़ी देरी होने के कारण लेखक से वह गाड़ी छूट रही थी। सेकंड क्लास के एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर, लेखक ज़रा दौड़कर उसमें चढ़ गए। लेखक ने अंदाज़ा लगाया था कि लोकल ट्रेन का वह सेकंड क्लास का छोटा डिब्बा खाली होगा परन्तु लेखक के अंदाज़े के विपरीत वह डिब्बा खाली नहीं था। उस डिब्बे के एक बर्थ पर लखनऊ के नवाबी परिवार से सम्बन्ध रखने वाले एक सफेद कपड़े पहने हुए सज्जन व्यक्ति बहुत सुविधा से पालथी मार कर बैठे हुए थे।

प्रश्न 9- सेकंड क्लास में बैठे उन सज्जन की नाराज़गी का लेखक क्या अंदाजा लगाते हैं?

उत्तर- उन सज्जन ने अपने सामने दो ताज़े-चिकने खीरे तौलिए पर रखे हुए थे। लेखक के उस डिब्बे में अचानक से कूद जाने के कारण उन सज्जन की आँखों में जो गहराई से सोचने का भाव या कहा जा सकता है कि उसके ध्यान में बाधा या अड़चन पड़ गई थी, जिस कारण उन सज्जन की नाराज़गी साफ़ दिखाई दे रही थी। लेखक उन सज्जन की नाराज़गी को देख कर सोचने लगे कि, हो सकता है, वे सज्जन भी किसी कहानी के लिए कुछ सोच रहे हों या ऐसा भी हो सकता है कि लेखक ने उन सज्जन को खीरे - जैसी तुच्छ वस्तु का शौक करते देख लिया था और इसी हिचकिचाहट के कारण वे नाराज़गी में हों।

भाग : 2 बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. लेखक ने नवाब साहब के व्यवहार के पीछे जो कारण खोजने का प्रयास किया, उससे लेखक के व्यक्तित्व का कौन सा गुण सर्वाधिक प्रकट होता है?

क) कल्पनाशीलता एवं मनोविश्लेषण क्षमता ख) हास्यप्रियता
ग) सामाजिक नेतृत्व घ) आर्थिक समझ

2. नवाब साहब का लेखक के प्रति प्रारंभिक उदासीन व्यवहार मुख्यतः किस मानसिकता को व्यक्त करता है?

क) अतिथि-सत्कार की भावना ख) सामाजिक छवि के प्रति अत्यधिक सजगता
ग) यात्राओं से ऊब घ) लेखक के प्रति सम्मान

3. लेखक द्वारा खीरा खाने से इंकार करने के बाद नवाब साहब का बार बार आग्रह करना किस विरोधाभास को उजागर करता है?

क) उदारता और संकोच का संघर्ष ख) भूख और तृप्ति का संघर्ष
ग) गरीबी और अमीरी का संघर्ष घ) परंपरा और आधुनिकता का संघर्ष

4. लेखक का यह विचार "मियां रईस बनते हैं" किस साहित्यिक उपकरण की ओर संकेत करता है?

क) करुणा ख) व्यंग्य ग) वीर रस घ) उपदेश

5. कहानी का यह प्रसंग किस मानवीय कमजोरी पर सबसे तीखा व्यंग्य करता है?

क) आलस्य ख) अज्ञानता ग) झूठी शान और दिखावा घ) क्रोध

उत्तरमाला- 1-क, 2-ख, 3-क, 4-ख, 5-ख, 6-ख, 7-ग

भाग-3 : आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच (CCT) आधारित प्रश्न

1. यदि नवाब साहब सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता न करते, तो सबसे संभावित व्यवहार क्या होता?

क) वे लेखक से बात न करते। ख) वे खीरे को सहजता से खा लेते।

ग) वे खीरे बाहर फेंक देते। घ) वे डिब्बा बदल लेते।

2. नवाब साहब के व्यवहार को आधुनिक सोशल मीडिया संस्कृति से जोड़कर देखें तो यह किस प्रवृत्ति का उदाहरण प्रतीत होता है?

क) आत्मनिर्भरता ख) छवि-निर्माण (Image Management)

ग) सहयोग भावना घ) नेतृत्व क्षमता

3. लेखक की अंतिम टिप्पणी, "बिना विचार, घटना और पात्रों की इच्छा-मात्र से नई कहानी बन सकती है" -किस ओर संकेत करती है?

क) कल्पना की असीम शक्ति की ओर ख) साहित्य की निरर्थकता की ओर

ग) यात्रा की कठिनाइयों की ओर घ) नवाबी संस्कृति की श्रेष्ठता की ओर

4. यदि आपको नवाब साहब के चरित्र के लिए एक उपयुक्त शीर्षक चुनना हो, तो कौन सा सबसे सार्थक होगा?

क) सच्चा रईस ख) आत्मसम्मानी यात्री ग) दिखावे का बंदी घ) आदर्श मेहमान

उत्तरमाला- 1-ख, 2-ख, 3-क, 4-ग

भाग-4 : दक्षता आधारित प्रश्न / Competency-Based Questions

1. नवाब साहब के व्यवहार का मूल्यांकन करने पर कौन सा निष्कर्ष सबसे उचित प्रतीत होता है?

क) वे वास्तविक आवश्यकताओं से अधिक सामाजिक प्रतिष्ठा को महत्व देते हैं।

ख) वे अत्यंत उदार और सरल व्यक्ति हैं।

ग) वे लेखक को प्रभावित करना चाहते हैं।

घ) वे भोजन के प्रति उदासीन हैं।

2. लेखक की भूमिका को समझने के लिए कौन सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?

क) लेखक केवल घटनाओं का वर्णनकर्ता है।

ख) लेखक एक संवेदनशील पर्यवेक्षक और व्यंग्यकार है।

ग) लेखक नवाब साहब का समर्थक है।

घ) लेखक सामाजिक सुधारक की भूमिका में है।

3. प्रस्तुत प्रसंग से विद्यार्थियों को कौन सा कौशल सीखने को मिलता है ?

क) सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखना ख) दिखावटी व्यवहार अपनाना

ग) व्यवहार और वास्तविकता के बीच अंतर पहचानना घ) दूसरों का अनुकरण करना

4. कहानी का केंद्रीय संदेश किस विकल्प में सर्वाधिक प्रभावी रूप से व्यक्त हुआ है?

क) भोजन का आनंद उसकी सुगंध में होता है।

ख) व्यक्ति को हमेशा दूसरों की राय की चिंता करनी चाहिए।

ग) झूठी शान और आडंबर व्यक्ति को हास्यास्पद बना सकते हैं।

घ) यात्रा के दौरान औपचारिकता बनाए रखना आवश्यक है।

उत्तरमाला- **1. क, 2. ख**, 3. **ग, 4. ग**

पाठ एक नज़र में (त्वरित पुनरावृत्ति हेतु)

यात्रा का प्रसंग

- लेखक ने आरामदायक यात्रा के लिए सेकेंड क्लास का टिकट लिया।
- डिब्बे में पहले से एक नवाब साहब बैठे थे।
- लेखक के आने से नवाब साहब असहज हो गए।

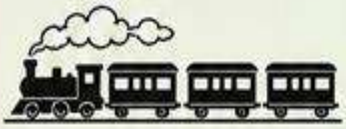

नवाब साहब का व्यक्तित्व

- स्वयं को रईस और सभ्य दिखाना चाहते थे।
- आत्मसम्मान और दिखावे को अधिक महत्व देते थे।
- हर कार्य में नफासत और बनावटी शालीनता झलकती थी।

खीरे का प्रसंग

- नवाब साहब ने बड़े सलीके से खीरे तैयार किए।
- लेखक को दो बार खाने का आग्रह किया।
- लेखक ने दोनों बार खीरा खाने से मना कर दिया।

नवाबी अंदाज़

- खीरे की फाँकों को केवल **सूँघा**।
- एक-एक फाँक खिड़की से बाहर फेंक दी।
- स्वयं को संयमी और विशिष्ट दिखाने का प्रयास किया।

लेखक की प्रतिक्रिया

- लेखक को नवाब साहब का व्यवहार अजीब लगा।
- उन्होंने इसे दिखावे और आडंबर का उदाहरण माना।
- घटना ने लेखक को नई कहानी का विचार दिया।

व्यंग्य का केंद्र

- झूठी शान और बनावटी रईसी।
- सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की प्रवृत्ति।
- वास्तविकता और दिखावे के बीच का अंतर।

प्रमुख पात्र

पात्र	विशेषता
लेखक	सूक्ष्म निरीक्षक, व्यंग्य दृष्टि
नवाब साहब	दिखावटी रईस, आत्मसम्मानी

प्रतीकात्मक अर्थ

खीरा

- दिखावटी नवाबी का प्रतीक।
- बनावटी शिष्टाचार का प्रतीक।
- झूठे आत्मसम्मान का प्रतीक।

कहानी का संदेश

✓ दिखावा व्यक्ति को हास्यास्पद बना देता है।

✓ वास्तविकता से अधिक आडंबर टिकाऊ नहीं होता।

✓ झूठी शान के कारण व्यक्ति सामान्य सुखों से भी वंचित रह जाता है।

मुख्य व्यंग्य

"जहाँ केवल खीरे की खुशबू से पेट भरने का दावा हो, वहाँ दिखावा वास्तविकता पर भारी पड़ जाता है।"

एक कहानी यह भी

पाठ सार-

प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण तथ्यों को उभारा है। लेखिका का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव हुआ था परन्तु उनकी यादें अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के एक-दो मंजिला मकान में पिता की बिगड़ी हुई मनःस्थिति से शुरू हुई। आरम्भ में लेखिका के पिता इंदौर में रहते थे, वहाँ संपन्न तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। काँग्रेस से जुड़े होने के साथ वे समाज सेवा से भी जुड़े थे परन्तु किसी के द्वारा धोखा दिए जाने पर वे आर्थिक मुसीबत में फँस गए और अजमेर आ गए। अपने जमाने के अलग तरह के अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश को पूरा करने बाद भी जब उन्हें धन नहीं मिला तो सकरात्मकता घटती चली गयी। वे बेहद क्रोधी, जिद्दी और शक्की हो गए, जब तब वे अपना गुस्सा लेखिका की बिन पढ़ी माँ पर उतारने के साथ-साथ अपने बच्चों पर भी उतारने लगे। पाँच भाई-बहनों में लेखिका सबसे छोटी थीं। लेखिका काली थीं तथा उनकी बड़ी बहन सुशीला के गोरी होने के कारण पिता हमेशा उनकी तुलना लेखिका से किया करते तथा उन्हें नीचा दिखाते। इस हीनता की भावना ने उनमें विशेष बनने की लगन उत्पन्न की परन्तु लेखकीय उपलब्धियाँ मिलने पर भी वह इससे उबर नहीं पाई। बड़ी बहन के विवाह तथा भाइयों के पढ़ने के लिए बाहर जाने पर पिता का ध्यान लेखिका पर केंद्रित हुआ। पिता ने उन्हें रसोई में समय ख़राब न कर देश दुनिया का हाल जानने के लिए प्रेरित किया। घर में जब कभी विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के जमावड़े होते और बहस होती तो लेखिका के पिता उन्हें उस बहस में बिठाते जिससे उनके अंदर देशभक्ति की भावना जगी।

सन 1945 में सावित्री गर्ल्स कॉलेज के प्रथम वर्ष में हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका में न केवल हिंदी साहित्य के प्रति रूचि जगाई बल्कि साहित्य के सच को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित भी किया। सन 1946-1947 के दिनों में लेखिका ने घर से बाहर निकलकर देशसेवा में सक्रिय भूमिका निभाई। हड़तालों, जुलूसों व भाषणों में भाग लेने से छात्राएँ भी प्रभावित होकर कॉलेजों का बहिष्कार करने लगीं। प्रिंसिपल ने कॉलेज से निकाल जाने से पहले पिता को बुलाकर शिकायत की तो वे क्रोधित होने के बजाय लेखिका के नेतृत्व शक्ति को देखकर गद्गद हो गए। एक बार जब मनु के पिता को उनके एक दक़ियानूसी मित्र ने उन्हें लड़की को बाहर न भेजने और मान-मर्यादा का लिहाज करने को कहा तो उनके पिता गुस्सा हो गए परन्तु रात को जब अजमेर के व्यस्त चौराहे पर बेटी के भाषण की बात उनके एक और अभिन्न मित्र ने लेखिका की बड़ाई करते हुए कहा जिससे लेखिका के पिता ने गौरवान्वित महसूस किया।

सन 1947 के मई महीने में कॉलेज ने लेखिका समेत दो-तीन छात्राओं का प्रवेश थर्ड ईयर में हुड़दंग की कारण निषिद्ध कर दिया परन्तु लेखिका और उनके मित्रों ने बाहर भी इतना हुड़दंग मचाया कि आखिर उन्हें प्रवेश लेना ही पड़ा। यह ख़ुशी लेखिका को उतना खुश न कर पाई जितना आजादी की ख़ुशी ने दी। उन्होंने इसे शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया है।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

1. पाँच भाई-बहिनों में सबसे छोटी मैं। सबसे बड़ी बहिन की शादी के समय मैं शायद सात साल की थी और उसकी एक धुँधली-सी याद ही मेरे मन में है, लेकिन अपने से दो साल बड़ी बहिन सुशीला और मैंने घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले-सतोलिया, लँगड़ी - टाँग, पकड़म - पकड़ाई, काली-टीलो ... तो कमरों में गुड्डे - गुड़ियों के ब्याह भी रचाए, पास - पड़ोस की सहेलियों के साथ। यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली - डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

1. **लेखिका द्वारा भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा और पतंगबाजी जैसी गतिविधियों में भाग लेने का उल्लेख मुख्यतः किस सामाजिक निष्कर्ष की ओर संकेत करता है?**

क. बालिकाओं को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी।

ख. पारंपरिक सीमाओं के बावजूद बालिकाएँ कुछ हद तक लैंगिक विभाजन को चुनौती दे रही थीं।

ग. बालकों और बालिकाओं के बीच कोई अंतर नहीं था।

घ. परिवार में अनुशासन का अभाव था।

2. **यदि उस समय भी मोहल्ले के घरों में आने-जाने पर आज जैसी पाबंदियाँ होतीं, तो लेखिका के बचपन के अनुभवों में सबसे अधिक किस तत्व का अभाव दिखाई देता?**

क. खेल-कूद की विविधता

ख. पारिवारिक अनुशासन

ग. सामुदायिक आत्मीयता और सामाजिक जुड़ाव

घ. आर्थिक समृद्धि

3. **"घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं"–इस कथन का निहितार्थ क्या है?**

क. सभी घरों की संरचना एक जैसी थी।

ख. पड़ोसी एक-दूसरे के जीवन में आत्मीय सहभागिता रखते थे।

ग. घरों की सीमाएँ स्पष्ट नहीं थीं।

घ. मोहल्ले में निजी संपत्ति का अभाव था।

4. **लेखिका द्वारा आधुनिक महानगरीय जीवन की तुलना पारंपरिक पड़ोस-कल्चर से करने का प्रमुख उद्देश्य क्या है?**

क. आधुनिकता का पूर्ण विरोध करना

ख. ग्रामीण जीवन को श्रेष्ठ सिद्ध करना

ग. सामाजिक संबंधों में आए परिवर्तन के प्रभावों का मूल्यांकन करना

घ. महानगरों की जनसंख्या वृद्धि पर टिप्पणी करना

5. **यदि किसी समाज में 'पड़ोस-कल्चर' समाप्त हो जाए, तो लेखिका के अनुसार उसका सबसे संभावित परिणाम क्या होगा?**

क. लोगों की आर्थिक स्थिति बेहतर होगी।

ख. व्यक्ति अधिक आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से सुरक्षित होगा।

ग. लोगों में संकीर्णता, असहायता और असुरक्षा की भावना बढ़ सकती है।

घ. बच्चों के खेलों की संख्या बढ़ जाएगी।

उत्तर- 1-ख, 2-ग, 3-ख, 4-ग, 5-ग

प्रश्न:-2 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से सही विकल्प छाँटकर लिखिए।

घर में आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिता जी का प्रिय शगल था। चाय - पानी या नाश्ता देने जाती तो पिता जी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ, सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था। सन् ' 42 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था, लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर - दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ, क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण, उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था। सो दसवीं कक्षा तक आलम यह था कि बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी और बिना चुनाव किए, बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी। लेकिन सन् '45' में जैसे ही दसवीं पास करके मैं 'फर्स्ट इयर' में आई, हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल ... जहाँ मैंने ककहरा सीखा, एक साल पहले ही कॉलिज बना था और वे इसी साल नियुक्त हुई थीं, उन्होंने बाकायदा साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया।

1. यदि लेखिका के पिता उन्हें राजनीतिक बहसों में बैठने के लिए प्रोत्साहित न करते, तो उनके व्यक्तित्व-विकास पर सबसे संभावित प्रभाव क्या पड़ता?

क. उनकी साहित्यिक रुचि और अधिक बढ़ जाती।

ख. वे देश और समाज की गतिविधियों से अपेक्षाकृत कम परिचित हो पातीं।

ग. वे राजनीतिक दलों की विशेषज्ञ बन जातीं।

घ. उनके अध्ययन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

2. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर यह निष्कर्ष क्यों निकाला जा सकता है कि लेखिका की प्रारम्भिक देशभक्ति भावनात्मक स्तर पर अधिक आधारित थी?

क. वे राजनीतिक दलों की सदस्य थीं ।

ख. उन्हें विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं का गहन ज्ञान था।

ग. वे क्रांतिकारियों/ शहीदों के त्याग से प्रभावित थीं, पर राजनीतिक मतभेदों को नहीं समझती थीं।

घ. वे केवल साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन करती थीं।

3. लेखिका द्वारा "चुनाव किए किताबें पढ़ना बिना" और "बिना किसी खास समझ के बहसें सुनना" किस तथ्य की ओर संकेत करता है?

क. उनमें अध्ययन के प्रति अरुचि थी।

ख. वे ज्ञान अर्जन की प्रारंभिक अवस्था में थीं, जहाँ जिज्ञासा समझ से अधिक प्रभावी थी।

ग. उन्हें पुस्तकों का चयन करना नहीं आता था।

घ. वे बहसों को महत्वहीन मानती थीं।

4. यदि शीला अग्रवाल से लेखिका का परिचय न हुआ होता, तो निम्नलिखित में से कौन सा निष्कर्ष सबसे अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है?

क. उनकी देशभक्ति समाप्त हो जाती।

ख. उनका साहित्यिक विकास संभवतः उतनी दिशा और गहराई प्राप्त न कर पाता।

ग. वे राजनीतिक नेता बन जातीं।

घ. वे पढ़ाई छोड़ देतीं।

5. पिता द्वारा लेखिका को राजनीतिक चर्चाओं में शामिल करने और शीला अग्रवाल द्वारा साहित्य की दुनिया से परिचित कराने में कौन सा साझा तत्व दिखाई देता है?

क. दोनों ने लेखिका पर अपने विचार थोपे।

ख. दोनों ने लेखिका की स्वतंत्र चिंतन-क्षमता और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित किया।

ग. दोनों का उद्देश्य उन्हें राजनीति में भेजना था।

घ. दोनों ने उनकी औपचारिक शिक्षा को महत्व नहीं दिया।

उत्तर- 1-ख, **2-**ग, **3-**ख , **4-**ख, 5-ख

भाग-1 लघु-उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. लेखिका के व्यक्तित्व-निर्माण में विभिन्न व्यक्तियों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए। बताइए कि किस व्यक्ति ने उनके जीवन-दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित किया।

उत्तर- लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्यतया दो लोगों का प्रभाव पड़ा, जिन्होंने उसके व्यक्तित्व को गहराई तक प्रभावित किया। ये दो लोग हैं-

पिता का प्रभाव - लेखिका के जीवन पर पिताजी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे हीन भावना से ग्रसित हो गई। इसी के परिमाण स्वरुप उनमें आत्मविश्वास की भी कमी हो गई थी। पिता के द्वारा ही उनमें देश प्रेम की भावना का भी निर्माण हुआ था।

प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव- शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने एक ओर लेखिका के खोए आत्मविश्वास को पुन: लौटाया तो दूसरी ओर देशप्रेम की अंकुरित भावना को उचित माहौल प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप लेखिका खुलकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने लगी।

प्रश्न 2. लेखिका के पिता द्वारा रसोई के लिए प्रयुक्त 'भटियारखाना' शब्द उनके व्यक्तित्व, सोच और स्त्री-शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण को किस प्रकार उजागर करता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखिका के पिता का मानना था कि रसोई के काम में लग जाने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने - खाने तक ही सीमित रह जाती हैं और अपनी सही प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पातीं। इस प्रकार प्रतिभा को भट्टी में झोंकने वाली जगह होने के कारण ही वे रसोई को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित करते थे।

प्रश्न 3. वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिको को ने अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर- लेखिका के राजनैतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग के कारण कॉलेज की प्रिंसिपल ने उसके पिता के पास पत्र भेजा जिसमें अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की बात लिखी थी। यह पढ़कर पिता जी गुस्से में आ गए। कॉलेज की प्रिंसिपल ने जब बताया कि मन्नू के एक इशारे पर लड़कियाँ बाहर आ जाती हैं और नारे लगाती हुई प्रदर्शन करने लगती हैं तो पिता जी ने कहा कि यह तो देश की माँग

है। वे हर्ष से गदगद होकर जब यही बात लेखिका की माँ को बता रहे थे तो इस बात पर लेखिका को विश्वास नहीं हो पाया।

प्रश्न 4. यद्यपि लेखिका के व्यक्तित्व-निर्माण में उनके पिता की महत्वपूर्ण भूमिका थी, फिर भी दोनों के बीच वैचारिक संघर्ष क्यों उत्पन्न हुआ? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखिका और उसके पिता के विचारों में कुछ समानता के साथ-साथ असमानता भी थी। लेखिका के पिता में विशिष्ट बनने और बनाने की चाह थी पर वे चाहते थे कि यह सब घर की चारदीवारी में रहकर हो, जो संभव नहीं था। वे नहीं चाहते थे कि लेखिका सड़कों पर लड़कों के साथ हाथ उठा-उठाकर नारे लगाए, जुलूस निकालकर हड़ताल करे। दूसरी ओर लेखिका को अपनी घर की चारदीवारी तक सीमित आज़ादी पसंद नहीं थी। यही दोनों के मध्य टकराव का कारण था।

प्रश्न 5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

उत्तर- स्वाधीनता आंदोलन के समय (सन् 1942 से 1947 तक) देश में देशप्रेम एवं देशभक्ति की भावना अपने चरम पर थी। आज़ादी पाने के लिए जगह-जगह हड़तालें, प्रदर्शन, जुलूस, प्रभात फेरियाँ निकाली जा रही थीं। इस आंदोलन के प्रभाव से मन्नू भी अछूती नहीं थी। वह सड़क के चौराहे पर हाथ उठा-उठाकर भाषण देतीं, हड़तालें करवाती तथा अंग्रेजों के विरुद्ध विरोध प्रकट करने के लिए दुकानें बंद करवाती। इस तरह लेखिका इस आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभा रही थी।

भाग 2 : बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. लेखिका के पिता द्वारा बारबार की गई तुलना का लेखिका के व्यक्तित्व पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव क्या पड़ा?

क. उनमें अपनी बहन के प्रति ईर्ष्या बढ़ी।

ख. उन्होंने पढ़ाई में रुचि लेना छोड़ दिया।

ग. हीनता की भावना ने उन्हें स्वयं को सिद्ध करने के लिए प्रेरित किया।

घ. वे परिवार से दूर रहने लगीं।

2. यदि लेखिका के पिता आर्थिक संकट और असफलताओं का सामना न करते, तो उनके व्यक्तित्व में आए परिवर्तनों के संदर्भ में कौन सा निष्कर्ष सर्वाधिक तर्कसंगत है?

क. वे और अधिक शक्की हो जाते।

ख. उनके व्यवहार में कटुता और क्रोध संभवतः कम होता।

ग. वे राजनीति से दूर हो जाते।

घ. वे बच्चों की शिक्षा का विरोध करते।

3. पिता द्वारा लेखिका को रसोई के कार्यों से दूर रखकर राजनीतिक चर्चाओं में बैठाने का प्रमुख उद्देश्य क्या था?

क. घरेलू कार्यों का महत्व कम करना।

ख. लेखिका को समाज और राष्ट्र के प्रति जागरूक बनाना।

ग. परिवार की जिम्मेदारियों से मुक्त रखना।

घ. उन्हें राजनीति में शामिल करना।

4. प्रिंसिपल द्वारा शिकायत करने पर भी पिता का क्रोधित न होना किस बात का संकेत देता है?

क. उन्हें कॉलेज के नियमों की परवाह नहीं थी।

ख. वे अनुशासनहीनता का समर्थन करते थे।

ग. वे लेखिका की नेतृत्व क्षमता को औपचारिक शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण मान रहे थे।

घ. वे प्रिंसिपल की बातों पर विश्वास नहीं करते थे।

5. शीला अग्रवाल के प्रभाव को लेखिका के जीवन में निर्णायक मोड़ क्यों माना जा सकता है?

क. उन्होंने लेखिका को राजनीति में प्रवेश दिलाया।

ख. उन्होंने साहित्य को जीवन से जोड़कर देखने की दृष्टि विकसित की।

ग. उन्होंने लेखिका को कॉलेज बदलने की सलाह दी।

घ. उन्होंने लेखिका को भाषण देना सिखाया।

उत्तर- 1-ग, 2-ख, 3-ख, 4-ग, 5-ख, 6-ग, 7-ख

भाग-3 : आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच (CCT) आधारित प्रश्न

1. मान लीजिए किसी छात्रा को उसके परिवार में लगातार दूसरों से कमतर बताया जाता है, परन्तु वही अनुभव उसे अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित करता है। लेखिका के जीवन के संदर्भ में बताइए कि नकारात्मक अनुभव कभी-कभी सकारात्मक उपलब्धियों का आधार कैसे बन सकते हैं?

2. यदि आप उस समय के समाज में एक अभिभावक होते, तो क्या आप अपनी पुत्री को राजनीतिक बहसों और सामाजिक आंदोलनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते? लेखिका के अनुभवों के आधार पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

3. कॉलेज प्रशासन ने छात्राओं को प्रवेश देने से इंकार कर दिया, परन्तु छात्राओं के विरोध के कारण निर्णय बदलना पड़ा। इस घटना से लोकतांत्रिक अधिकारों और सामूहिक नेतृत्व के बारे में क्या सीख मिलती है?

4. एक ओर समाज का दकियानूसी वर्ग लड़कियों को घर तक सीमित रखना चाहता था, वहीं दूसरी ओर कुछ लोग उनकी सार्वजनिक भागीदारी की प्रशंसा कर रहे थे। इस स्थिति का वर्तमान समाज से संबंध स्थापित करते हुए विश्लेषण कीजिए।

उत्तर संकेत

1. निरंतर तुलना और हीनता की भावना ने लेखिका में स्वयं को सिद्ध करने की तीव्र इच्छा पैदा की, जिससे वे उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकीं।
2. उत्तर छात्र की तार्किक व्याख्या पर आधारित होगा; उदाहरणतः सामाजिक जागरूकता, नेतृत्व क्षमता और आत्मविश्वास के विकास का उल्लेख।
3. सामूहिक प्रयास, नेतृत्व और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष लोकतांत्रिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं।
4. समाज में आज भी परंपरावादी और प्रगतिशील दोनों प्रकार की सोच मौजूद है; परिवर्तन इन्हीं के बीच संवाद और संघर्ष से आगे बढ़ता है।

भाग-4 : दक्षता आधारित प्रश्न / Competency-Based Questions

1. लेखिका के पिता के व्यक्तित्व में आए परिवर्तन का कारण-परिणाम संबंध स्थापित करते हुए स्पष्ट कीजिए कि आर्थिक सफलता व्यक्ति के व्यवहार को किस तरह प्रभावित करती है?
2. लेखिका के जीवन में पिता और शीला अग्रवाल की भूमिकाओं की तुलना कीजिए। दोनों ने उनके व्यक्तित्व के किन-किन पक्षों को विकसित किया ?
3. प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि नेतृत्व क्षमता केवल औपचारिक पद से नहीं, बल्कि व्यवहार और कार्यों से कैसे विकसित होती है।
4. लेखिका के अनुभवों के आधार पर बताइए कि परिवार और विद्यालय मिलकर किसी विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण में किस प्रकार योगदान देते हैं ?

उत्तर संकेत

1. आर्थिक संकट और असफलताओं के कारण पिता का स्वभाव क्रोधी, जिद्दी और शक्की हो गया; इससे स्पष्ट होता है कि परिस्थितियाँ व्यवहार को प्रभावित करती हैं।
2. पिता ने सामाजिक राजनीतिक चेतना और आत्मविश्वास विकसित किया, जबकि शीला अग्रवाल ने साहित्यिक दृष्टि और वैचारिक परिपक्वता प्रदान की।
3. लेखिका ने आंदोलनों, भाषणों और छात्राओं को प्रेरित करके नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया।
4. परिवार ने जागरूकता और प्रेरणा दी, जबकि विद्यालय और शिक्षिका ने ज्ञान, दृष्टि और दिशा प्रदान की।

पाठ एक नज़र में (त्वरित पुनरावृत्ति हेतु)

नौबतखाने में इबादत

अम्मीरुद्दीन उर्फ़ बिस्मिल्ला खाँ का जन्म बिहार में डुमराँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। इनके बड़े भाई का नाम शम्सुद्दीन था जो उम्र में उनसे तीन वर्ष बड़े थे। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम पैग़म्बरबख़्श खाँ तथा माँ मिट्ठन थीं। पाँच-छह वर्ष होने पर वे डुमराँव छोड़कर अपने ननिहाल काशी आ गए। वहाँ उनके मामा सादिक हुसैन और अलीबक्श तथा नाना रहते थे जो कि जाने माने शहनाईवादक थे। वे लोग बालाजी के मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाकर अपनी दिनचर्या का आरम्भ करते थे। वे विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने का काम करते थे। ननिहाल में 14 साल की उम्र से ही बिस्मिल्ला खाँ ने बाला जी के मंदिर में रियाज़ करना शुरू कर दिया। उन्होंने वहाँ जाने का ऐसा रास्ता चुना जहाँ उन्हें रसूलन और बतूलन बाई का गीत सुनाई देता जिससे उन्हें ख़ुशी मिलती। अपने साक्षात्कारों में भी इन्होनें स्वीकार किया कि बचपन में इन लोगों ने इनका संगीत के प्रति प्रेम पैदा करने में भूमिका निभाई।

भले ही वैदिक इतिहास में शहनाई का जिक्र न मिलता हो परन्तु मंगल कार्यों में इसका उपयोग प्रतिष्ठित करता है अर्थात यह मंगल ध्वनि का सम्पूरक है। बिस्मिल्ला खाँ ने अस्सी वर्ष के हो जाने के बावज़ूद हमेशा पाँचो वक्त वाली नमाज में शहनाई के सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में बिताया। मुहर्रम के दसों दिन बिस्मिल्ला खाँ अपने पूरे खानदान के साथ न तो शहनाई बजाते थे और न ही किसी कार्यक्रम में भाग लेते। आठवीं तारीख को वे शहनाई बजाते और दालमंडी से फातमान की आठ किलोमीटर की दूरी तक भींगी आँखों से नौहा बजाकर निकलते हुए सबकी आँखों को भिगो देते।

फ़ुरसत के समय वे उस्ताद और अब्बाजान को काम याद कर अपनी पसंद की सुलोचना, गीताबाली जैसी अभिनेत्रियों की देखी फिल्मों को याद करते थे। वे अपनी बचपन की घटनाओं को याद करते कि कैसे वे छुपकर नाना को शहनाई बजाते हुए सुनाता तथा बाद में उनकी 'मीठी शहनाई' को ढूंढते। बचपन के समय वे फिल्मों के बड़े शौक़ीन थे, घंटों लाइन में लगकर टिकट खरीदते थे। बाद में वे अपनी पसंदीदा अभिनेत्री सुलोचना की फिल्मों को देखने के लिए वे बालाजी मंदिर पर शहनाई बजाकर कमाई करते। वे सुलोचना की कोई फिल्म न छोड़ते तथा कुलसुम की देसी घी वाली दुकान पर कचौड़ी खाना ना भूलते।

काशी के संगीत आयोजन में वे अवश्य भाग लेते। यह आयोजन कई वर्षों से संकटमोचन मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर हो रहा था। बिस्मिल्ला खाँ जब काशी के बाहर भी रहते तब भी वो विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की तरफ मुँह करके बैठते और अपनी शहनाई भी उस तरफ घुमा दिया करते। गंगा, काशी और शहनाई उनका जीवन थे। काशी का स्थान सदा से ही विशिष्ट रहा है, यह संस्कृति की पाठशाला है। बिस्मिल्ला खाँ के शहनाई के धुनों की दुनिया दीवानी हो जाती थी।

सन 2000 के बाद पक्का महाल से मलाई-बर्फ वालों के जाने से, देसी घी तथा कचौड़ी-जलेबी में पहले जैसा स्वाद ना होने के कारण उन्हें इनकी कमी खलती। वे नए गायकों और वादकों में घटती आस्था और रियाज़ों का महत्व के प्रति चिंतित थे। बिस्मिल्ला खाँ हमेशा से दो कौमों की एकता और

भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे। नब्बे वर्ष की उम्र में 21 अगस्त 2006 को उन्होने दुनिया से विदा ली। वे भारतरत्न, अनेकों विश्वविद्यालय की मानद उपाधियों व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा पद्मविभूषण जैसे पुरस्कारों से जाने नहीं जाएँगे बल्कि अपने अजेय संगीतयात्रा के नायक के रूप में पहचाने जाएँगे।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

वैदिक इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसे संगीत शास्त्रांतर्गत 'सुषिर - वाद्यों ' में गिना जाता है। अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिसमें नाड़ी होती है, को 'नय' बोलते हैं। शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात् 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि् दी गई है। सोलहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में तानसेन के द्वारा रची बंदिश, जो संगीत राग कल्पद्रुम से प्राप्त होती है, में शहनाई, मुरली, वंशी, शृंगी एवं मुरछंग आदि का वर्णन आया है। अवधी पारंपरिक लोकगीतों एवं चैती में शहनाई का उल्लेख बार-बार मिलता है। मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला यह वाद्य इन जगहों पर मांगलिक विधि-विधानों के अवसर पर ही प्रयुक्त हुआ है। दक्षिण भारत के मंगल वाद्य 'नागस्वरम्' की तरह शहनाई, प्रभाती की मंगलध्वनि का संपूरक है। शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज़ इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सज़दे, इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज़ के बाद सज़दे में गिड़गिड़ाते हैं - 'मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'

1. यदि किसी वाद्य का उल्लेख वैदिक इतिहास में न मिले, फिर भी वह भारतीय सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग बन जाए, तो शहनाई के संदर्भ में इससे कौनसा निष्कर्ष सबसे अधिक उचित - प्रतीत होता है?

क. किसी वाद्य का महत्व केवल उसके प्राचीन होने पर निर्भर करता है।
ख. सांस्कृतिक स्वीकार्यता किसी वाद्य को विशेष पहचान दिला सकती है।
ग. वैदिक ग्रंथों में वर्णित वाद्य ही उपयोगी होते हैं।
घ. शहनाई का भारतीय संगीत से कोई संबंध नहीं है।

2. शहनाई को 'शाहेनय' अर्थात् 'सुषिर वाद्यों में शाह' कहे जाने से उसके किस गुण की ओर संकेत मिलता है?

क. उसके विदेशी मूल की ओर
ख. उसकी लोकप्रियता और विशिष्ट स्थान की ओर
ग. उसके धार्मिक महत्व की ओर
घ. उसके सीमित उपयोग की ओर

3. अवधी लोकगीतों, चैती और मांगलिक अवसरों में शहनाई के प्रयोग का उल्लेख यह सिद्ध करता है कि-

क. शहनाई केवल शास्त्रीय संगीत तक सीमित रही।
ख. शहनाई का संबंध जनजीवन और लोकसंस्कृति दोनों से रहा है।
ग. शहनाई केवल राजदरबारों में बजाई जाती थी।
घ. शहनाई का प्रयोग केवल धार्मिक अनुष्ठानों में होता था।

4. बिस्मिल्ला खाँ द्वारा जीवनभर 'सच्चे सुर' की प्रार्थना करना किस मूल्य को सर्वाधिक स्थापित करता है?

क. आत्मसंतोष　　　　　　　　ख. निरंतर साधना और विनम्रता

ग. प्रसिद्धि की इच्छा　　　　　　घ. प्रतिस्पर्धा की भावना

5. यदि बिस्मिल्ला खाँ अपने संगीत को केवल पेशा मानते, तो उनकी प्रार्थना और साधना का स्वरूप संभवतः कैसा होता?

क. वे सुर को ईश्वरीय कृपा न मानकर केवल तकनीकी कौशल तक सीमित रखते।

ख. वे नमाज़ पढ़ना छोड़ देते।

ग. वे शहनाई बजाना बंद कर देते।

घ. वे केवल लोकगीतों का अभ्यास करते।

उत्तर-　1-ख,　2-ख,　3-ख,　4-ख,　5-क

2. अमीरुद्दीन तब सिर्फ चार साल का रहा होगा। छुपकर नाना को शहनाई बजाते हुए सुनता था, रियाज़ के बाद जब अपनी जगह से उठकर चले जाएँ तब जाकर ढेरों छोटी-बड़ी शहनाइयों की भीड़ से अपने नाना वाली शहनाई ढूँढ़ता और एक-एक शहनाई को फ़ेंक कर खारिज़ करता जाता, सोचता - 'लगता है मीठी वाली शहनाई दादा कहीं और रखते हैं।' जब मामू अलीबख्श खाँ (जो उस्ताद भी थे) शहनाई बजाते हुए सम पर आएँ, तब धड़ से एक पत्थर ज़मीन पर मारता था। सम पर आने की तमीज़ उन्हें बचपन में ही आ गई थी, मगर बच्चे को यह नहीं मालूम था कि दाद वाह करके दी जाती है, सिर हिलाकर दी जाती है, पत्थर पटक कर नहीं। और बचपन के समय फिल्मों के बुखार के बारे में तो पूछना ही क्या ? उस समय थर्ड क्लास के लिए छः पैसे का टिकट मिलता था। अमीरुद्दीन दो पैसे मामू से, दो पैसे मौसी से और दो पैसे नानी से लेता था फिर घंटों लाइन में लगकर टिकट हासिल करता था। इधर सुलोचना की नई फ़िल्म सिनेमाहाल में आई और उधर अमीरुद्दीन अपनी कमाई लेकर चला फ़िल्म देखने जो बालाजी मंदिर पर रोज़ शहनाई बजाने से उसे मिलती थी। एक अठन्नी मेहनताना। उस पर यह शौक ज़बरदस्त कि सुलोचना की कोई नई फ़िल्म न छूटे और कुलसुम की देशी घी वाली दुकान। वहाँ की संगीतमय कचौड़ी। संगीतमय कचौड़ी इस तरह क्योंकि कुलसुम जब कलकलाते घी में कचौड़ी डालती थी, उस समय छन्न से उठने वाली आवाज़ में उन्हें सारे आरोह-अवरोह दिख जाते थे।

1. नाना की मीठी वाली शहनाई को खोजने के लिए अमिरुद्दीन द्वारा एक एक शहनाई को परखना उनके व्यक्तित्व के किस गुण को सर्वाधिक प्रभावित करता है?

क. जिद्दी स्वभाव　　　ख. संगीत के प्रति सहज जिज्ञासा और संवेदनशीलता

ग. अनुशासनहीनता　　　घ. दूसरों की वस्तुओं के प्रति आकर्षण

2. मामू अलीबख्श खाँ के 'सम' पर पहुँचने पर पत्थर पटककर दाद देना इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि–

क. अमीरुद्दीन संगीत से अनभिज्ञ थे।

ख. वे मामू को परेशान करना चाहते थे।

ग. संगीत की बारीकियों को समझते थे, पर सामाजिक अभिव्यक्ति का तरीका नहीं जानते थे।

घ. उन्हें शहनाई सुनना पसंद नहीं था।

3. यदि अमीरुद्दीन के भीतर संगीत के प्रति स्वाभाविक लगाव न होता, तो उनके बचपन के व्यवहार में कौनसा पक्ष दिखाई नहीं देता-?

क. शहनाइयों की ध्वनि में अंतर खोजने का प्रयास ख. फिल्मों के लिए उत्साह

ग. मित्रों के साथ समय बिताना घ. परिवार से आर्थिक सहायता लेना

4. बालाजी मंदिर में शहनाई बजाकर कमाई करना और उसी धन से अपनी रुचियों को पूरा करना अमीरुद्दीन के व्यक्तित्व की किस विशेषता को दर्शाता है?

क. आत्मनिर्भरता और कर्मशीलता ख. विलासप्रियता

ग. अहंकार घ. प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्ति

5. कुलसुम की कचौड़ी तलने की आवाज़ में भी अमीरुद्दीन को 'आरोहअवरोह-' सुनाई देना किस निष्कर्ष को सबसे अधिक पुष्ट करता है?

क. वे भोजन के अत्यधिक शौकीन थे।

ख. उनका मन हर अनुभव को संगीत से जोड़कर देखता था।

ग. उन्हें बाजार की चहल-पहल पसंद थी। घ. वे नई ध्वनियों से बचना चाहते थे।

उत्तर- 1-ख, 2-ग, 3-क, 4-क, 5-ख

भाग : 1 लघु-उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. डुमराँव का उल्लेख आते ही शहनाई और बिस्मिल्ला खाँ की स्मृतियाँ क्यों जीवंत हो उठती हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किए जाने के मुख्यतया दो कारण हैं

- शहनाई बजाने में जिस रीड का प्रयोग किया है वह डुमराँव में ही सोन नदी के किनारे मिलती है। इस रीड के बिना शहनाई बजना मुश्किल है।
- शहनाई की मंगल ध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराँव ही है।

प्रश्न 2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक इसलिए कहा गया है क्योंकि शहनाई की ध्वनि मंगलदायी मानी जाती है। इसका वादन मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से भी अधिक समय तक शहनाई बजाते रहे। उनकी गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक के रूप में की जाती है। उन्होंने शहनाई को भारत ही नहीं विश्व में लोकप्रिय बनाया।

प्रश्न 3. सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?

उत्तर- सुषिर वाद्यों से अभिप्राय उन वाद्यों से है जिनमें सुराख होते हैं और जिनमें फूँक मारकर बजाया जाता है। शहनाई, बाँसुरी, श्रृंगी आदि सुषिर वाद्य के अंतर्गत आते हैं। इन सुषिर वाद्यों में शहनाई सबसे सुरीली और कर्ण प्रिय आवाज़ वाली होती है, इसलिए उसे 'सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए

(क) 'फटा सुर न बख्शे। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।

(ख) 'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'

उत्तर- (क) बिस्मिल्ला खाँ को दुनिया उनकी शहनाई के कारण जानती है, लुंगी के कारण नहीं। वे खुदा से हमेशा सुरों का वरदान माँगते रहे हैं। उन्हें लगता है कि अभी वे सुरों को बरतने के मामले में पूर्ण नहीं हो पाए हैं। यदि खुदा ने उन्हें ऐसा सुर और कला न दी होती तो वे प्रसिद्ध न हो पाते। फटे सुर को ठीक करना असंभव है पर फटे कपड़े आज नहीं तो कल सिल ही जाएँगे।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ महान कलाकार हैं। उन्हें अभिमान छू भी न गया है। सफलता के शिखर पर पहुँचने के बाद भी वे खुदा से ऐसा सुर माँगते हैं जिसे सुनकर लोग आनंदित हो उठे। इस आनंद से उनका रोम-रोम भीग जाए और उनकी आँखों से आनंद के आँसू बह निकले।

प्रश्न 5. काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर- समय के साथ-साथ काशी में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं जो बिस्मिल्ला खाँ को दुखी करते हैं, जैसे- 1. पक्का महाल से मलाई बरफ़ वाले गायब हो रहे हैं।

2. कुलसुम की कचौड़ियाँ और जलेबियाँ अब नहीं मिलती हैं।
3. संगीत और साहित्य के प्रति लोगों में वैसा मान-सम्मान नहीं रहा।
4. गायकों के मन में संगतकारों के प्रति सम्मान भाव नहीं रहा।
5. हिंदू-मुसलमानों में सांप्रदायिक सद्भाव में कमी आ गई है।

प्रश्न 6. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि

1. बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

2. वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इंसान थे।

उत्तर- (क) बिस्मिल्ला खाँ अपने धर्म अर्थात् मुस्लिम धर्म के प्रति समर्पित इंसान थे। वे नमाज़ पढ़ते, सजदा करते और खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगते थे। इसके अलावा वे हज़रत इमाम हुसैन की शहादत पर दस दिनों तक शोक प्रकट करते थे तथा आठ किलोमीटर पैदल चलते हुए रोते हुए नौहा बजाया करते थे। इसी तरह वे काशी में रहते हुए गंगामैया, बालाजी और बाबा विश्वनाथ के प्रति असीम आस्था रखते थे। वे हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित शास्त्रीय गायन में भी उपस्थित रहते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। उन्हें धार्मिक कट्टरता छू भी न गई थी। वे खुदा और हज़रत इमाम हुसैन के प्रति जैसी आस्था एवं श्रद्धा रखते थे। वैसी ही श्रद्धा एवं आस्था गंगामैया, बालाजी, बाबा विश्वनाथ के प्रति भी रखते थे। वे काशी की गंगा-जमुनी संस्कृति में विश्वास रखते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ सच्चे इनसान थे।

प्रश्न 7. बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना को समृद्ध करने वाले व्यक्ति और घटनाएँ निम्नलिखित हैं-

- बिस्मिल्ला खाँ अपने नाना को बचपन से मीठी शहनाई बजाते देखा करते थे। उनके चले जाने के बाद बालक अमीरुद्दीन उसी शहनाई को ढूँढ़ता।
- अपने मामूजान के सम पर आने पर अमीरुद्दीन पत्थर ज़मीन पर मारकर दाद दिया करता था।
- वे रसूलनबाई और बतूलनबाई का गायन सुनकर इतने प्रभावित हुए कि संगीत सीखने की दिशा में दृढ़ कदम उठा लिया।
- वे कुलसुम हलवाइन के कचौड़ियाँ तलने में संगीत की अनुभूति करते थे।

प्रश्न 8. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ हैं, जिनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ। इन विशेषताओं में प्रमुख हैं-

- सादा जीवन उच्च विचार: बिस्मिल्ला खाँ अत्यंत सादा जीवन जीते थे। वे लुंगी पहने ही आगंतुकों से मिलने चले आते थे, परंतु उनके विचार अत्यंत उच्च थे।
- निरभिमानी: सफलता की चोटी पर पहुँचने के बाद भी बिस्मिल्ला खाँ को अभिमान छू भी न गया था। इसके बाद भी खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगते रहते थे।
- धार्मिक सद्भाव: बिस्मिल्ला खाँ अपने धर्म के प्रति समर्पित होकर नमाज़ अदा करते थे और हजरत इमाम हुसैन के बलिदान के प्रति दस दिन का शोक मनाते थे तो गंगा मइया, बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति भी असीम आस्था रखते थे।
- परिश्रमशील स्वभाव: बिस्मिल्ला खाँ अपने जीवन के अस्सी बरस पूरे करने के बाद भी रियाज़ करते थे और संगीत साधना के प्रति समर्पित रहते थे।
- सीखने की ललक: बिस्मिल्ला खाँ की एक विशेषता यह भी है कि उनमें सीखने की एक ललक थी। वे शहनाई के सर्वश्रेष्ठ कलाकार होने पर भी खुद को पूर्ण नहीं मानते थे। वे हमेशा सीखने के लिए लालायित रहते थे।

भाग- 2 : बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. बिस्मिल्ला खाँ द्वारा अस्सी वर्षों तक 'सच्चे सुर' की प्रार्थना करना उनके व्यक्तित्व की किस विशेषता को सबसे प्रभावी रूप से प्रकट करता है?

क. प्रसिद्धि प्राप्त करने की इच्छा　　ख. कला को आध्यात्मिक साधना मानने की दृष्टि

ग. धार्मिक अनुष्ठानों का पालन　　घ. सामाजिक प्रतिष्ठा की आकांक्षा

2. यदि बिस्मिल्ला खाँ को बचपन में संगीतमय पारिवारिक वातावरण न मिला होता, तो उनके जीवन पर सबसे संभावित प्रभाव क्या पड़ता?

क. वे केवल धार्मिक कार्यों तक सीमित रह जाते।

ख. संगीत के प्रति उनकी स्वाभाविक प्रतिभा के विकास में बाधा आ सकती थी।

ग. वे फिल्मों के अभिनेता बन जाते।　　घ. वे शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते।

3. बिस्मिल्ला खाँ का विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा में बैठकर शहनाई बजाना किस विचार का सबसे सशक्त उदाहरण है?

क. धार्मिक कट्टरता　　ख. क्षेत्रीय गर्व

ग. कला, आस्था और सांस्कृतिक समन्वय का भाव　　घ. परंपराओं का विरोध

4. मुहर्रम के अवसर पर नौहा बजाते समय बिस्मिल्ला खाँ की भीगी आँखें किस बात की ओर संकेत करती हैं?

क. शारीरिक थकान　　ख. परंपरा के प्रति औपचारिकता

ग. संवेदनात्मक और आध्यात्मिक जुड़ाव　　घ. संगीत से अरुचि

5. बिस्मिल्ला खाँ का नए कलाकारों में घटती आस्था और रियाज़ की कमी को लेकर चिंतित होना किस मूल्य को सर्वाधिक महत्व देता है?

क. आर्थिक सफलता　　ख. तकनीकी प्रगति

ग. अनुशासित साधना और समर्पण　　घ. लोकप्रियता

उत्तर 1-ख, 2-ख, 3-ग, 4-ग, 5-ग

भाग-3 : आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच (CCT) आधारित प्रश्न

1. **एक युवा कलाकार नियमित अभ्यास की बजाय केवल त्वरित प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहता है। बिस्मिल्ला खाँ के जीवन के आधार पर उसे क्या सलाह दी जा सकती है? स्पष्ट कीजिए।**
2. **मान लीजिए कि किसी व्यक्ति का पालन पोषण ऐसे-परिवार में हुआ है जहाँ कला और संस्कृति का वातावरण नहीं है। बिस्मिल्ला खाँ के जीवन के संदर्भ में बताइए कि परिवेश किसी प्रतिभा के विकास को किस प्रकार प्रभावित करता है।**
3. **आज के समय में अनेक कलाकार परंपराओं से दूर होते जा रहे हैं। बिस्मिल्ला खाँ के जीवन और काशी से उनके जुड़ाव के आधार पर सांस्कृतिक जड़ों के महत्व का विश्लेषण कीजिए।**
4. **यदि किसी समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं के बीच तनाव बढ़ रहा हो, तो बिस्मिल्ला खाँ का जीवन उस समाज के लिए किस प्रकार प्रेरणास्रोत बन सकता है?**
5. **कल्पना कीजिए कि बिस्मिल्ला खाँ केवल पुरस्कारों और प्रसिद्धि को ही अपना लक्ष्य बनाते। क्या वे उतने ही महान कलाकार बन पाते? अपने उत्तर का तर्क सहित समर्थन कीजिए।**

उत्तर संकेत

1. निरंतर रियाज़, धैर्य और समर्पण ही स्थायी सफलता का आधार हैं; त्वरित प्रसिद्धि नहीं।
2. सकारात्मक सांस्कृतिक वातावरण प्रतिभा को दिशा, अवसर और प्रेरणा प्रदान करता है।
3. सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव कलाकार की पहचान और उसकी कला को गहराई प्रदान करता है।
4. उनका जीवन धार्मिक सौहार्द, सांस्कृतिक एकता और भाईचारे का आदर्श प्रस्तुत करता है।
5. नहीं, क्योंकि उनकी महानता का आधार साधना, विनम्रता और कला के प्रति समर्पण था, न कि केवल प्रसिद्धि।

भाग-4 : दक्षता आधारित प्रश्न / Competency-Based Questions

1. **बिस्मिल्ला खाँ के जीवन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रतिभा और परिश्रम का क्या संबंध है।**
2. **शहनाई और बिस्मिल्ला खाँ के संबंध को देखते हुए बताइए कि किसी कलाकार की पहचान उसके साधन और साधना से किस प्रकार निर्मित होती है।**
3. **बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय के कौनकौन से - उदाहरण प्राप्त होते हैं? उनका विश्लेषण कीजिए।**
4. **बिस्मिल्ला खान के बचपन के अनुभवों और संगीत के प्रति उनके आकर्षण के आधार पर बताइए कि प्रारम्भिक रुचियाँ भविष्य के व्यक्तित्व को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?**
5. **"सच्चा कलाकार जीवनभर सीखता रहता है।" इस कथन की पुष्टि बिस्मिल्ला खाँ के जीवन के उदाहरणों द्वारा कीजिए।**

उत्तर संकेत

1. प्रतिभा आधार प्रदान करती है, जबकि निरंतर परिश्रम और रियाज़ उसे उत्कृष्टता तक पहुँचाते हैं।
2. शहनाई उनकी पहचान बन गई क्योंकि उन्होंने उसे साधना, समर्पण और नवाचार से नई ऊँचाइयाँ दीं।
3. मंदिरों में रियाज़ करना, नमाज़ अदा करना तथा हिंदू देना इसके प्रमुख मुस्लिम एकता का संदेश उदाहरण हैं।

4. अस्सी वर्ष की आयु तक 'सच्चे सुर' की खोज और निरंतर साधना इस कथन को सिद्ध करती है।
5. बचपन की रुचियाँ व्यक्ति की दिशा, कौशल और जीवन लक्ष्य को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पाठ एक नज़र में (हेतु त्वरित पुनरावृत्ति)

परिवार और प्रारम्भिक जीवन

- जन्म बिहार के डुमराँव में एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ।
- पिता पैगम्बरबख्श खाँ, माता मिट्ठन और बड़े भाई शम्सुद्दीन (तीन वर्ष बड़े) थे।
- पाँच-छह वर्ष की आयु में ननिहाल काशी आ गए जहाँ मामा सादिक हुसैन, अलीबक्श और नाना प्रसिद्ध शहनाईवादक थे।

संगीत साधना और प्रेरणाएँ

- 14 वर्ष की उम्र से बालाजी मंदिर में रियाज़ शुरु किया।
- रसूलन और बतूलन बाई के गीत सुनकर संगीत के प्रति प्रेम बढ़ा।
- शहनाई मंगल ध्वनि का प्रतीक है; नमाज में सच्चे सुर की प्रार्थना करते रहे।

बचपन की यादें और रुचियाँ

- सुलोचना, गीताबाली जैसी अभिनेत्रियों की फिल्मों के बड़े शौकीन थे।
- छुपकर नाना को शहनाई सुनाते, शहनाई फेंकते और मामा की शहनाई पर पत्थर पटककर दाद देते।
- फिल्मों का टिकट छ; पैसे का होता; दो-दो पैसे मामा, मौसी और नाना से लेकर टिकट लेते थे।

काशी, शहनाई और जीवन दर्शन

- काशी के संगीत आयोजनों, विशेषकर संकटमोचन मंदिर की हनुमान जयंती में वे अवश्य भाग लेते।
- जहाँ भी रहते, विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की ओर मुँह करके बैठते और शहनाई उसी दिशा में घुमाते।
- गंगा, काशी और शहनाई उनका जीवन थे; उनके धुनों की दुनिया दीवानी थी।

चिंताएँ और विचार

- 2000 के बाद पक्का महाल, देसी घी, कचौड़ी-जलेबी के स्वाद की कमी खलती थी।
- नए गायकों-वादकों में घटती आस्था और रियाज़ के महत्व को लेकर चिंतित थे।
- वे हमेशा दो कौमों की एकता और भाईचारे की प्रेरणा देते रहे।

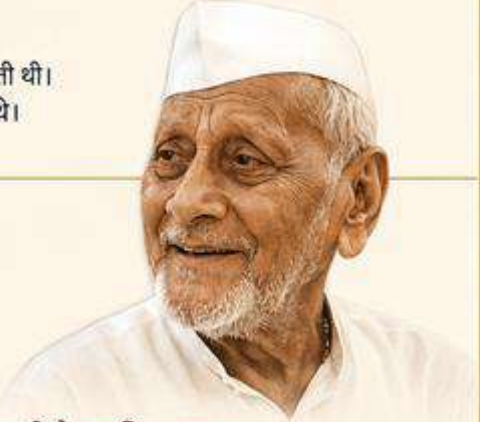

सम्मान और अमर विरासत

- नब्बे वर्ष की उम्र में 21 अगस्त 2006 को उन्होंने दुनिया से विदा ली।
- भारतरत्न, पद्मविभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सहित अनेकों मानद उपाधियों से सम्मानित हुए।
- वे अपने अजेय संगीतयात्रा के नायक के रुप में सदैव जीवित रहेंगे।

गंगा, काशी और शहनाई – यहीं था उनका जीवन, यही है उनकी पहचान।

संस्कृति

पाठ सार -

लेखक कहते हैं कि सभ्यता और संस्कृति दो ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग अधिक होता है परन्तु समझ में कम आता है। इनके साथ विशेषण लगा देने से इन्हें समझना और भी कठिन हो जाता है। कभी-कभी दोनों को एक समझ लिया जाता है तो कभी अलग। आखिर ये दोनों एक हैं या अलग। लेखक समझाने का प्रयास करते हुए आग और सुई-धागे के आविष्कार का उदाहरण देते हैं। वह उनके आविष्कर्ता की बात कहकर व्यक्ति विशेष की योग्यता, प्रवृत्ति और प्रेरणा को व्यक्ति विशेष की संस्कृति कहता है जिसके बल पर आविष्कार किया गया।

लेखक संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्थापित करने के लिए आग और सुई-धागे के आविष्कार से जुड़ी प्रारंभिक प्रयत्नशीलता और बाद में हुई उन्नति के उदाहरण देते हैं। वे कहते हैं लोहे के टुकड़े को घिसकर छेद बनाना और धागा पिरोकर दो अलग-अलग टुकड़ों को जोड़ने की सोच ही संस्कृति है। इन खोजों को आधार बनाकर आगे जो इन क्षेत्रों में विकास हुआ वह सभ्यता कहलाता है। अपनी बुद्धि के आधार पर नए निश्चित तथ्य को खोज आने वाली पीढ़ी को सौंपने वाला संस्कृत होता है जबकि उसी तथ्य को आधार बनाकर आगे बढ़ने वाला सभ्यता का विकास करने वाला होता है। भौतिक विज्ञान के सभी विद्यार्थी जानते हैं कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया, इसलिए वह संस्कृत कहलाया परन्तु वह और अनेक बातों को नहीं जान पाया। आज के विद्यार्थी उन बातों को भी जानते है लेकिन हम इन्हें अधिक सभ्य भले ही कहे परन्तु संस्कृत नहीं कह सकते।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता। जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्र में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा। एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए, संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सके; पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

1. लेखक के अनुसार यदि कोई व्यक्ति अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त ज्ञान का केवल उपयोग करता है, पर स्वयं कोई नई खोज नहीं करता, तो उसे किस रूप में अधिक उचित माना जाएगा?

क. संस्कृत एवं सभ्य दोनों   ख. न संस्कृत, न सभ्य

ग. सभ्य, पर संस्कृत नहीं   घ. संस्कृत, पर सभ्य नहीं

2. यदि न्यूटन के सिद्धांतों को पढ़कर कोई वैज्ञानिक एक बिल्कुल नया प्राकृतिक नियम खोज लेता है, तो लेखक की दृष्टि में उसकी पहचान क्या होगी?

क. केवल सभ्य व्यक्ति
ख. संस्कृत व्यक्ति
ग. परंपरागत व्यक्ति
घ. अनुकरणकर्ता व्यक्ति

3. निम्न में से कौन-सा उदाहरण पाठ में वर्णित 'संस्कृति' की अवधारणा को स्पष्ट करता है?

क. इंटरनेट का उपयोग करना
ख. पूर्वजों द्वारा निर्मित भवन में रहना
ग. नई तकनीक का आविष्कार करना
घ. पुस्तकालय से पुस्तकें लेना

4. पाठ के आधार पर यह निष्कर्ष किस सीमा तक उचित है कि सभ्यता और संस्कृति का संबंध कारण और परिणाम जैसा है?

क. सभ्यता संस्कृति का परिणाम है।
ख. संस्कृति सभ्यता का परिणाम है।
ग. दोनों पूर्णतः स्वतंत्र हैं।
घ. दोनों एक-दूसरे के विरोधी हैं।

5. यदि किसी समाज में नवीन आविष्कार बंद हो जाएँ, किन्तु पुराने आविष्कारों का उपयोग निरंतर होता रहे, तो लेखक की अवधारणा के अनुसार उस समाज की स्थिति क्या होगी?

क. संस्कृति और सभ्यता दोनों विकसित होंगी।
ख. संस्कृति विकसित होगी, सभ्यता नहीं।
ग. सभ्यता बनी रहेगी, संस्कृति का विकास रुक जाएगा।
घ. संस्कृति और सभ्यता दोनों समाप्त हो जाएँगी।

उत्तर- 1-ग, 2-ख, 3-ग, 4-क, 5-ग

2

संसार के मज़दूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुख में बिता दिया। और इन सबसे बढ़कर आज नहीं, आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके। हमारी समझ में मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई-धागे का आविष्कार कराती है; वह भी संस्कृति है जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है, वह भी है; और जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है, वह भी संस्कृति है। और सभ्यता? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके, हमारे गमना-गमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता हैं। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा? संस्कृति के नाम से जिस कूड़े-करकट के ढेर का बोध होता है, वह न संस्कृति है न रक्षणीय वस्तु। मानव ने जब-जब प्रज्ञा और मैत्री भाव से किसी नए तथ्य का दर्शन किया है तो उसने कोई वस्तु नहीं देखी है, जिसकी रक्षा के लिए दलबंदियों की ज़रूरत है।

1. लेखक ने कार्ल मार्क्स और सिद्धार्थ (बुद्ध) के उदाहरण किस उद्देश्य से दिए हैं?

क. यह दिखाने के लिए कि महान व्यक्ति सदैव दुःखी रहते हैं।
ख. यह स्पष्ट करने के लिए कि संस्कृति का सर्वोच्च रूप मानव-कल्याण हेतु त्याग में निहित है।

ग. यह सिद्ध करने के लिए कि धन और सुख का कोई संबंध नहीं है।

घ. यह बताने के लिए कि समाज सुधार केवल दार्शनिक ही कर सकते हैं।

2. यदि कोई समाज अत्याधुनिक तकनीक विकसित कर ले, पर उसका उपयोग विनाश और युद्ध के लिए करे, तो लेखक की दृष्टि में उसकी स्थिति क्या होगी?

क. वह अत्यंत संस्कृत समाज कहलाएगा।

ख. वह केवल सभ्य समाज कहलाएगा।

ग. उसकी संस्कृति असंस्कृति में परिवर्तित हो जाएगी।

घ. वह संस्कृति और सभ्यता दोनों का आदर्श उदाहरण होगा।

3. 'संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी'–इस कथन का सबसे उपयुक्त निष्कर्ष क्या है?

क. संस्कृति का मूल्य उसकी प्राचीनता से निर्धारित होता है।

ख. संस्कृति का मूल्य मानव-हित और नैतिक उद्देश्य से निर्धारित होता है।

ग. संस्कृति केवल ज्ञान और विज्ञान तक सीमित है।

घ. संस्कृति का संबंध केवल धार्मिक आस्थाओं से है।

4. लेखक के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सी स्थिति वास्तविक संस्कृति का परिचायक है?

1. प्रज्ञा (विवेकपूर्ण चिंतन) द्वारा नए तथ्यों का दर्शन करना।

2. मानव-कल्याण और मैत्रीभाव को महत्व देना।

3. पुराने विचारों और परंपराओं की रक्षा हेतु दलबंदियाँ बनाना।

4. व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर व्यापक हित के लिए कार्य करना।सही विकल्प छांटिए

(क) केवल 1 और 2 सही हैं | (ख) केवल 2 और 4 सही हैं |

(ग) केवल 1, 2 और 4 सही हैं | (घ) सभी सही हैं |

5. यदि किसी राष्ट्र के पास शक्तिशाली हथियार, आधुनिक परिवहन और उन्नत तकनीक हो, परंतु वहाँ आपसी घृणा और हिंसा फैली हो, तो लेखक के अनुसार कौन-सा कथन अधिक उचित होगा?

क. राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता दोनों उच्च हैं।

ख. राष्ट्र की सभ्यता विकसित है, पर उसकी संस्कृति संदिग्ध है।

ग. राष्ट्र की संस्कृति विकसित है, सभ्यता नहीं।

घ. राष्ट्र न सभ्य है और न संस्कृत।

उत्तर 1-ख, 2-ग, 3-ख, 4-ग, 5-ख

भाग-1 लघुउत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न-1 लेखक की दृष्टि में सभ्यता और संस्कृति की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है ?

उत्तर- लेखक की दृष्टि में सभ्यता और संस्कृति शब्दों की सही समझ अब तक इसलिए नहीं बन पाई। क्योंकि लोग सभ्यता और संस्कृति शब्दों का प्रयोग तो खूब करते हैं पर वे इनके अर्थ के बारे में भ्रमित रहते हैं। वे इनके अर्थ को जाने-समझे बिना मनमाने ढंग से इनका प्रयोग करते हैं। इन शब्दों के साथ भौतिक और आध्यात्मिक विशेषण लगाकर इन्हें और भी भ्रामक बना देते हैं। ऐसी स्थिति में लोग इनका अर्थ अपने-अपने विवेक से लगा लेते हैं। इससे स्पष्ट है कि इन शब्दों के सही अर्थ की समझ अब तक नहीं बन पाई है।

प्रश्न 2. आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

उत्तर- आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज इसलिए मानी जाती है क्योंकि इससे मनुष्य की जीवन शैली और खानपान में बहुत बदलाव आया। दूसरे मनुष्य के पेट की ज्वाला अधिक सुविधाजनक ढंग से शांत होने लगी। इससे उसका भोजन स्वादिष्ट बन गया तथा उसे सरदी भगाने का साधन मिल गया। इसके अलावा प्रकाश और आग का भय दिखाने से जंगली जानवरों के खतरे में कमी आई। आग ने मनुष्य के सभ्य बनने का मार्ग भी प्रशस्त किया। इसकी खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत पेट की ज्वाला, सरदी से मुक्ति, प्रकाश की चाहत तथा जंगली जानवरों के खतरे में कमी लाने की चाहत रही होगी।

प्रश्न 3. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है ?

उत्तर- वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति उसे कहा जा सकता है जो अपना पेट भरा होने तथा तन ढंका होने पर भी निठल्ला नहीं बैठता है। वह अपने विवेक और बुद्धि से किसी नए तथ्य का दर्शन करता है और समाज को अत्यंत उपयोगी आविष्कार देकर उसकी सभ्यता का मार्ग प्रशस्त करता है। उदाहरणार्थ न्यूटन संस्कृत व्यक्ति था जिसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की। इसी तरह सिद्धार्थ ने मानवता को सुखी देखने के लिए अपनी सुख-सुविधा छोड़कर जंगल की ओर चले गए।

प्रश्न 4. न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

उत्तर- न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे यह तर्क दिया गया है कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत संबंधी नए तथ्य का दर्शन किया और इस सिद्धांत की खोज किया। नई चीज़ की खोज करने के कारण न्यूटन संस्कृत मानव था। कुछ लोग जो न्यूटन के पीढ़ी के हैं वे न्यूटन के सिद्धांत को जानने के अलावा अन्य बहुत-सी उन बातों का ज्ञान रखते हैं जिनसे न्यूटन सर्वथा अनभिज्ञ था, परंतु उन्हें संस्कृत मानव इसलिए नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उन्होंने न्यूटन की भाँति किसी नए तथ्य का आविष्कार नहीं किया। ऐसे लोगों को संस्कृत मानव नहीं बल्कि सभ्य मानव कहा जा सकता है।

प्रश्न 5. किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा?

उत्तर- सुई-धागे का आविष्कार जिन दो महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया वे हैं-

- अपने शरीर को शीत और उष्ण मौसम से सुरक्षित रखने के लिए कपड़े सिलने हेतु।
- मनुष्य द्वारा सुंदर दिखने की चाह में अपने शरीर को सजाने के लिए क्योंकि इससे पूर्व वह छाल एवं पेड़ के पत्तों से यह कार्य किया करता था।

प्रश्न 6."मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।" किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब

(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं।

(ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।

उत्तर- (क) समय-समय ऐसी कुचेष्टाएँ की गईं जब मानव-संस्कृति को धर्म और संप्रदाय में बाँटने का प्रयास किया गया। कुछ असामाजिक तत्व तथा धर्म के तथाकथित ठेकेदारों ने हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिकता का जहर फैलाने का प्रयासकर मानव संस्कृति को बाँटने की कुचेष्टा की। इन लोगों ने अपने भाषणों द्वारा दोनों वर्गों को भड़काने का प्रयास किया। इनके त्योहारों पर भी एक-दूसरे को उकसाकर धार्मिक भावनाएँ भड़काने का प्रयास किया। वे मस्जिद के सामने बाजा बजाने और ताजिए

के निकलते समय पीपल की डाल कटने पर संस्कृति खतरे में पड़ने की बात कहकर मानव संस्कृति विभाजित करने का प्रयास करते रहे।

(ख) मानव-संस्कृति के मूल में कल्याण की भावना निहित है। इस संस्कृति में अकल्याणकारी तत्वों के लिए स्थान नहीं है। समय-समय पर लोगों ने अपने कार्यों से इसका प्रमाण भी दिया; जैसे

1. भूखे व्यक्ति को लोग अपने हिस्से को भोजन खिला देते हैं।
2. बीमार बच्चे को अपनी गोद में लिए माँ सारी रात गुजार देती है।
3. कार्ल मार्क्स ने आजीवन मजदूरों के हित के लिए संघर्ष किया।
4. लेनिन ने अपनी डेस्क की ब्रेड भूखों को खिला दिया ।
5. सिद्धार्थ मानव को सुखी देखने के लिए राजा के सारे सुख छोड़कर ज्ञान प्राप्ति हेतु जंगल की ओर चले गए।

प्रश्न 7. आशय स्पष्ट कीजिए

(क) मानव की जो योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?

उत्तर- संस्कृति का कल्याण की भावना से गहरा नाता है। इसे कल्याण से अलग कर नहीं देखा जा सकता है। यह भावना मनुष्य को मानवता हेतु उपयोगी तथ्यों का आविष्कार करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसे में कोई व्यक्ति जब आत्मविनाश के साधनों की खोज करता है और उससे आत्मविनाश करता है तब यह असंस्कृति बन जाती है। ऐसी संस्कृति में जब कल्याण की भावना नहीं होती है तब वह असंस्कृति का रूप ले लेती है।

प्रश्न 8 संस्कृति और सभ्यता को परिभाषित कीजिए?

उत्तर- जिस योग्यता, क्षमता या बुद्धिमानी से, अथवा जिस स्वभाव, आदत या आचार - व्यवहार के कारण अथवा जिस प्रेरणा या उमंग के बल पर आग का व सुई-धागे का आविष्कार हुआ है, वह किसी व्यक्ति विशेष की संस्कृति कही जाती है; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, अथवा जो चीज़ उस व्यक्ति ने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की है, उसका नाम है सभ्यता। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी व्यक्ति की योग्यता, स्वभाव या आचार-व्यवहार को उसकी संस्कृति कहा जाता है और उस योग्यता, स्वभाव अथवा आचार-व्यवहार के द्वारा जो सर्व कल्याण को ध्यान में रखते हुए आविष्कार किया जाता है वह सभ्यता कहा जाता है।

भाग-2 बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1. लेखक के अनुसार न्यूटन और आधुनिक भौतिकी के विद्यार्थी की तुलना का मूल उद्देश्य क्या है?

क. आधुनिक शिक्षा की श्रेष्ठता सिद्ध करना।

ख. ज्ञान की मात्रा और संस्कृति की गुणवत्ता में अंतर स्पष्ट करना।

ग. यह बताना कि पुराना ज्ञान आधुनिक ज्ञान से अधिक उपयोगी है।

घ. वैज्ञानिक उपलब्धियों का कालानुक्रमिक अध्ययन प्रस्तुत करना।

2. निम्न में से कौन-कौन सी स्थितियाँ लेखक की दृष्टि में संस्कृति की अभिव्यक्ति मानी जाएँगी?

1. मानवता के हित में किसी नई सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना।
2. केवल पूर्वजों द्वारा प्राप्त सुविधाओं का उपभोग करना।
3. किसी नए सत्य का प्रज्ञा एवं विवेक से अन्वेषण करना।
4. व्यक्तिगत हित का त्याग कर व्यापक कल्याण के लिए कार्य करना।

(क) केवल 1 और 2 सही हैं। (ख) केवल 1, 3 और 4 सही हैं।

(ग) केवल 2, 3 और 4 सही हैं। (घ) सभी सही हैं।

3. यदि कोई राष्ट्र अत्याधुनिक हथियारों, परिवहन और संचार साधनों से सम्पन्न हो, किन्तु उसके नागरिक निरन्तर संघर्ष और हिंसा में लिप्त हों, तो लेखक के अनुसार सबसे उपयुक्त निष्कर्ष क्या होगा?

क. राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता दोनों विकसित हैं।

ख. राष्ट्र सभ्य तो है, पर उसकी संस्कृति संदिग्ध है।

ग. राष्ट्र संस्कृत है, पर सभ्य नहीं।

घ. राष्ट्र न सभ्य है, न संस्कृत।

4. लेखक ने संस्कृति और सभ्यता के संबंध को किस रूप में देखा है?

क. साधन और साध्य के रूप में। ख. कारण और परिणाम के रूप में।

ग. परंपरा और आधुनिकता के रूप में। घ. ज्ञान और शक्ति के रूप में।

5. निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?

क. संस्कृति का संबंध केवल भौतिक उपलब्धियों से है।

ख. कल्याण से विच्छिन्न संस्कृति असंस्कृति बन जाती है।

ग. सभ्यता संस्कृति का प्रत्यक्ष परिणाम है।

घ. किसी विचार की रक्षा हेतु दलबंदी संस्कृति का आवश्यक अंग है।

(क) केवल 2 और 3 सही हैं | (ख) केवल 1, 3 और 4 सही हैं |

(ग) केवल 2, 3 और 4 सही हैं | (घ) सभी सही हैं |

6. लेखक द्वारा 'कूड़ेकरकट के ढेर-' वाली संस्कृति का उल्लेख मुख्यतः किस प्रवृत्ति की आलोचना करता है?

क. वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रवृत्ति। ख. अंधानुकरण और जड़ परंपरावाद की प्रवृत्ति।

ग. औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति। घ. वैश्वीकरण की प्रवृत्ति।

7. यदि कोई व्यक्ति अनेक धार्मिक, वैज्ञानिक और सामाजिक तथ्यों का ज्ञान रखता है, परंतु स्वयं कोई नवीन दृष्टि या खोज प्रस्तुत नहीं करता, तो लेखक की कसौटी पर उसे क्या कहा जाएगा?

क. अत्यधिक संस्कृत व्यक्ति। ख. आंशिक रूप से सभ्य, पर संस्कृत नहीं।

ग. असभ्य व्यक्ति। घ. संस्कृत और सभ्य दोनों।

उत्तर 1-ख, 2-ख, 3-ख, 4ख, 5-क, 6-ख, 7-ख

भाग-3 : आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच (CCT) आधारित प्रश्न

प्रश्न-1 पाठ 'संस्कृति' में व्यक्त लेखक के विचारों के आधार पर मूल्यांकन कीजिए कि इस उपलब्धि को संस्कृति, सभ्यता, असंस्कृति अथवा असभ्यता में से किस श्रेणी में रखा जाना चाहिए? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क प्रस्तुत कीजिए।

प्रश्न-2 लेखक की संस्कृति-सभ्यता संबंधी अवधारणा के आधार पर विश्लेषण कीजिए कि वैज्ञानिक की संस्कृति और समाज की सभ्यता का मूल्यांकन अलग-अलग क्यों किया जा सकता है?

प्रश्न-3 लेखक की कसौटी पर दोनों में से अधिक 'संस्कृत' कौन है? क्या अधिक ज्ञान होना और अधिक संस्कृत होना एक ही बात है? तार्किक विवेचन कीजिए।

प्रश्न-4 लेखक के इस कथन– "जिसकी रक्षा के लिए दलबंदियों की ज़रूरत है, वह संस्कृति नहीं है" के आलोक में इस प्रवृत्ति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। क्या लेखक का दृष्टिकोण वर्तमान समाज में पूर्णतः लागू किया जा सकता है?

प्रश्न-5 यदि भविष्य में मानव जाति मंगल ग्रह पर बस जाए और वहाँ पृथ्वी की सभी भौतिक सुविधाओं, तकनीकों तथा जीवन-शैलियों को पुनः स्थापित कर दे, परंतु करुणा, मैत्रीभाव और मानव-कल्याण की भावना का अभाव हो जाए | लेखक की दृष्टि में ऐसे समाज को अत्यंत सभ्य कहा जाएगा, अत्यंत संस्कृत कहा जाएगा, दोनों कहा जाएगा अथवा कोई भी नहीं?

संकेतात्मक उत्तर बिंदु-

1. संस्कृति का मूल्य कल्याणकारी उद्देश्य से; विनाशकारी आविष्कार → असंस्कृति/ असभ्यता
2. आविष्कारक की सृजनशीलता संस्कृति हो सकती है, पर उसका विनाशकारी उपयोग असभ्यता।
3. व्यक्ति 'ब' अधिक संस्कृत; ज्ञान का संग्रह और सृजनात्मक खोज अलग बातें हैं।
4. संस्कृति गतिशील है; जड़ संरक्षण और दलबंदी लेखक के अनुसार संस्कृति विरोधी हैं |
5. तकनीकी रूप से सभ्य, पर संस्कृत नहीं; क्योंकि संस्कृति का आधार मैत्री, प्रज्ञा और कल्याण है।

भाग-4 : दक्षता आधारित प्रश्न / Competency-Based Questions

1. समस्या आधारित प्रश्न

एक विद्यालय में छात्रों को अत्याधुनिक डिजिटल उपकरण उपलब्ध करा दिए गए हैं, परंतु उनमें सहयोग, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना लगातार कम होती जा रही है।

प्रश्न- पाठ 'संस्कृति' के आधार पर विश्लेषण कीजिए कि विद्यालय ने सभ्यता के विकास पर अधिक ध्यान दिया है या संस्कृति के विकास पर। अपने उत्तर के समर्थन में दो तर्क दीजिए।

2. मूल्यांकन आधारित प्रश्न

एक वैज्ञानिक ने ऐसी तकनीक विकसित की जिससे लाखों लोगों को लाभ हुआ। बाद में उसी तकनीक का उपयोग कुछ लोगों ने निजी लाभ और शोषण के लिए करना शुरू कर दिया।

प्रश्न- **लेखक की संस्कृति और सभ्यता संबंधी अवधारणा के आधार पर वैज्ञानिक तथा समाज—दोनों का पृथक-पृथक मूल्यांकन कीजिए।**

3. निर्णय क्षमता आधारित प्रश्न

किसी समुदाय के लोग अपनी प्राचीन परंपराओं को सुरक्षित रखने के लिए नए विचारों और वैज्ञानिक खोजों का विरोध करते हैं।

प्रश्न: **पाठ में व्यक्त लेखक के विचारों के आधार पर निर्णय कीजिए कि यह प्रवृत्ति संस्कृति की रक्षा है या संस्कृति के वास्तविक स्वरूप से विचलन। अपने उत्तर को उचित ठहराइए।**

4. अनुप्रयोग आधारित प्रश्न

मान लीजिए कि आपको किसी नगर के लिए *"संस्कृत समाज निर्माण योजना"* तैयार करने का दायित्व दिया गया है।

प्रश्न: **पाठ 'संस्कृति' के मूल सिद्धांतों के आधार पर ऐसे तीन प्रमुख उपाय सुझाइए जो केवल भौतिक विकास (सभ्यता) तक सीमित न होकर वास्तविक संस्कृति के विकास को भी सुनिश्चित करें।**

पाठ एक नज़र में (त्वरित पुनरावृत्ति हेतु)

1. संस्कृति क्या है?

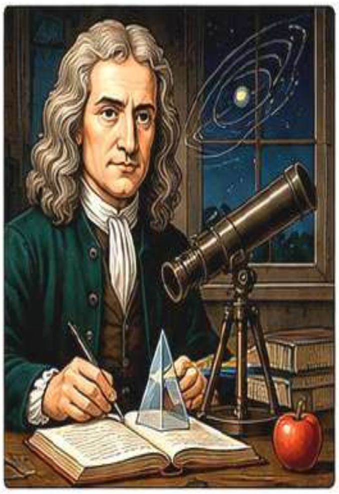

- नए सत्य एवं ज्ञान की खोज करने की क्षमता।
- प्रज्ञा, विवेक और सृजनशीलता का प्रतीक।
- मानव-कल्याण हेतु किए गए आविष्कार संस्कृति हैं।

2. सभ्यता क्या है?

- संस्कृति द्वारा निर्मित साधन और सुविधाऐं।
- रहन-सहन एवं जीवन-शैली का बाह्य रूप।
- संस्कृति का परिणाम कहलाती है।

3. संस्कृति और सभ्यता

संस्कृति	सभ्यता
• सृजन एवं खोज	• उपयोग एवं सुविधा
• कारण	• परिणाम
• आंतरिक विकास	• बाह्य विकास
• गुणवत्ता पर आधारित	• मात्रा पर आधारित

4. संस्कृति के आदर्श उदाहरण

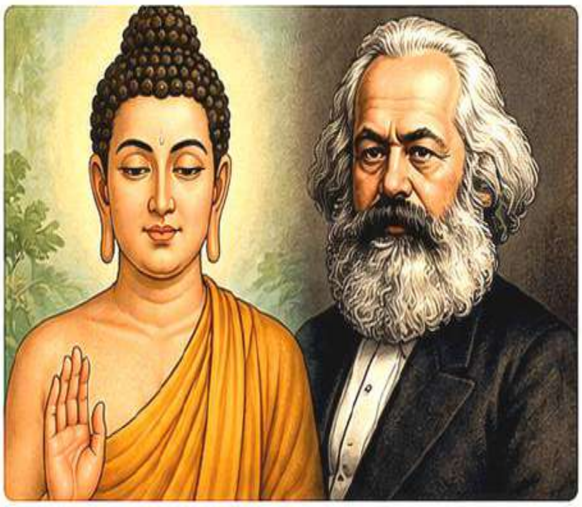

- न्यूटन — नवीन सिद्धांत के आविष्कारक।
- कार्ल मार्क्स — मजदूरों के कल्याण के लिए समर्पित।
- बुद्ध — मानव दुःख दूर करने हेतु त्याग का प्रतीक।

5. असंस्कृति और असभ्यता

- कल्याण-विहीन संस्कृति असंस्कृति बन जाती है।
- विनाशकारी आविष्कार मानवता के लिए घातक हैं।
- हिंसा, युद्ध और आत्म-विनाश असभ्यता के संकेत हैं।

6. पाठ का संदेश

- संस्कृति का आधार प्रज्ञा, मैत्री और कल्याण है।
- सच्ची संस्कृति नवीन सत्य की खोज करती हैं।
- कट्टरता, जड़ परंपराऐं और दलबंदी संस्कृति नहीं हैं।

कृतिका भाग-2 (पूरक पुस्तक)

माता का अंचल

पाठ सार-

शिवपूजन सहाय का बचपन का नाम "तारकेश्वरनाथ" था, पर घर में उन्हें "भोलानाथ" कहा जाता था। वे अपने पिता को "बाबूजी" और माता को "मइयाँ" कहते थे। उनका अधिकांश समय मित्रों के साथ खेलते तथा बाबूजी के सान्निध्य में बीतता था। बाबूजी उन्हें अपने साथ सुलाते, सुबह जगाकर स्नान कराते और पूजा-अर्चना करवाते थे। तिलक लगाते समय भोलानाथ बहुत शरारत करते, पर बाबूजी प्यार और डाँट से तिलक लगा ही देते। तिलक लगने के बाद वे इतने भोले लगते कि बाबूजी उन्हें "भोलानाथ" कहकर पुकारते थे। रामायण-पाठ के समय वे बाबूजी के पास बैठकर आईने में अपना चेहरा देखते और खुश होते। बाबूजी की नजर पड़ते ही शर्माकर आईना नीचे रख देते, जिसे देखकर बाबूजी भी मुस्कुरा देते। पूजा के बाद बाबूजी राम-नाम लिखते और कागज़ की पर्चियाँ आटे की गोलियों में रखकर गंगा में मछलियों को खिलाने जाते। भोलानाथ भी उनके कंधे पर बैठकर साथ जाते और मछलियों को गोलियाँ खिलाते थे।

माँ उन्हें बड़े प्यार से खिलाती-पिलाती और दुलार करती थी। कभी गोद में भर लेती तो कभी सरसों के तेल से मालिश करती। बालों में चोटी गूँथकर रंगीन कुर्ता-टोपी पहनाती, जिससे वे कन्हैया जैसे दिखाई देते थे। भोलानाथ अपने मित्रों के साथ तरह-तरह के खेल और नाटक करते थे। कभी चबूतरा रंगमंच बन जाता, तो कभी बाबूजी की चौकी। बच्चे मिट्टी की मिठाइयों की दुकान सजाते और खरीदार-दुकानदार बनकर खेलते। कभी घरौंदा बनाते तो कभी बारात निकालते। बाबूजी भी बच्चों के इन खेलों का आनंद लेते थे।

आम के मौसम में एक दिन तेज आँधी और बारिश आई। बारिश रुकने पर बाग में बिच्छू निकल आए, जिन्हें देखकर बच्चे भागने लगे। रास्ते में उन्हें मूसन तिवारी मिले। बैजू ने उन्हें चिढ़ाया और दूसरे बच्चे भी ऐसा करने लगे। नाराज़ होकर मूसन तिवारी ने उनकी शिकायत पाठशाला में कर दी। गुरुजी ने सभी बच्चों को पकड़कर स्कूल लाने का आदेश दिया। भोलानाथ सहित सभी को खूब मार पड़ी। यह सुनकर बाबूजी दौड़े-दौड़े आए। उन्हें देखते ही भोलानाथ उनकी गोद में चढ़कर रोने लगे। बाबूजी गुरुजी से विनती कर उन्हें घर ले आए। घर लौटते समय मित्रों को देखकर भोलानाथ फिर उनके साथ खेलने की ज़िद करने लगे। बच्चे चिड़ियाँ पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। बाद में उन्होंने एक चूहे के बिल में पानी डाला, जिससे चूहे के बजाय साँप निकल आया। साँप को देखकर सभी बच्चे भागे। भोलानाथ भी गिरते-पड़ते घर पहुँचे। उनके शरीर पर चोटें लगी थीं। घर में बाबूजी हुक्का पी रहे थे, पर डरे हुए भोलानाथ सीधे माँ की गोद में जाकर छिप गए। माँ ने उनके घावों पर पट्टी बाँधी और कारण पूछा। बाबूजी ने उन्हें गोद में लेना चाहा, पर उस समय भयभीत भोलानाथ को पिता की मजबूत बाँहों से अधिक माँ का आँचल सुरक्षित और सुकून देने वाला लगा।

पाठ्यपुस्तक आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है ?

उत्तर- यह बात सच है कि बच्चे (लेखक) को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन-पालन ही नहीं करते थे, उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परंतु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी, अत्यधिक ममता और माँ की गोदी की जरूरत थी। उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती थी, उतनी पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ याद आती है, पिता नहीं। माँ का आँचल उसे सम्पूर्ण सुरक्षा का एहसास देता है |

प्रश्न 2. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर- बालक अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रुचि लेता है। उनके साथ खेलना अच्छा लगता है। अपनी उम्र के साथ जिस रुचि से खेलता है, वह रुचि बड़ों के साथ नहीं होती है। दूसरा कारण मनोवैज्ञानिक भी है | अपने हमउम्र दोस्तों की रुचि, सोच, आवश्यकता और खुशियाँ या चिंताएँ समान होती हैं और एक दूसरे को बेहतर समझते हैं | यही कारण है कि भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है।

प्रश्न 3. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री से हमारे खेल और खेल सामग्रियों में कल्पना से अधिक अंतर आ गया है। भोलानाथ के समय में परिवार से लेकर दूर पड़ोस तक आत्मीय संबंध थे, जिससे खेलने की स्वच्छंदता थी। बाहरी घटनाओं-अपहरण आदि का भय नहीं था। खेल की सामग्रियाँ बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित थीं। घर की अनुपयोगी वस्तु ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थी, जिससे किसी प्रकार ही हानि की संभावना नहीं थी। धूल- मिट्टी से खेलने में पूर्ण आनंद की अनुभूति होती थी। न कोई रोक, न कोई डर, न किसी का निर्देशन । जो था वह सब सामूहिक बुद्धि की उपज थी।

आज भोलानाथ के समय से सर्वथा भिन्न खेल और खेल सामग्री और ऊपर से बड़ों का निर्देशन और सुरक्षा हर समय सिर पर हावी रहता है। आज खेल सामग्री स्वनिर्मित न होकर बाज़ार से खरीदी हुई होती है। खेलने की समय-सीमा भी तय कर दी जाती है। अतः स्वच्छंदता नहीं होती है। धूल-मिट्टी से बच्चों का परिचय ही नहीं होता है। बच्चे डिजिटल साधनों के प्रयोग के इतने आदी हो गए हैं कि आभासी दुनिया ही उन्हें उनका संसार लगने लगी है |

प्रश्न 4. पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों?

उत्तर- पाठ का सबसे रोमांचक प्रसंग वह है जब बच्चे बिल में पानी उलीचने लगते हैं और उस बिल में से एक साँप निकाल आता है। तब बच्चे दर के मारे गिरते-पड़ते भागते हैं और भोलानाथ माँ की गोद में छिपकर सहारा लेता है। यह प्रसंग पाठक के हृदय को भीतर तक हिला देता है। इस पाठ में गुदगुदाने वाले प्रसंग भी अनेक हैं। विशेष रूप से बच्चे के पिता का मित्रतापूर्वक बच्चों के खेल में शामिल होना मन को छू लेता है। जैसे ही बच्चे भोज, शादी या खेती का खेल खेलते हैं, बच्चे का पिता बच्चा बनकर उनमें शामिल हो जाता है। पिता का इस प्रकार बच्चा बन जाना बहुत सुखद अनुभव है जो सभी पाठकों को गुदगुदा देता है।

प्रश्न 5. इस उपन्यास के अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं।

उत्तर- आज की ग्रामीण संस्कृति को देखकर और इस उपन्यास के अंश को पढ़कर ऐसा लगता है कि कैसी अच्छी रही होगी वह समूह-संस्कृति, जो आत्मीय स्नेह और समूह में रहने का बोध कराती थी।

आज ऐसे दृश्य दिखाई नहीं देते हैं। पुरुषों की सामूहिक-कार्य प्रणाली भी समाप्त हो गई है। अतः ग्रामीण संस्कृति में आए परिवर्तन के कारण वे दृश्य नहीं दिखाई देते हैं जो तीस के दशक में रहे होंगे-

1. आज घर सिमट गए हैं। घरों के आगे चबूतरों का प्रचलन समाप्त हो गया है।
2. आज परिवारों में एकल संस्कृति ने जन्म ले लिया, जिससे समूह में बच्चे कम खेलते हैं।
3. आज बच्चों के खेलने की सामग्री और खेल बदल चुके हैं। खेल खर्चीले हो गए हैं। जो परिवार खर्च नहीं कर पाते हैं वे बच्चों को हीनभावना से बचाने के लिए समूह में जाने से रोकते हैं।-
4. आज की नई संस्कृति बच्चों को धूल मिट्टी से बचाना चाहती है।
5. घरों के बाहर पर्याप्त मैदान भी नहीं रहे, लोग स्वयं डिब्बी जैसे फ्लैटों/ घरों में रहने लगे हैं।

प्रश्न 6. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- पिता का अपने साथ शिशु को नहला-धुलाकर पूजा में बैठा लेना, माथे पर तिलक लगाना फिर कंधे पर बैठाकर गंगा तक ले जाना और लौटते समय पेड़ पर बैठाकर झूला झुलाना कितना मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है। पिता के साथ कुश्ती लड़ना, बच्चे के गालों का चुम्मा लेना, बच्चे के द्वारा मूँछे पकड़ने पर बनावटी रोना रोने का नाटक और शिशु को हँस पड़ना अत्यंत जीवंत लगता है।

माँ के द्वारा गोरस-भात, तोता-मैना आदि के नाम पर खिलाना, उबटना, शिशु का शृंगार करना और शिशु का सिसकना, बच्चों की टोली को देख सिसकना बंद कर विविध प्रकार के खेल खेलना और मूसन तिवारी को चिढ़ाना आदि अद्भुत दृश्य उकेरे गए हैं। ये सभी दृश्य बचपन की याद दिलाते हैं।

प्रश्न 7. माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर- इस पाठ के लिए 'माता का अँचल' शीर्षक उपयुक्त है। इसमें लेखक के शैशव की तीन विशेषताओं का वर्णन हुआ है-

1. बच्चे का पिता के साथ लगाव, 2. शैशव की मस्त क्रीड़ाएँ 3. माँ का वात्सल्य

'माता का अंचल' शीर्षक इनमें से केवल अंतिम विशेषता को व्यक्त करता है। अतः निम्नलिखित शीर्षक भी हो सकते हैं- 1. मेरे बचपन के दिन 2. आधी सदी पहले का बचपन

प्रश्न 8. बच्चे माता पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर -बच्चे अपने प्रेम को मुख्य रूप से इन तरीकों से व्यक्त करते हैं:

- **शारीरिक निकटता द्वारा:** माता-पिता की गोद में बैठकर, उनकी पीठ पर सवार होकर या उनके गालों को चूमकर।
- **खेलों और हंसी-मजाक से:** उनके साथ विभिन्न प्रकार के खेल खेलकर और ठहाके लगाकर।
- **बातचीत और फरमाइशों से:** माता-पिता से जिद करके, अपनी बातें मनवाकर और मिलने पर उन्हें प्यार जताकर।
- **समय बिताने के आग्रह से:** माता-पिता को अपने साथ घुमाने ले जाने या कहानियां सुनाने को कहकर।

प्रश्न 9. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

उत्तर- हमारा बचपन इस पाठ में वर्णित बचपन से पूरी तरह भिन्न है। हमें अपने पिता का ऐसा लाड़ नहीं मिला। मेरे पिता प्रायः अपने काम में व्यस्त रहते हैं। प्रायः वे रात को थककर ऑफिस से आते हैं। वे आते ही खा-पीकर सो जाते हैं। वे मुझसे प्यार-भरी कुछ बातें जरूर करते हैं। मेरे लिए मिठाई, चाकलेट, खिलौने भी ले आते हैं। कभी-कभी स्कूटर पर बिठाकर घुमा भी आते हैं, किंतु मेरे खेलों में

इस तरह रुचि नहीं लेते। वे हमें नंग-धडंग तो रहने ही नहीं देते। उन्हें मानो मुझे कपड़े से ढकने और सजाने का बेहद शौक है। मुझे बचपन में ए-एप्पल, बी-बैट सी-कैट रटाई गई। हर किसी को नमस्ते करनी सिखाई गई। दो ढाई साल की उम्र में मुझे स्कूल भेजने का प्रबंध किया गया। तीन साल के बाद मेरे जीवन से मस्ती गायब हो गई। मुझे मेरी मैडम, स्कूल-ड्रेस और स्कूल के काम की चिंता सताने लगी। तब से लेकर आज तक मैं 90% अंक लेने के चक्कर में अपनी मस्ती को अपने ही पाँवों के नीचे रौंदता चला आ रहा हूँ। मुझे हो-हुल्लड़ करने का तो कभी मौका ही नहीं मिला। शायद मेरा बचपन बुढ़ापे में आए? या शायद मैं अपने बच्चों या पोतों के साथ खेल कर सकूँ।

अतिरिक्त प्रश्न-उत्तर (आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच तथा दक्षता आधारित)

1. राम नाम लिखकर मछलियों को खिलाने की बाबूजी की परंपरा केवल धार्मिक कर्मकांड थी या उसमें सामाजिक एवं पर्यावरणीय चेतना भी निहित थी? तर्क सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह परंपरा केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं थी, बल्कि जीव-जंतुओं के प्रति करुणा और पर्यावरणीय चेतना का भी उदाहरण थी। मछलियों को भोजन कराना जीवों के प्रति दया और सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाता है। भोलानाथ अपने पिता के साथ इस कार्य में भाग लेकर प्रकृति और जीव-जगत के प्रति संवेदनशील बने। आज जब पर्यावरणीय संकट बढ़ रहा है, तब ऐसी परंपराएँ मनुष्य को प्रकृति से जोड़ने का कार्य करती हैं। इसलिए यह कर्मकांड से आगे बढ़कर मानवीय मूल्यों और पर्यावरण संरक्षण का व्यवहारिक पाठ भी था।

2. बच्चों द्वारा खेले गए नाटकों और काल्पनिक बाजारों को आधुनिक शिक्षा की 'अनुभवात्मक अधिगम' (Experiential Learning) पद्धति से कैसे जोड़ा जा सकता है?

उत्तर- बच्चों के नाटक, दुकानदारी और बारात जैसे खेल अनुभवात्मक अधिगम के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन गतिविधियों में बच्चे अभिनय, संवाद, गणना, संगठन और सामाजिक भूमिकाओं को व्यवहारिक रूप से सीखते हैं। बिना किसी औपचारिक शिक्षा के वे सहयोग, नेतृत्व, समस्या-समाधान और रचनात्मकता का विकास करते हैं। आधुनिक शिक्षा भी परियोजना-आधारित एवं गतिविधि-आधारित अधिगम पर बल देती है। भोलानाथ और उनके मित्रों के खेल यह सिद्ध करते हैं कि सीखना केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं है; जीवन के अनुभव और खेल भी शिक्षा के प्रभावी माध्यम हो सकते हैं।

3. यदि आप उस पाठशाला के गुरुजी होते, तो बच्चों की शरारत के प्रति आपका दृष्टिकोण क्या होता? क्या कठोर दंड उचित था? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- यदि मैं गुरुजी होता, तो बच्चों की गलती को स्वीकार करते हुए उन्हें दंडित करने के बजाय समझाने और सुधारने का प्रयास करता। बच्चों का व्यवहार अनुचित था, किंतु उनकी आयु और मानसिक अवस्था को देखते हुए कठोर दंड उचित नहीं कहा जा सकता। शिक्षा का उद्देश्य भय उत्पन्न करना नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण करना है। संवाद, परामर्श और सकारात्मक अनुशासन बच्चों को अपनी गलती समझने में अधिक सहायक होते हैं। इसलिए गुरुजी को बच्चों को संवेदनशीलता, सम्मान और सामाजिक व्यवहार का महत्व समझाना चाहिए था, न कि केवल शारीरिक दंड देना चाहिए था।

4. भोलानाथ के बचपन की घटनाओं के आधार पर यह सिद्ध कीजिए कि बाल्यावस्था की स्वतंत्रता और रचनात्मकता भविष्य के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती है।

उत्तर- भोलानाथ का बचपन खेल, कल्पना और स्वतंत्र गतिविधियों से भरपूर था। वे नाटक करते, दुकान सजाते, बारात निकालते और विभिन्न भूमिकाएँ निभाते थे। इन गतिविधियों ने उनकी कल्पनाशक्ति, सामाजिक कौशल और आत्मविश्वास को विकसित किया। बाल्यावस्था में मिली

स्वतंत्रता ने उनके व्यक्तित्व को खुलकर विकसित होने का अवसर दिया। आगे चलकर यही अनुभव उनकी रचनात्मक सोच और साहित्यिक प्रतिभा का आधार बने। इसलिए बच्चों को केवल नियमों में बाँधने के बजाय उनकी रचनात्मकता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे उनका समग्र विकास संभव हो सके।

5. पाठ में वर्णित पारिवारिक वातावरण को आदर्श बालपन का उदाहरण क्यों माना जा सकता है? वर्तमान समाज के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- भोलानाथ का परिवार प्रेम, अनुशासन, संस्कार और सहभागिता का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है। पिता धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा देते हैं, जबकि माँ वात्सल्य और सुरक्षा प्रदान करती हैं। दोनों बच्चे के खेलों, भावनाओं और आवश्यकताओं को समझते हैं। वर्तमान समय में जब परिवारों में संवाद और साथ बिताया गया समय कम हो रहा है, यह वातावरण अत्यंत प्रासंगिक बन जाता है। बच्चों के मानसिक और नैतिक विकास के लिए माता-पिता की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। यह पाठ बताता है कि आदर्श बाल-पालन केवल सुविधाएँ देने में नहीं, बल्कि समय, संस्कार और स्नेह देने में निहित है।

6. "भोलानाथ का बचपन भारतीय ग्रामीण संस्कृति, पारिवारिक मूल्यों और बाल मनोविज्ञान का जीवंत दस्तावेज़ है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर- यह कथन पूर्णतः उचित है। पाठ में ग्रामीण जीवन की सहजता, पारिवारिक निकटता और बच्चों की स्वाभाविक चंचलता का सजीव चित्रण मिलता है। धार्मिक अनुष्ठान, गंगा तट की गतिविधियाँ, बच्चों के पारंपरिक खेल और सामुदायिक जीवन भारतीय संस्कृति की झलक प्रस्तुत करते हैं। साथ ही, भोलानाथ की भावनाएँ, भय, शरारतें और माता-पिता के प्रति उनका लगाव बाल-मनोविज्ञान को गहराई से उद्घाटित करते हैं। यह केवल संस्मरण नहीं, बल्कि उस समय के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन और बाल-विकास की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है, जो आज भी प्रेरणादायक और प्रासंगिक है।

साना साना हाथ जोड़ि

पाठ सार-

गंगटोक पहुँचने के बाद लेखिका के सुहावने सफर की शुरुआत होती है। वह इसे "मेहनतकश बादशाहों का शहर" कहती हैं क्योंकि यहाँ के लोग कठिन परिश्रम से जीवनयापन करते हैं। तारों से भरे आकाश को देखकर वे मंत्रमुग्ध हो जाती हैं। सुबह वे एक नेपाली युवती द्वारा सिखाई गई प्रार्थना करती हैं, जिसका भाव है कि जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो। यूमथांग जाने से पहले वे कंचनजंघा देखना चाहती हैं, पर बादलों और धुंध के कारण चोटी दिखाई नहीं देती। इसके बजाय बालकनी से दिखने वाले रंग-बिरंगे फूल उन्हें आनंदित कर देते हैं।

इसके बाद वे अपनी सहेली मणि और गाइड जितेन नार्गे के साथ यूमथांग की यात्रा पर निकलती हैं। रास्ते में उन्हें बौद्ध धर्मावलंबियों की सफेद पताकाएँ दिखाई देती हैं, जिन पर मंत्र लिखे होते हैं। नार्गे बताता है कि किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर आत्मा की शांति के लिए 108 पताकाएँ लगाई जाती हैं, जबकि शुभ अवसरों पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं। वह यह भी बताता है कि "कवी लोंग स्टॉक" में फिल्म "गाइड" की शूटिंग हुई थी। आगे एक कुटिया में घूमते हुए प्रेयर व्हील को देखकर लेखिका उत्सुक होती हैं। नार्गे बताता है कि इसे घुमाने से पाप धुल जाते हैं। यह सुनकर लेखिका को अनुभव होता है कि देश की आत्मा हर स्थान पर एक जैसी है।

यात्रा के साथ पहाड़ों की ऊँचाई बढ़ती जाती है और बस्तियाँ पीछे छूटने लगती हैं। लेखिका को बदलता हुआ हिमालय, ऊँचे पर्वत, जलप्रपात और चाँदी-सी चमकती तीस्ता नदी अत्यंत आकर्षक लगती है। "सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल" पर रुककर वे जल को अंजुलि में भरती हैं और ऐसा अनुभव करती हैं मानो मन की सारी बुराइयाँ बह गई हों। यह दृश्य उनके मन और आत्मा को शांति प्रदान करता है। रास्ते में वे पहाड़ी महिलाओं को पत्थर तोड़ते हुए देखती हैं। कुछ महिलाओं की पीठ पर टोकरियों में उनके छोटे बच्चे भी बैठे होते हैं। इस दृश्य में उन्हें मातृत्व और श्रम का अद्भुत संगम दिखाई देता है। यह जानकर कि ये महिलाएँ जान जोखिम में डालकर सड़क चौड़ी करने का काम करती हैं, वे सोचने लगती हैं कि ये लोग समाज को कितना अधिक लौटाते हैं। आगे उन्हें छोटे-छोटे बच्चे दिखाई देते हैं, जो रोज़ कई किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाते हैं और घर लौटकर पशु चराने तथा लकड़ियाँ लाने में परिवार की सहायता करते हैं। शाम को वे महिलाओं को मवेशी चराकर लौटते हुए तथा चाय बागानों में युवतियों को पत्तियाँ तोड़ते हुए देखती हैं। लाचुंग क्षेत्र में लोगों की आजीविका मुख्यतः आलू, धान और शराब पर निर्भर है।

लेखिका बर्फ देखने आई थीं, पर वहाँ बर्फ नहीं दिखाई देती। एक स्थानीय युवक बताता है कि प्रदूषण के कारण अब बर्फबारी कम हो गई है और बर्फ देखने के लिए कटाओ जाना होगा, जिसे भारत का स्विट्जरलैंड कहा जाता है। कटाओ में उन्हें बर्फ से ढके पर्वत चाँदी जैसे चमकते दिखाई देते हैं। लोग वहाँ फोटो खिंचवा रहे थे, जबकि लेखिका उस सौंदर्य को अपनी आँखों में बसाना चाहती थीं। आगे उन्हें फौजी छावनियाँ दिखाई देती हैं। एक सैनिक कहता है, "आप चैन से सोते हैं क्योंकि हम यहाँ पहरा देते हैं।" यह सुनकर लेखिका के मन में सैनिकों के प्रति गहरा सम्मान जाग उठता है। आगे एक सिक्किमी युवती स्वयं को भारतीय बताती है, जिससे लेखिका को प्रसन्नता होती है कि सिक्किम के लोग भारत का हिस्सा बनकर खुश हैं।

नार्गे उन्हें गुरु नानक के पदचिह्न वाला पत्थर भी दिखाता है और उससे जुड़ी लोककथा सुनाता है। आगे खेदुम नामक स्थान पर पहुँचकर वह बताता है कि वहाँ देवी-देवताओं का निवास माना जाता है, इसलिए लोग उसे स्वच्छ रखते हैं। वह समझाता है कि पहाड़ी लोग पहाड़, नदी और झरनों को पूजनीय मानते हैं। तभी गंगटोक इतना सुंदर है। नार्गे यह भी बताता है कि "गंगटोक" का सही उच्चारण "गंतोक" है, जिसका अर्थ है "पहाड़"।

अंत में नार्गे बताता है कि भारतीय सेना के कप्तान शेखर दत्ता ने सिक्किम को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की पहल की थी। तब से नए मार्ग और पर्यटन स्थलों की खोज जारी है। लेखिका सोचती हैं कि मनुष्य की यही अनवरत खोज ही वास्तव में सौंदर्य है।

पाठ आधारित अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को कैसे सम्मोहित कर रहा था?

उत्तर- झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका के मन में सम्मोहन जगा रहा था। इस सुंदरता ने उस पर ऐसा जादू-सा कर दिया था कि उसे सब कुछ ठहरा हुआ-सा और अर्थहीन-सा लग रहा था। उसके भीतर-बाहर जैसे एक शून्य-सा व्याप्त हो गया था।

प्रश्न 2. कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उत्तर- श्वेत पताकाएँ किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर फहराई जाती हैं। किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शांति के लिए नगर से बाहर किसी वीरान स्थान पर मंत्र लिखी एक सौ आठ

पताकाएँ फहराई जाती हैं, जिन्हें उतारा नहीं जाता। वे धीरे-धीरे अपने-आप नष्ट हो जाती हैं।किसी शुभ कार्य को आरंभ करने पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

प्रश्न 3. जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में क्या महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं, लिखिए।

उत्तर- जितेन ने लेखिका को एक अच्छे गाइड की तरह सिक्किम की मनोहारी प्राकृतिक छटा, सिक्किम की भौगोलिक स्थिति और वहाँ के जनजीवन की जानकारियाँ इस प्रकार दीं-

1. सिक्किम में गंतोक से लेकर यूमथांग तक तरह-तरह के फूल हैं। फूलों से लदी वादियाँ हैं।
2. शांत और अहिंसा के मंत्र लिखी ये श्वेत पताकाएँ जब यहाँ किसी बुद्ध के अनुयायी की मौत होती है तो लगाई जाती हैं। ये 108 होती हैं।
3. रंगीन पताकाएँ किस नए कार्य के शुरू होने पर लगाई जाती हैं।
4. कवी-लोंग-स्टॉक-यहाँ 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई थी।
5. यह धर्मचक्र है अर्थात् प्रेअर व्हील। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।
6. यह पहाड़ी इलाका है। यहाँ कोई भी चिकना-चर्बीला आदमी नहीं मिलता है।
7. नार्गे ने उत्साहित होकर 'कटाओ' के बारे में बताया कि 'कटाओ हिंदुस्तान का स्विट्जरलैंड है।"

प्रश्न 4. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर- लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्म-चक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है। मैदानी क्षेत्रों में गंगा के विषय में भी ऐसी ही धारणा है। उसे लगा कि पूरे भारत की आत्मा एक-सी है। सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद उनकी आस्थाएँ, विश्वास, अंध-विश्वास और पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक-सी हैं।

प्रश्न 5. जितने नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

उत्तर- जितेन नार्गे लेखिका का ड्राइवर कम गाइड था। वह नेपाल से कुछ दिन पहले आया था जिसे नेपाल और सिक्किम की अच्छी जानकारी थी। क्षेत्र-से सुपरिचित था। वह ड्राइवर के साथ-साथ गाइड का कार्य कर रहा था। उसमें प्रायः गाइड के वे सभी गुण विद्यमान थे जो अपेक्षित होते हैं-

1. एक कुशल गाईड में उस स्थान की भौगोलिक, प्राकृतिक और सामाजिक जानकारी होनी चाहिए, वह नार्गे में सम्यक रूप से थी।
2. गाइड में सैलानियों को प्रभावित करने की रोचक शैली होनी चाहिए जो उसमें थी। वह अपनी वाक्पटुता से लेखिका को प्रभावित करता था; जैसे-"मैडम, यह धर्म चक्र है-प्रेअर व्हील, इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।"
3. एक सुयोग्य गाइड क्षेत्र के जन-जीवन की गतिविधियों की भी जानकारी रखता है और संवेदनशील भी होता है।
4. वह पर्यटकों में इतना घुल-मिल जाता है कि स्वयं गाने के साथ नाच उठता है और सैलानी भी नाच उठते हैं। इस तरह आत्मीय संबंध बना लेता है।
5. कुशल गाइड वाक्पटु होता है। वह अपनी वाक्पटुता से पर्यटन स्थलों के प्रति जिज्ञासा बनाए रखता है। पताकाओं के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देकर नार्गे उस स्थान के महत्व को बढ़ा देता है।

प्रश्न 6. इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका ने हिमालय के जिन-जिन रूपों का चित्र खींचा है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका ने हिमालय के पल-पल परिवर्तित होते रूप को देखा। ज्यों-ज्यों ऊँचाई पर चढ़ते जाएँ हिमालय विशाल से विशालतर होता चला जाता है। छोटी-छोटी पहाड़ियाँ विशाल पर्वतों में बदलने लगती हैं। घाटियाँ गहराती-गहराती पाताल नापने लगती हैं। वादियाँ चौड़ी होने लगती हैं, जिनके बीच रंग-बिरंगे फूल मुसकराते हुए नज़र आते हैं। चारों ओर प्राकृतिक सुषमा बिखरी नज़र आती है। जल-प्रपात जलधारा बनकर पत्थरों के बीच बलखाती-सी निकलती है। तो मन को मोह लेती है। हिमालय कहीं हरियाली के कारण चटक हरे रंग की मोटी चादर-सा नजर आता है, कहीं पीलापन लिए नज़र आता है। कहीं पलास्टर उखड़ी दीवार की तरह पथरीला नजर आता है।

प्रश्न 7. प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है?

उत्तर- लेखिका प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर एकदम मौन, किसी ऋषि की तरह शांत होकर वह सारे परिदृश्य को अपने भीतर समेट लेना चाहती थी। वह रोमांचित थी, पुलकित थी। उसे आदिम युग की अभिशप्त राजकुमारी-सी नीचे बिखरे भारी-भरकम पत्थरों पर झरने के संगीत के साथ आत्मा का संगीत सुनने जैसा आभास हो रहा था। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे देश और काल की सरहदों से दूर बहती धारा बन बहने लगी हो। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गई हों। उसका मन हुआ कि अनंत समय तक ऐसे ही बहती रहे और इस झरने की पुकार सुनती रहे।

प्रश्न 8. प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौन से दृश्य झकझोर गए?

उत्तर- प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को सड़क बनाने के लिए पत्थर तोड़ती, सुंदर कोमलांगी पहाड़ी औरतों का दृश्य झकझोर गया। उसने देखा कि उस अद्वितीय सौंदर्य से निरपेक्ष कुछ पहाडी औरतें पत्थरों पर बैठी पत्थर तोड़ रही थीं। उनके हाथों में कुदाल और हथौड़े थे और कइयों की पीठ पर डोको (बड़ी टोकरी) में उनके बच्चे भी बँधे थे। यह विचार उसके मन को बार-बार झकझोर रहीं था कि नदी, फूलों, वादियों और झरनों के ऐसे स्वर्गिक सौंदर्य के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिजीविषा के बीच जंग जारी है।

प्रश्न 9. सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख करें।

उत्तर- सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में निम्न लोगों का योगदान, सराहनीय होता है-

1. वे सरकारी लोग जो व्यवस्था में संलग्न होते हैं।
2. वहाँ के स्थानीय गाइड जो उस क्षेत्र की सर्वथा जानकारी रखते हैं।
3. वहाँ के स्थानीय लोग जो सैलानियों के साथ रुचि से बातें करते हैं।
4. वे सहयोगी यात्री जो यात्रा में मस्ती भरा माहौल बनाए रखते हैं और कभी निराश नहीं होते हैं। उत्साह से भरपूर होते हैं।

प्रश्न 10. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है। इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए।

उत्तर- प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने के क्रम में आज पहाड़ों पर प्रकृति की शोभा को नष्ट किया जा रहा है। वृक्षों को काटकर पर्वतों को नंगा किया जा रहा है। शुद्ध, पवित्र नदियों को विविध प्रकार से

प्रदूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। नगरों का, फैक्टरियों का गंदा पानी पवित्र नदियों में छोड़ा जा रहा है। सुख-सुविधा के नाम पर पॉलिथिन का अधिक प्रयोग और वाहनों के द्वारा प्रतिदिन छोड़ा धुंआ पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ रहा है। इस तरह प्रकृति का गुस्सा बढ़ रहा है, मौसम में परिवर्तन आ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं।

प्रकृति के साथ खिलवाड़ को रोकने में हम निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. वर्तमान में खड़े वृक्षों को न काटें और न काटने दें।
2. यथासंभव वृक्षारोपण करें और दूसरों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।
3. सब्ज़ी लाने और व्यर्थ सड़कों पर घूमने के लिए वाहनों का उपयोग न करें।
4. पॉलीथिन, अवशिष्ट पदार्थों तथा नालियों के गंदे पानी को नदियों में न जाने दें।

प्रश्न 11. प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

उत्तर- प्रकृति ने जल-संचय की बड़ी अद्भुत व्यवस्था की है। प्रकृति सर्दियों में पर्वत शिखरों पर बर्फ के रूप में गिरकर जल का भंडारण करती है। हिम-मंडित पर्वत-शिखर एक प्रकार के जल-स्तंभ हैं, जो गर्मियों में जलधारा बनकर करोड़ों कंठों की प्यास बुझाते हैं। नदियों के रूप में बहती यह जलधारा अपने किनारे बसे नगर-गाँवों में जल-संसाधन के रूप में तथा नहरों के द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में सिंचाई करती हैं और अंततः सागर में जाकर मिल जाती हैं। सागर से जलवाष्प बादल के रूप में उड़ते हैं, जो मैदानी क्षेत्रों में वर्षा तथा पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फ के रूप में बरसते हैं। इस प्रकार 'जल-चक्र' द्वारा प्रकृति ने जल-संचयन तथा वितरण की व्यवस्था की है।

अतिरिक्त प्रश्न-उत्तर (आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच तथा दक्षता आधारित)

1. लेखिका ने गैंगटॉक को क्यों कहा "मेहनतकश बादशाहों का शहर"? यदि किसी समाज की प्रगति केवल प्राकृतिक संसाधनों पर नहीं बल्कि मानव श्रम पर निर्भर हो, तो उसके विकास की दिशा किस प्रकार प्रभावित होगी?

उत्तर- लेखिका ने गैंगटॉक को "मेहनतकश बादशाहों का शहर" इसलिए कहा क्योंकि वहाँ के लोग कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में भी अथक परिश्रम करके जीवनयापन करते हैं। पहाड़ी महिलाएँ पत्थर तोड़ती हैं, बच्चे लंबी दूरी तय कर शिक्षा प्राप्त करते हैं और लोग सीमित संसाधनों में भी आत्मनिर्भर रहते हैं। यह दर्शाता है कि किसी समाज की वास्तविक शक्ति उसके श्रमशील नागरिक होते हैं। यदि विकास का आधार श्रम, अनुशासन और समर्पण हो तो समाज आत्मनिर्भर, सुदृढ़ और सतत विकास की ओर अग्रसर होता है। गैंगटॉक इसका उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

2. प्रेयर व्हील, बौद्ध पताकाएँ और गुरु नानक से जुड़ी मान्यताओं के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि भारत की सांस्कृतिक एकता विविध धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से किस प्रकार अभिव्यक्त होती है।

उत्तर- यात्रा के दौरान लेखिका ने बौद्ध धर्म की पताकाएँ, प्रेयर व्हील तथा गुरु नानक से जुड़ी लोकमान्यताओं को देखा। यद्यपि इनके धार्मिक स्वरूप भिन्न हैं, किंतु इनका मूल संदेश शांति, आस्था, मानवता और सद्भाव है। लेखिका को यह अनुभव हुआ कि चाहे पहाड़ हों या मैदान, भारत की आत्मा एक है। विविध धार्मिक परंपराएँ यहाँ विभाजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक समृद्धि का आधार बनती हैं। यह भारत की "अनेकता में एकता" की भावना को सशक्त बनाती हैं और नागरिकों में परस्पर सम्मान एवं सहिष्णुता का विकास करती हैं।

3. सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल के जल को अंजुलि में भरते समय लेखिका ने अपनी बुराइयों को बहा देने का अनुभव किया। इस प्रसंग के आधार पर प्रकृति और मानवषण कीजिए।मन के संबंध का विश्ले-

उत्तर- सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल का निर्मल जल लेखिका के लिए केवल प्राकृतिक दृश्य नहीं था, बल्कि आत्मशुद्धि का माध्यम बन गया। प्रकृति का सौंदर्य मनुष्य के मन को शांति, सकारात्मकता और आत्ममंथन की प्रेरणा देता है। झरनों, पर्वतों और नदियों के बीच व्यक्ति अपनी चिंताओं और विकारों से मुक्त होने का अनुभव करता है। यह प्रसंग दर्शाता है कि प्रकृति केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत भी है। इसलिए प्रकृति के संरक्षण का संबंध केवल पर्यावरण से नहीं, बल्कि मानव कल्याण से भी जुड़ा है।

4. पहाड़ी महिलाओं के श्रम और मातृत्व को देखकर लेखिका ने "मातृत्व साधना और श्रम साधना" का मिश्रित रूप देखा। वर्तमान समाज में महिलाओं की भूमिका के संदर्भ में इस कथन का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर- लेखिका ने देखा कि महिलाएँ कठिन श्रम करते हुए अपनी पीठ पर बच्चों को भी संभाल रही थीं। यह दृश्य उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का प्रतीक है। वे परिवार की संरक्षक होने के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों में भी सक्रिय योगदान देती हैं। वर्तमान समाज में भी महिलाएँ घर और कार्यस्थल दोनों की जिम्मेदारियाँ निभाती हैं। यह कथन महिलाओं की सहनशीलता, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा और संघर्षशीलता को रेखांकित करता है। अतः समाज को महिलाओं के योगदान का सम्मान करते हुए उन्हें समान अवसर और सुरक्षित कार्य-परिस्थितियाँ उपलब्ध करानी चाहिए।

5. स्थानीय युवक द्वारा बर्फबारी में कमी का कारण प्रदूषण बताया गया। यदि यह स्थिति लगातार बनी रही तो हिमालयी क्षेत्रों तथा मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर- प्रदूषण के कारण बर्फबारी में कमी जलवायु परिवर्तन का गंभीर संकेत है। यदि यह स्थिति बनी रही तो हिमालयी हिमनद तेजी से पिघलेंगे, जिससे नदियों के प्रवाह और जल-संसाधनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। जैव-विविधता, कृषि और पर्यटन उद्योग भी प्रभावित होंगे। प्राकृतिक आपदाओं की संभावना बढ़ सकती है। इसके अतिरिक्त स्थानीय लोगों की आजीविका संकट में पड़ सकती है। यह प्रसंग हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करता है और बताता है कि विकास तथा प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखना मानव अस्तित्व के लिए अनिवार्य है।

6. फौजी के कथन–"आप चैन से इसीलिए सोते हैं क्योंकि हम यहाँ पहरा देते हैं"–का राष्ट्रीय जीवन और नागरिक उत्तरदायित्व के संदर्भ में विश्लेषण कीजिए।

उत्तर- फौजी का यह कथन राष्ट्र सुरक्षा के महत्व को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करता है। सैनिक कठिन परिस्थितियों में अपनी जान जोखिम में डालकर देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं, जिससे नागरिक सुरक्षित जीवन जी पाते हैं। यह कथन हमें यह भी सिखाता है कि प्रत्येक अधिकार के पीछे किसी न किसी का त्याग और कर्तव्य निहित होता है। इसलिए नागरिकों का भी दायित्व है कि वे राष्ट्रहित, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करें। सैनिकों का सम्मान केवल शब्दों से नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक बनकर किया जा सकता है।

7. सिक्किमी युवती द्वारा स्वयं को "सिक्किमी" के बजाय "इंडियन" कहना राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को किस प्रकार व्यक्त करता है? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- सिक्किमी युवती का उत्तर उसकी व्यापक राष्ट्रीय पहचान और भारत के प्रति आत्मीयता को दर्शाता है। उसने क्षेत्रीय पहचान से ऊपर उठकर स्वयं को भारतीय कहा, जो राष्ट्रीय एकता की सशक्त

अभिव्यक्ति है। यह दर्शाता है कि विविध भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं के बावजूद भारतीय नागरिक स्वयं को एक राष्ट्र का अंग मानते हैं। यह भावना देश की अखंडता और सामाजिक समरसता को मजबूत बनाती है। आज के समय में जब क्षेत्रीयता और संकीर्ण सोच कई बार सामने आती है, तब यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय एकीकरण का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

8. "इंसान की इसी असमाप्त खोज का नाम ही तो सौंदर्य है।" इस कथन के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि सौंदर्य केवल प्रकृति में है या मानव की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति में भी निहित है।

उत्तर- यह कथन सौंदर्य की व्यापक अवधारणा को प्रस्तुत करता है। सौंदर्य केवल पर्वतों, झरनों और प्राकृतिक दृश्यों में ही नहीं, बल्कि उन्हें खोजने और समझने की मानव की जिज्ञासा में भी निहित है। सिक्किम को पर्यटन स्थल बनाने, नए मार्ग खोजने और प्रकृति के रहस्यों को जानने का प्रयास मानव की खोजी प्रवृत्ति का परिणाम है। यही जिज्ञासा सभ्यता और ज्ञान के विकास का आधार बनती है। अतः वास्तविक सौंदर्य प्रकृति और मानव-चेतना के समन्वय में निहित है, जहाँ खोज, अनुभव और सृजन एक साथ कार्य करते हैं।

पाठ एक नज़र में(त्वरित पुनरावृत्ति हेतु)

मैं क्यों लिखता हूँ

पाठ सार-

'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक ने अपने लिखने के कारणों के साथ-साथ एक लेखक के प्रेरणा-स्रोतों पर भी प्रकाश डाला है। लेखक के अनुसार लिखे बिना लिखने के कारणों को नहीं जाना जा सकता। वह अपनी आंतरिक व्याकुलता से मुक्ति पाने तथा तटस्थ होकर उसे देखने और पहचानने के लिए लिखता है। प्रायः प्रत्येक रचनाकार की आत्मानुभूति ही उसे लेखन कार्य के लिए प्रेरित करती है, किंतु कुछ बाहरी दबाव भी होते हैं। ये बाहरी दबाव भी कई बार रचनाकार को लिखने के लिए बाध्य करते हैं। इन बाहरी दबावों में संपादकों का आग्रह, प्रकाशक का तकाज़ा तथा आर्थिक आवश्यकता आदि प्रमुख हैं। लेखक का मत है कि वह बाहरी दबावों से कम प्रभावित होता है। उसे तो उसकी भीतरी विवशता ही लिखने की ओर प्रेरित करती है। उसका मानना है कि प्रत्यक्ष अनुभव से अनुभूति गहरी चीज है।

एक रचनाकार को अनुभव सामने घटित घटना को देखकर होता है, किंतु अनुभूति संवेदना और कल्पना के द्वारा उस सत्य को भी ग्रहण कर लेती है जो रचनाकार के सामने घटित नहीं हुआ। फिर वह सत्य आत्मा के सामने ज्वलंत प्रकाश में आ जाता है और रचनाकार उसका वर्णन करता है। लेखक बताता है कि उसके द्वारा लिखी 'हिरोशिमा' नामक कविता भी ऐसी ही है। एक बार जब वह जापान गया, तो वहाँ हिरोशिमा में उसने देखा कि एक पत्थर बुरी तरह झुलसा हुआ है और उस पर एक व्यक्ति की लंबी उजली छाया है। विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण उसे रेडियोधर्मी प्रभावों की जानकारी थी। उसे देखकर उसने अनुमान लगाया कि जब हिरोशिमा पर अणु-बम गिराया गया होगा, तो उस समय वह व्यक्ति इस पत्थर के पास खड़ा होगा। अणु-बम के प्रभाव से वह भाप बनकर उड़ गया, किंतु उसकी छाया उस पत्थर पर ही रह गई। लेखक को उस झुलसे हुए पत्थर ने झकझोर कर रख दिया। वह हिरोशिमा पर गिराए गए अणु-बम की भयानकता की कल्पना करके बहुत दुखी हुआ। उस समय उसे ऐसे लगा, मानो वह उस दु:खद घटना के समय वहाँ मौजूद रहा हो। इस त्रासदी से उसके भीतर जो व्याकुलता पैदा हुई, उसी का परिणाम उसके द्वारा हिरोशिमा पर लिखी कविता थी। लेखक कहता है कि यह कविता 'हिरोशिमा' जैसी भी हो, वह उसकी अनुभूति से पैदा हुई थी। यही उसके लिए महत्त्वपूर्ण था।

पाठ आधारित अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?

उत्तर- लेखक की मान्यता है कि सच्चा लेखन भीतरी विवशता से पैदा होता है। यह विवशता मन के अंदर से उपजी अनुभूति से जागती है, बाहर की घटनाओं को देखकर नहीं जागती। जब तक कवि का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदित नहीं होता और उसमें अभिव्यक्त होने की पीड़ा नहीं अकुलाती, तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता।

प्रश्न 2. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर- लेखक हिरोशिमा के बम विस्फोट के परिणामों को अखबारों में पढ़ चुका था। जापान जाकर उसने हिरोशिमा के अस्पतालों में आहत लोगों को भी देखा था। अणु-बम के प्रभाव को प्रत्यक्ष देखा था, और देखकर भी अनुभूति न हुई इसलिए भोक्ता नहीं बन सका। फिर एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए

एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया देखी। उसे देखकर विज्ञान का छात्र रहा लेखक सोचने लगा कि विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणें उसमें रुद्ध हो गई होंगी और जो आसपास से आगे बढ़ गईं पत्थर को झुलसा दिया, अवरुद्ध किरणों ने आदमी को भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इस प्रकार समूची ट्रेजडी जैसे पत्थर पर लिखी गई है।इस प्रकार लेखक हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया।

प्रश्न 3. मैं क्यों लिखता हूँ? के आधार पर बताइए कि-

1. **लेखक को कौन-सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं?**
2. **किसी रचनाकार के प्रेरणा स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?**

उत्तर- लेखक को यह जानने की प्रेरणा लिखने के लिए प्रेरित करती है कि वह आखिर लिखता क्यों है। यह उसकी पहली प्रेरणा है। स्पष्ट रूप से समझना हो तो लेखक दो कारणों से लिखता है-

1. भीतरी विवशता से। कभी-कभी कवि के मन में ऐसी अनुभूति जाग उठती है कि वह उसे अभिव्यक्त करने के लिए व्याकुल हो उठता है।
2. कभी-कभी वह संपादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजों से तथा आर्थिक लाभ के लिए भी लिखता है। परंतु दूसरा कारण उसके लिए जरूरी नहीं है। पहला कारण अर्थात् मन की व्याकुलता ही उसके लेखन का मूल कारण बनती है।

प्रश्न 4. कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दबाव कौन-कौन से हो सकते हैं?

उत्तर- कुछ रचनाकारों की रचनाओं में स्वयं की अनुभूति से उत्पन्न विचार होते हैं और कुछ अनुभवों से प्राप्त विचारों को लिखा जाता है। इसके साथ ऐसे कारण (बाह्य दबाव) भी उपस्थित हो जाते हैं जिससे लेखक लिखने के लिए प्रेरित हो उठता है। ये बाह्य-दबाव हैं-

1. सामाजिक परिस्थितियाँ, 2. आर्थिक लाभ की आकांक्षा, 3. प्रकाशकों और संपादकों का पुनः-पुनः का आग्रह, 4. विशिष्ट के पक्ष में विचारों को प्रस्तुत करने का दबाव

कलाकार अपने दर्शकों, आयोजकों, श्रोताओं की माँग पर कला-प्रदर्शन करते हैं। कई उम्रदराज अभिनेताओं को बड़े-बड़े निर्माता-निर्देशक अभिनय करने का आग्रह न करें तो शायद अब वे आराम करना चाहें। इसी प्रकार कई गायक व गायिकाएँ भी 50 वर्ष से गाते-गाते थक चुकी होंगी, अब फिल्म-निर्माता, संगीतकार और प्रशंसक ही उन्हें गाने के लिए बाध्य करते होंगे।

प्रश्न 5. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है, यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर- हिरोशिमा पर लिखी कविता हृदय की अनुभूति प्रस्फुटित होती हुई भावों और शब्दों में जीवंत हो उठी है। कवि ने हिरोशिमा के भयंकर रूप को देखा था, आहत लोगों को देखा था। उसे देखकर लेखक के मन में उनके प्रति सहानुभूति तो उत्पन्न हुई होगी। किंतु उनकी व्यक्तिगत त्रासदी नहीं बनी। जब पत्थर पर मनुष्य की काली छाया को देखा तो उन्हें अपने हृदय से अणु-बम के विस्फोट का प्रतिरूप त्रासदी बनकर मन में समाने लगा। वही त्रासदी जीवंत होकर कविता में परिवर्तित हो गई। इस तरह हिरोशिमा पर लिखी कविता अंतः दबाव का परिणाम थी।

बाह्य दबाव मात्र इतना हो सकता कि जापान से लौटने पर लेखक ने अभी तक कुछ नहीं लिखा? वह इससे प्रभावित हुआ होगा और कविता लिख दी होगी।

अतिरिक्त प्रश्न उत्तर (आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच तथा दक्षता आधारित)

प्रश्न 1. अज्ञेय के अनुसार लेखन केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मसाक्षात्कार और मुक्ति का साधन भी है। यदि किसी व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता न-आत्ममिले, तो उसके व्यक्तित्व तथा समाज पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर- अज्ञेय के अनुसार लेखन व्यक्ति के भीतर जमा अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों को मुक्त करने का माध्यम है। यदि किसी व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता न मिले, तो उसके भीतर कुंठा, तनाव और असंतोष उत्पन्न हो सकता है। इससे उसकी रचनात्मकता बाधित होती है और व्यक्तित्व का संतुलित विकास नहीं हो पाता। समाज भी नए विचारों और रचनात्मक विमर्श से वंचित रह जाता है। अज्ञेय मानते हैं कि लेखन आत्मतुष्टि नहीं-, बल्कि आत्ममुक्ति का साधन है। इसलिए स्वतंत्र -अभिव्यक्ति व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए अनिवार्य है।

2. पाठ में लेखक ने लेखन को अपने अस्तित्व की पहचान से जोड़ा है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के युग में मनुष्य की रचनात्मकता को चुनौती मिलने लगे, तो अज्ञेय के विचार किस प्रकार प्रासंगिक सिद्ध होंगे?

उत्तर- अज्ञेय के अनुसार लेखन का मूल स्रोत मनुष्य की संवेदना, अनुभव और आत्मानुभूति है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता सूचनाएँ और भाषा प्रस्तुत कर सकती है, परंतु वह मानवीय अनुभूतियों की गहराई का पूर्ण विकल्प नहीं बन सकती। लेखक का लेखन उसके जीवनसंघर्ष-, भावनाओं और सामाजिक अनुभवों से जन्म लेता है। AI के युग में भी मनुष्य की मौलिक सोच, संवेदनशीलता और आत्म अभिव्यक्ति क-
कि रचनात्मकता का वास्तविक आधार महत्व बना रहेगा। अज्ञेय के विचार हमें यह समझाते हैं मानवीय चेतना है, जिसे कोई तकनीक पूरी तरह प्रतिस्थापित नहीं कर सकती।

3. अज्ञेय मानते हैं कि लेखक का दायित्व केवल स्वयं तक सीमित नहीं होता। वर्तमान समय में सोशल मीडिया पर विचार व्यक्त करने वालों के संदर्भ में लेखक की इस अवधारणा का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर- अज्ञेय के अनुसार लेखक समाज के प्रति उत्तरदायी होता है और उसकी अभिव्यक्ति का उद्देश्य व्यापक मानवीय हित होना चाहिए। आज सोशल मीडिया पर लाखों लोग अपने विचार व्यक्त करते हैं, किंतु अनेक बार तथ्यहीन या भ्रामक सूचनाएँ भी प्रसारित होती हैं। ऐसे में अज्ञेय की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ सत्यनिष्ठा, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व भी आवश्यक हैं। लेखक या विचार्रेषक को यह समझना चाहिए कि उसके
ग सकारात्मक परिवर्तन के लिए शब्द समाज को प्रभावित करते हैं। इसलिए अभिव्यक्ति का उपयो होना चाहिए।

4. "लेखन आत्म संतोष-नहीं, आत्ममुक्ति है।-" इस कथन की व्याख्या करते हुए बताइए कि कठिन परिस्थितियों में लेखन व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को किस प्रकार सुदृढ़ बना सकता है।

उत्तर- अज्ञेय का मानना है कि लेखन व्यक्ति के भीतर के दबाव, पीड़ा, संघर्ष और अनुभवों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। जब व्यक्ति अपनी भावनाओं को शब्द देता है, तो उसका मानसिक बोझ कम होता है और उसे आत्मिक शांति प्राप्त होती है। कठिन परिस्थितियों में लेखन आत्म-
चनात्मक मनोविज्ञान भी डायरी लेखन और र समझ का अवसर देता है। आधुनिक-विश्लेषण और आत्म
लेखन को मानसिक स्वास्थके लिए उपयोगी मानता है। इस प्रकार लेखन केवल साहित्य सृजन नहीं, बल्कि आत्मिक संतुलन और मानसिक दृढ़ता प्राप्त करने का प्रभावी साधन भी है।

पाठ एक नज़र में (त्वरित पुनरावृत्ति हेतु)

1. लेखन का उद्देश्य

- लेखन आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम है।
- मन के भावों को मुक्त करने का साधन है।
- लेखन आत्म-मुक्ति का मार्ग है।

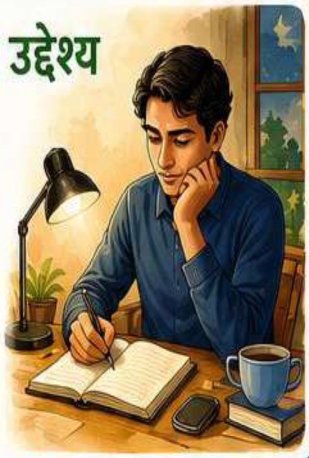

5. रचनात्मकता का महत्व

- लेखन मौलिक चिंतन को बढ़ाता है।
- कल्पनाशक्ति का विकास करता है।
- नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

2. लेखक की आंतरिक प्रेरणा

- लेखन किसी बाहरी दबाव का परिणम नहीं।
- भीतर के अनुभव लेखन को जन्म देते हैं।
- संवेदनाएँ रचना का आधार बनती हैं।

6. साहित्य और जीवन

- साहित्य जीवन के अनुभवों से जन्म लेता है।
- लेखक अपने युग का प्रतिनिधि होता है।
- लेखन जीवन की सच्चाइयों को व्यक्त करता है।

3. आत्म-मुक्ति का माध्यम

- लिखकर मन का बोझ हल्का होता है।
- विचारों को दिशा मिलती है।
- व्यक्ति स्वयं को बेहतर समझ पाता है।

7. लेखन और आत्म-खोज

- लेखन स्वयं को जानने की प्रक्रिया है।
- व्यक्ति अपने विचारों का विश्लेषण करता है।
- आत्म-विकास का अवसर मिलता है।

4. समाज के प्रति दायित्व

- लेखक समाज से जुड़ा होता है।
- लेखन सामाजिक चेतना जगाता है।
- साहित्य मानवता की सेवा करता है।

8. अज्ञेय का लेखन-दर्शन

- लेखन आत्म-संतोष नहीं, आत्म-मुक्ति है।
- लेखक सत्य की खोज करता है।
- रचना व्यक्ति और समाज दोनों को समृद्ध बनाती है।

खंड-घ (रचनात्मक लेखन)

अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद लेखन के समय ध्यान देने योग्य बातें-

1. अनुच्छेद सामान्यत: 100-120 शब्दों में लिखा जाना चाहिए।
2. अनुच्छेद में मुख्य विषय पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।
3. अनुच्छेद में विषय की प्रस्तुति प्रभावपूर्ण होनी चाहिए।
4. अनुच्छेद में भाषा की शुद्धता तथा शब्दों के चयन पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।
5. अनुच्छेद में विषय के सभी प्रमुख बिन्दुओं का समावेश किया जाना चाहिए।

अनुच्छेद लेखन के उदाहरण

मातृभाषा के प्रति अभिरुचि

संकेत बिंदु - मातृभाषा से तात्पर्य, घटती रुचि के कारण, रुचि कैसे बढ़े, मातृभाषा अपनाइए, देश का सम्मान बढ़ाइए।

जन्म लेने के बाद मानव जो प्रथम भाषा सीखता है, उसे उसकी मातृभाषा कहते हैं। जिस भाषा में माँ बोलती है, विचार करती है वही उस बच्चे की मातृभाषा होगी। मातृभाषा शिशु की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होती है। सभी संस्कार एवं व्यवहार हम इसी के माध्यम से प्राप्त करते हैं। इसी भाषा के माध्यम से हम अपनी संस्कृति से जुड़कर उसे आगे बढ़ाते हैं। आज मातृभाषा के प्रति हमारी अभिरुचि घटती जा रही है। हम अपनी मातृभाषा से दूर होते जा रहे हैं। अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव, शहरीकरण, आदि इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं। यह सत्य है कि हम जितनी अधिक भाषाएँ सीखेंगे, अपनी सांस्कृतिक धरोहर से दूरी बना लें। हम जिस राज्य या प्रान्त से हैं वहाँ की बोली हमें अवश्य आनी चाहिए। आज हम अपनी भाषा के सुंदर लोकगीत, दोहे और छंद भूलते जा रहे हैं। परिवारों में मातृभाषा का प्रयोग मातृभाषा के प्रति रुचि उत्पन्न कर सकता है। हम सोशल मीडिया व डिजिटल मंचों पर भी मातृभाषा का प्रयोग कर सकते हैं। हमें अपनी भारतीय संस्कृति की अनूठी विशेषता विविधता में एकता को चरितार्थ करते हुए अपनी सांस्कृतिक धरोहर, अपनी मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए। उसे सहेजकर रखना चाहिए। **महात्मा गांधी जी ने भी कहा था कि "मातृभाषा यदि शिक्षा का माध्यम नहीं होगी तो बच्चे रटने को मजबूर हो जाएँगे जिससे उनकी सृजनात्मकता समाप्त हो जाएगी।"**

मातृभाषा के महत्त्व को समझते हुए 17 नवम्बर 1999 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने की स्वीकृति दी थी। इसी कारण विश्वभर में 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है। हमें भी इसके संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास करना चाहिए।

***

साइबर युग : सावधानियाँ एवं सुरक्षा उपाय

साइबर युग में सावधानी है जरूरी
साइबर अपराधियों की मंशा ना होने दें पूरी

संकेत बिंदु- बढ़ते ऑनलाइन कार्य, साइबर ठगी की बढ़ती घटनाएँ, सावधानियाँ, इससे बचने के उपाय

कंप्यूटर या इंटरनेट का उपयोग करके किये गए अपराध साइबर अपराध की श्रेणी में आते हैं। तकनीकी प्रगति के साथ कंप्यूटर और इंटरनेट का प्रयोग बढ़ता गया। आजकल सामाजिक नेट्वर्किंग, ऑनलाइन खरीद, जानकारी प्राप्त करना, गेम खेलना, ऑनलाइन पढ़ाई और नौकरियों की तलाश करना आदि के अत्यधिक प्रयोग के साथ साइबर अपराध भी तेज़ी से बढ़ रहे हैं | इसमें शामिल लोगों को हैकर के नाम से जाना जाता है ।आजकल कुछ ऐसी वेबसाइट बनाई गई है, जहाँ पर कुछ लालच देकर किसी चीज को खरीदने के लिए ऑफर देते हैं और फिर आपका एटीएम या मोबाइल नम्बर माँगा जाता है, इस प्रकार हम साइबर क्राइम का शिकार हो जाते हैं। यह अपराध व्यक्तियों द्वारा न केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए बल्कि किसी व्यक्ति, संस्था या राष्ट्र को नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से भी किये जाते हैं। साइबर अपराध के अंतर्गत आर्थिक हानि, गोपनीय जानकारी चुराना, साइबर आतंकवाद को बढ़ावा देना, ऑनलाइन उत्पीड़न नशीली दवाओं की तस्करी भी शामिल है।

साइबर अपराध के भयावह कार्यों से सुरक्षित रहने के लिए हमें मज़बूत पासवर्ड का उपयोग करना चाहिए। अपने डिवाइस को नवीनतम सुरक्षा सॉफ्टवेयर से अपडेट रखना चाहिए। इसके अलावा सार्वजनिक नेटवर्क पर संवेदनशील जानकारी साझा करने से बचें और अपने ई-मेल और सोशल मीडिया प्रोफाइल को सुरक्षित रखने के लिए गोपनीयता सेटिंग का उपयोग करें।

***

सिनेमा और युवा पीढ़ी

संकेत बिंदु- युवा पीढ़ी पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव, उद्देश्य प्रधान सिनेमा की आवश्यकता

उपयोगी सिनेमा अपनाएँ

जीवन को सफल बनाएँ

सिनेमा और युवा पीढ़ी के बीच गहरा सम्बन्ध है। सिनेमा युवाओं के मनोरंजन, ज्ञान और सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण माध्यम है। सिनेमा के बहुत सारे प्रभाव हैं,जिनसे युवा पीढ़ी सबसे अधिक प्रभावित होती है। सिनेमा एक तरफ जहाँ हमारे जीवन पर अच्छा प्रभाव डालता है, वहीँ दूसरी ओर इसका बुरा प्रभाव भी होता है। ऐसी फ़िल्में जिनमें शिक्षाप्रद सामग्री शामिल होती है, को देखने से युवाओं का ज्ञान बढ़ता है और उन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। फ़िल्में युवा पीढ़ी के लिए मनोरंजन के रूप में भी सहायक सिद्ध होती हैं। वहीं दूसरी ओर अत्यधि क सिनेमा देखना युवाओं के लिए समय की बर्बादी बन जाता है। कई युवाओं को फिल्मों की लत लग जाती है और वे अपना कीमती समय पढ़ाई के स्थान पर फ़िल्में देखने में नष्ट कर देते हैं। आजकल ऐसी फ़िल्में प्रदर्शित हो रही हैं, जो अपना दुष्प्रभाव सीधा दर्शक पर छोड़ती हैं, जिन मेंनए- नए फैशन दर्शकों को दिखाए जाते हैं। फिल्मों में दिखाए गए चोरी, डकैती, साइबर क्राइम आदि से युवा पीढ़ी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। फिल्मों ने हमारे सामाजिक जीवन को विकृत कर दिया है। इनमें सुधार लाने के लिए सामाजिक उद्देश्य प्रधान फिल्मों के निर्माण की आवश्यकता है। फिल्मों में मनोरंजन के साथ-साथ मार्गदर्शन भी होना चाहिए। युवाओं को भी सिनेमा के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को समझाना चाहिए। उन्हें फिल्मों के चयन में सावधानी बरतनी चाहिए। उन्हें सिनेमा को केवल मनोरंजन के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान जागरूकता और सामाजिक विकास के साधन के रूप में भी देखना चाहिए।

***

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

मन से जीतने वाले ही नया इतिहास बनाते हैं

संकेत बिंदु- निराशा मानव के लिए अभिशाप, बलवती आशाएं और उत्साह के अनुकूल परिणाम, संकल्प की दृढ़ता

मनुष्य का जीवन संघर्षों, कठिनाइयों और परीक्षाओं से भरा होता है। हर व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी असफलता, दुख और निराशा का सामना करता है। ऐसे समय में जो व्यक्ति हिम्मत हार बैठता है, वह जीवन की दौड़ में पिछड़ जाता है। जबकि जो व्यक्ति अपने मन को मजबूत बनाए रखता है, वही सफल होता है। इसलिए कहा गया है- "**मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।**"

निराशा मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु होती है। यह उसके आत्मबल और आत्मविश्वास को कमज़ोर कर देती है। निराश व्यक्ति अपने लक्ष्य से भटक जाता है और उसके भीतर किसी भी कार्य को करने की इच्छा समाप्त हो जाती है। निराशा जीवन में एक अंधकार की तरह होती है, जो व्यक्ति की सारी योग्यताओं को ढक लेती है। इतिहास साक्षी है कि जो भी महापुरुष सफल हुए हैं, उन्होंने कभी निराशा को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। जीवन में आशा और उत्साह का बहुत बड़ा महत्त्व है। आशावान व्यक्ति हमेशा सकारात्मक सोच रखता है और कठिनाइयों का डटकर सामना करता है। उत्साह से परिपूर्ण मनुष्य असंभव कार्यों को भी संभव बना लेता है। उसकी सकारात्मक सोच और प्रयास ही उसे सफलता के शिखर तक पहुँचाते हैं।

आशा होती है, तभी उसके भीतर दृढ़ संकल्प भी उत्पन्न होता है। वही संकल्प मनुष्य को लक्ष्य तक पहुँचने की प्रेरणा और शक्ति प्रदान करता है।

अतः हमें कभी भी निराश नहीं होना चाहिए।यदि हम अपने मन को मजबूत रखें, आशावान और उत्साही रहें, तो कोई भी कठिनाई हमारे मार्ग में बाधा नहीं बन सकती। सच्चे मन और पूरी लगन से किया गया प्रयास अवश्य सफल होता है। यही जीवन का सबसे बड़ा है।

***

शारीरिक शिक्षा और योग

संकेत बिंदु- शारीरिक शिक्षा का अर्थ एवं महत्त्व,शारीरिक शिक्षा और योग, प्रभाव एवं अच्छे परिणाम

योग अपनाओ ,रोग भगाओ ,शरीर को स्वस्थ बनाओ

मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक विकास का संतुलन अत्यंत आवश्यक होता है। आधुनिक युग में जहाँ तकनीकी प्रगति और प्रतिस्पर्धा ने जीवन को तीव्र बना दिया है, वहीं इसके दुष्परिणाम के रूप में जीवन-शैली संबंधी रोग, तनाव, अवसाद जैसी समस्याएँ भी बढ़ती जा रही हैं। ऐसे समय में शारीरिक शिक्षा और योग एक ऐसा माध्यम बनकर उभरे हैं जो व्यक्ति को न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक और भावनात्म रूप से भी संतुलन प्रदान करते हैं। शारीरिक शिक्षा का सामान्य अर्थ है–**शरीर को स्वस्थ, सशक्त और सक्षम बनाए रखने हेतु** किए जाने वाले विविध शारीरिक क्रियाकलापों का अभ्यास। यह केवल शरीर को सक्रिय रखने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण का आधार भी है। शारीरिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में **आत्म-नियंत्रण, नेतृत्व क्षमता और टीम भावना** जैसे महत्वपूर्ण गुण विकसित होते हैं। शारीरिक शिक्षा और योग एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ शारीरिक शिक्षा ,सहनशक्ति और सक्रियता पर बल देती है, वहीं योग आंतरिक शांति, मानसिक संतुलन और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रदान करता है|योग के अंतर्गत

विभिन्न आसनों, प्राणायाम और ध्यान की विधियों का अभ्यास व्यक्ति को मानसिक तनाव, चिंता, क्रोध से भी मुक्ति दिलाता है। जब शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में योग को सम्मिलित किया जाता है, तो यह एक समग्र और संतुलित विकास सुनिश्चित करता है। इससे विद्यार्थियों और युवाओं को एक ऐसी जीवन शैली मिलती है जो दीर्घकालिक रूप से उपयोगी और प्रभावी होती है।

डिजिटल जगत में समाचार पत्रों का स्थान

संकेत बिंदु- प्रिंट मीडिया की उपयोगिता, समाचार पत्रों का डिजिटल रूप में उपलब्ध होना, बुजुर्ग व्यक्तियों, ग्रामीण इलाकों इत्यादि के लिए प्रिंट का महत्त्व, प्रिंट डिजिटल दोनों का सामर्थ्य

डिजिटल मीडिया का दिनोंदिन बढ़ रहा प्रभाव
युवा पीढ़ी को ज्ञान मिल रहा, बेहिसाब

डिजिटल जगत में प्रिंट मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा सूचनाओं की जानकारी को लिखित या चित्रों के माध्यम से प्रकाशित किया जाता है और एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाया जाता है। जैसे- समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ आदि। आज लोगों के बीच डिजिटल समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ लोकप्रिय हो रही हैं। डिजिटल मीडिया लेखकों की तुलना में रिपोर्टर विषयों और समाचारों को अधिक गहराई से कवर करते हैं। इसके विपरीत प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसलिए इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रिंट मीडिया बेहतर सामग्री और गुणवत्ता प्रदान कर सकता है। ग्रामीण इलाकों में बुजुर्ग व्यक्ति डिजिटल तकनीकों से कम परिचित होते हैं इसलिए प्रिंट मीडिया के माध्यम से सरल और सुलभ तरीके से समाचार पत्र प्राप्त कर सकते हैं। प्रिंट समाचार-पत्र ज्यादातर स्थानीय घटनाओं पर बल देते हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में लोंगों को अपने आस-पास हो रही घटनाओं की अधिक जानकारी मिल जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर विशेष भाषाएँ बोली जाती हैं और प्रिंट मीडिया इसको ध्यान में रखकर उचित समाचार पहुंचाता है। गाँवों में तकनीकी समस्याएँ होती हैं जिसमें प्रिंट मीडिया एक सुरक्षित और उपयोगी साधन है। इसके विपरीत डिजिटल मीडिया का अपना महत्त्व है डिजिटल मीडिया से सूचना त्वरित पहुँचती है जो लोगों को अपडेट रखने में मदद करती है ।

***

ग्लोबल वार्मिंग और जन-जीवन बचाव के उपाय

संकेत बिन्दु : ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ, मुख्य कारण , प्रभाव , समाधान

आओ , मानवता को बचाएँ
एकजुट होकर ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को मिटाएँ

ग्लोबल वार्मिंग से तात्पर्य पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि से है, जो मुख्यतः मानवीय गतिविधियों के कारण होती है। इसका प्रमुख कारण पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैसों जैसे- मीथेन,कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ना है जिसके कारण इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न हो गया है। फ्रिज, ए.सी और जीवाश्म ईंधन के अत्यधि कप्रयोग से कार्बन डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है। इसके अलावा खनन,वनों की कटाई, डीज़ल,पैट्रोल, खतरनाक रसायनों को जलाना, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग जैसी गतिविधियाँ ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारण हैं। ग्लोबल वार्मिंग से हमें जलवायु परिवर्तन, चक्रवात, बाढ़, सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। ओज़ोन

परत को नुकसान पहुँचाना, ग्लेशियरों का पिघलना जैसी कई समस्याएँ उत्पन्न हो गईं हैं। बर्फीले पहाड़ पिघलकर समुद्र में मिलते जा रहे हैं जिसके कारण समुद्र का जलस्तर बढ़ता जा रहा है और पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए जन साधारण और सरकार दोनों को मिलकर प्रयास करना चाहिए। प्लास्टिक का उपयोग कम करना, औद्योगिक कचरे को नियंत्रित करना, हवा में हानिकारक गैसों के निस्तारण पर रोक, वनों की कटाई रोककर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना, नवीकरणीय ऊर्जा का इस्तेमाल, जैविक खेती अपनाना जैसे उपायों द्वारा इस समस्या पर रोक लगाई जा सकती है।

आओ मिलकर हाथ बढ़ाएँ
धरा को हरा-भरा बनाएँ

***

अभ्यास कार्य

1. **शिक्षक- शिक्षार्थी के संबंध**

संकेत बिंदु: प्राचीन भारत में गुरु शिष्य सम्बन्ध, वर्तमान युग में गुरु शिष्य के सम्बन्ध,हमारा कर्तव्य

2. **वृक्षारोपण का महत्व**

संकेत बिंदु: वृक्षारोपण का अर्थ, वृक्षारोपण क्यों, हमारा दायित्व

3. **इंटरनेट की दुनिया**

संकेत बिंदु: इंटरनेट का तात्पर्य, सूचना का मुख्य साधन, लाभ तथा हानि

4. **आधुनिक जीवन शैली**

संकेत बिंदु: आवश्यकताओं में वृद्धि, अशांति, क्या करें और क्या न करें

5. **पहला सुख निरोगी काया**

संकेत बिंदु: आशय, व्यायाम और स्वस्थ, समाज को लाभ, बुजुर्गों के प्रति वर्तमान स्थिति के कारण, बतौर समुदाय हमारी जवाबदेही, आपके द्वारा बदलाव के कुछ सुझाव

6. **मोबाइल फोन के लाभ व हानियाँ**

संकेत बिन्दु: मोबाइल फोन की उपयोगिता, समझदारी से प्रयोग, वर्तमान समय में जरूरत, विपरीत प्रभाव, युवा पीढ़ी पर प्रभाव

7. **विद्यार्थी जीवन में अनुशासन**

संकेत बिन्दु: विद्यार्थी का अर्थ, विद्यार्थी जीवन का महत्व, अनुशासन सफलता का आधार

8. **दैनिक जीवन में योग का महत्व**

संकेत बिन्दु: योग का अर्थ, योग तनाव कम करने का आधार, करो योग रहो निरोग

पत्र लेखन

पत्र लेखन क्या है?

पत्र लेखन एक प्रकार का **संचार का साधन** है,जिसमें हम अपने विचारों या किसी प्रकार की जानकारी को कागज़ तथा पेन के माध्यम से दूसरे व्यक्ति के पास भेजते हैं।

पत्र के प्रकार

पत्र लेखन वैसे तो बहुत प्रकार के होते हैं लेकिन सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में दो प्रकार के पत्र लेखन संबंधित प्रश्न आते हैं-

(1) औपचारिक पत्र (2) अनौपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र

ये पत्र एक निश्चित पैटर्न और औपचारिकता का पालन करते हैं।उन्हें पूरी तरह से प्रोफेशनल लहज़े में लिखा जाता है, और सीधे संबंधित मुद्दों को संबोधित किया जाता है। किसी भी प्रकार का व्यावसायिक पत्र या अधिकारियों को लिखा गया पत्र इस श्रेणी में आता है।

नीचे सूची में विभिन औपचारिक पत्रों के नाम हैं-

1. आवेदन पत्र 2. शिकायती पत्र 3. संपादक को पत्र 4. नौकरी सम्बन्धी पत्र 5. बैंक अधिकारी को पत्र 6. कार्यालयी पत्र 7. अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र

औपचारिक पत्र का प्रारूप

पता-...........

दिनांक-..........

सेवा में,

....

....

....

विषय-..।

महोदय/महोदया,

....

....।

....

....

....।

....

....।

सधन्यवाद

भवदीय/आपका आज्ञाकारी/प्रार्थी/निवेदक

अनौपचारिक पत्र

ये व्यक्तिगत पत्र हैं। उन्हें किसी निर्धारित पैटर्न या किसी औपचारिकता का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। इनमें व्यक्तिगत जानकारी होती है या ये लिखित बातचीत होती है। अनौपचारिक पत्र आम तौर पर दोस्तों, परिचितों, रिश्तेदारों आदि को लिखे जाते हैं। नीचे विभिन्न अनौपचारिक पत्रों के नाम हैं-

1. माता पिता को पत्र 2. भाई या बहन को पत्र 3. मित्र को पत्र 4. संबंधी (चाचा या मामा आदि) को पत्र 5. पड़ोसी को पत

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

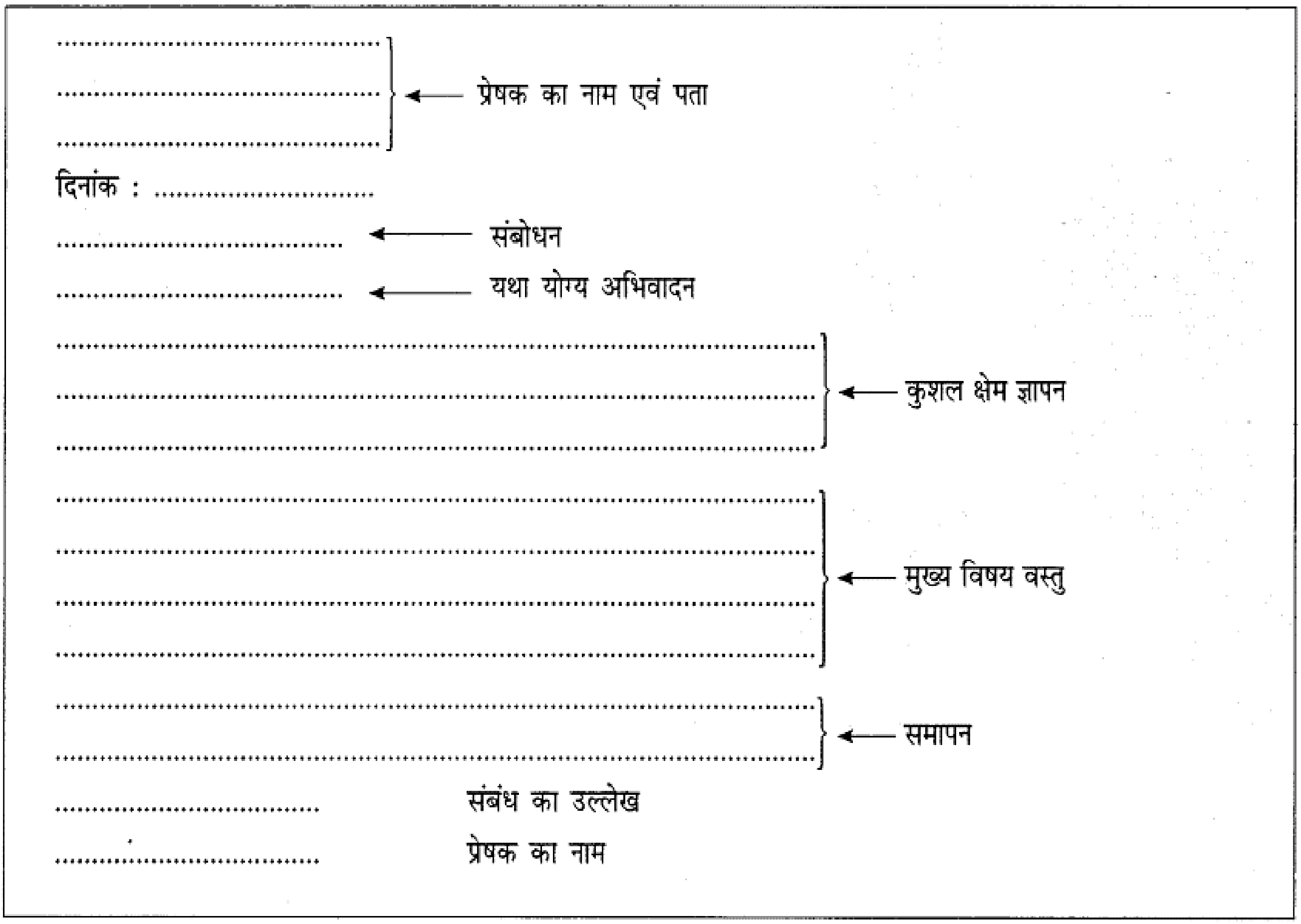

पत्र लेखन के उदाहरण

अनौपचारिक पत्र

1. आप श्रेयस राजपूत या श्रेयसी सिंह है। आप छात्रावास में रहते हैं। आपको अपने पिताजी से पता चला है कि आपकी माताजी पूरे परिवार का तो ध्यान रखती हैं किंतु अपने स्वास्थ्य की अक्सर अनदेखी कर देती हैं। माताजी को समझाते पत्र लिखिए।

हॉस्टल गेट 5
दिल्ली यूनिवर्सिटी

दिल्ली
दिनांक: 05/07/2026
आदरणीय माता जी
चरणस्पर्श,

मैं यहाँ हॉस्टल में कुशलतापूर्वक रह रहा हूँ और मेरा स्वास्थ्य भी बढ़िया है। आशा करता हूँ कि आप भी वहाँ सकुशल होंगी तथा घर में सभी का स्वास्थ्य बढ़िया होगा।

अभी हाल ही में घर में पापा के द्वारा पता चला कि आप अपने स्वास्थ्य का बिल्कुल भी ख्याल नहीं रखती हैं| मां ऐसे कैसे चलेगा क्योंकि आप ही पूरे घर का आधार हैं अगर आप ही अच्छी ना रहेंगी तो घर कैसे चलेगा और घर में सब कैसे स्वस्थ रहेंगे। अतः मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी सलाह पर ध्यान दोगे और अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखोगे।

आपका आज्ञाकारी बेटा
श्रेयस

2. छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखकर प्रातःकाल नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करने के लिए प्रेरित कीजिए।

हॉस्टल गेट 2
सरदार पटेल यूनिवर्सिटी,
मेरठ
दिनांक: 15/05/2026
प्रिय राजीव,
सदा खुश रहो!

मैं यहाँ हॉस्टल में कुशलतापूर्वक रह रहा हूँ और मेरा स्वास्थ्य भी बढ़िया है। आशा करता हूँ कि तुम भी अपने हॉस्टल में अच्छे होंगे तथा तुम्हारा स्वास्थ्य बढ़िया होगा।
अभी हाल ही में घर में मम्मी के द्वारा पता चला कि तुम पढ़ाई के तनाव के बीच अपने स्वास्थ्य का बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहे हो और आधी रात तक पढ़ने के लिए अधिक मात्रा में जंक फूड और कॉफी का सेवन कर रहे हो। इससे न सिर्फ तुम्हारा शारीरिक स्वास्थ्य गड़बड़ होगा बल्कि तुम्हारे मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ेगा। अतः अपने मानसिक स्वास्थ्य तथा शारीरिक स्वास्थ्य को तंदुरुस्त रखने हेतु तुम नियमित रूप से प्रातःकाल उठकर कुछ योग तथा प्राणायाम का अभ्यास करो। यह अभ्यास ज्यादा से ज्यादा तुम्हारा 20 मिनट लेंगे तथा तुम एक स्वस्थ जिंदगी जी पाओगे।

इन प्राणायाम तथा योग से तुम भविष्य में होने वाली सभी बीमारियों से बचे रहोगे। मैं आशा करता हूँ कि तुम मेरी सलाह पर ध्यान दोगे।

तुम्हारा बड़ा भाई
हितेश

अनौपचारिक पत्रों के लिए अभ्यास प्रश्न

1. अपने मित्र को अपने जन्मदिन की पार्टी में आमंत्रित करने के लिए पत्र लिखिए।
2. अपने छोटे भाई को परीक्षा में सफलता पाने के लिए शुभकामना संदेश देते हुए पत्र लिखें ।

3. आपका नाम रोहन और रोशनी है। आप अपने विद्यालय की तरफ से किसी बड़े शहर की शैक्षणिक यात्रा पर गए हैं। यात्रा से लौटकर उसकी जानकारी देते हुए अपनी बड़ी बहन को पत्र लिखिए।
4. आपके विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता में अपने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। अपनी इस उल्लेखनीय उपलब्धि का समस्त विवरण अपने मित्र को पत्र लिखकर प्रस्तुत कीजिए ।
5. छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर प्रात: काल नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करते हुए पत्र लिखिए।

औपचारिक पत्र

1. अपने क्षेत्र में सार्वजनिक पुस्तकालय खुलवाने की आवश्यकता समझने हेतु दिल्ली के शिक्षा मंत्री के नाम एक पत्र लिखिए।

सेवा में
श्रीमान शिक्षा मंत्री जी
दिल्ली सरकार
नई दिल्ली।
दिनांक: 07/05/2026
विषय: सार्वजनिक पुस्तकालय खुलवाने हेतु पत्र-
आदरणीय महोदय,
मैं दिल्ली शहर के सोनी कस्बे का निवासी हूँ। यह एक बेहद ही पिछड़ा हुआ इलाका है तथा इस कस्बे की अधिकांश जनता बेहद ही गरीब तथा अशिक्षित है। इस कस्बे में जो बच्चे पढ़ने भी जाते हैं तो वह धन की कमी के कारण पढ़ाई की सामग्री नहीं खरीद पाते हैं इसीलिए वह अच्छी पढ़ाई से वंचित रह जाते हैं।
अतः मैं आपको यह पत्र लिखकर आपसे यह विनती करता हूँ कि आप सोनी कस्बे में एक सार्वजनिक पुस्तकालय खुलवाने की कृपा करें ।
धन्यवाद सहित

भवदीय
गौरव

2. आपका नाम निहाल सिंह/निहारिका है। आपके मोहल्ले के पार्क में कुछ अराजक तत्व आकर बैठ जाते हैं जिसके कारण बच्चों,बुजुर्गों व महिलाओं को समस्या का सामना करना पड़ रहा है। प्रशासन का इस ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए क्षेत्रीय समाचार पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखिए।

प्रेषक
निहाल सिंह
नेहरू कॉलोनी, देहरादून- 248001

दिनांक: 28 अप्रैल 2026

सेवा में

संपादक महोदय

अमर उजाला

देहरादून।

विषय: पार्क में अराजक तत्वों की उपस्थिति के संबंध में ध्यान आकर्षित करने हेतु पत्र।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं नेहरू कॉलोनी, देहरादून का निवासी हूँ। मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार पत्र के माध्यम से संबंधित अधिकारियों का ध्यान हमारे क्षेत्र के पार्क की गंभीर समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इन दिनों पार्क में कुछ अराजक तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है। वे दिनभर बेवजह बैठकर शोरगुल करते हैं, गंदगी फैलाते हैं और आने-जाने वालों पर फब्तियाँ कसते हैं। इस कारण न तो बच्चे पार्क में निर्भय होकर खेल पाते हैं और न ही महिलाएँ अथवा बुजुर्ग वहाँ स्वतंत्रता से घूमने जा पाते हैं।

यह स्थिति दिन-प्रतिदिन और भी विकट होती जा रही है, जिससे स्थानीय निवासियों में भय और असुविधा का वातावरण बन गया है। हम सभी क्षेत्रवासी अपेक्षा करते हैं कि प्रशासन शीघ्र ही इस समस्या का संज्ञान लें और पार्क में नियमित पुलिस गश्त तथा आवश्यक सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करें, जिससे पार्क की मूल भावना-मनोरंजन और विश्राम-पुनः बहाल हो सके। आपसे निवेदन है कि कृपया इस विषय को अपने लोकप्रिय समाचार पत्र में स्थान देकर संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करें।

सधन्यवाद

भवदीय

निहाल

3. आपका नाम विनीत/विनीता है आपके मोहल्ले में नालियाँ खुली हैं जिनके कारण मच्छरों और बदबू की समस्या पैदा हो रही है इस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए नगर निगम आयुक्त को शिकायती पत्र लिखिए।

विनीत सिंह

जगदम्बा कॉलोनी,

देहरादून- 248001

दिनांक: 08 अप्रैल 2026

सेवा में

आयुक्त महोदय

नगर निगम

देहरादून।

विषय: गली में खुली नालियों से उत्पन्न दुर्गंध एवं डेंगू के खतरे के संबंध में शिकायत।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं जगदम्बा कॉलोनी, देहरादून का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र की गलियों में नालियाँ खुली हुई हैं, जिनकी नियमित सफाई नहीं हो रही है। परिणामस्वरूप वहाँ से भयंकर दुर्गंध फैल रही है और मच्छरों का प्रकोप दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। इससे डेंगू जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा मंडरा रहा है। स्थानीय निवासियों के लिए घरों से बाहर निकलना भी कठिन हो गया है । बच्चे और वृद्धजन विशेष रूप से प्रभावित हो रहे हैं। यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो स्थिति और भी भयावह हो सकती है।

आपसे अनुरोध है कि कृपया जल्द से जल्द नालियों को ढकवाने, नियमित सफाई करवाने और मच्छर रोधी दवाओं का छिड़काव कराने की व्यवस्था करवाई जाए, ताकि क्षेत्रवासियों को राहत मिल सके।

सधन्यवाद

भवदीय

विनीत सिंह

अभ्यास प्रश्न

औपचारिक पत्रों के लिए अभ्यास प्रश्न

1. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति हेतु लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए।
2. जिला अधिकारी को अपने क्षेत्र में सड़क की खराब स्थिति को सुधारने के लिए लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए।
3. पुस्तकालयाध्यक्ष को पुस्तकालय में नई किताबें उपलब्ध कराने के लिए लगभग 100 शब्दों में निवेदन पत्र लिखिए।
4. बिजली विभाग के अधीक्षण अभियंता को क्षेत्र में लगातार बिजली कटौती की समस्या के समाधान हेतु लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए।
5. कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बनने लगे हैं जिससे आप चिंतित हैं इन अपराधों की रोकथाम के लिए थाना अध्यक्ष को लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए।
6. आपके क्षेत्र में डेंगू फैल रहा है स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर उपयुक्त चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए लगभग 100 शब्दों में प्रार्थना पत्र लिखिए।
7. अपने क्षेत्र की नालियों तथा सड़कों की समुचित सफाई न होने पर स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लगभग 100 शब्दों में लिखिए।

ई-मेल लेखन

ई-मेल का अर्थ होता है- **इलेक्ट्रॉनिक मेल।** इंटरनेट के माध्यम से, हम अल्पसमय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और प्रदान कर सकते हैं आज की दुनिया में ई- मेल संचार का सबसे सामान्य रूप है। आज शायद ही कोई कंप्यूटर उपयोगकर्ता होगा, जो ई- मेल का उपयोग ना करता हो। ई- मेल के माध्यम से संदेश भेजना ,प्राप्त संदेशो का जवाब देना आज की जरूरत है।

ई-मेल लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें:-

आकर्षक बिषय- ई-मेल का बिषय आकर्षक होना चाहिए इससे प्राप्तकर्ता को आपके संदेश को समझने में आसानी होगी।

पता अवश्य लिखें- आप किसी संस्था या कंपनी में काम करते हैं तो उस संस्था या कंपनी के नाम का ही प्रयोग करें जिससे मेल प्राप्त करने वाले व्यक्ति को समझ में आ सके कि मेल किसके द्वारा भेजा गया है।

शार्ट फॉर्म लिखने से बचें- जब भी आप कोई ई-मेल लिखें तो शब्दों को शॉर्ट फॉर्म में लिखने से बचें क्योंकि इससे पढ़ने वाला गलत अर्थ समझ सकता है।

सन्देश को एडिट करें- ई-मेल भेजते समय किसी भी प्रकार की गलती की संभावना ना रहे इसलिए मेल भेजने से पहले जांच लेना या एडिट करना चाहिए।

ई- मेल का उपयोग

(i) ई-मेल के माध्यम से हम किसी भी समय किसी भी व्यक्ति से संपर्क कर सकते हैं, और वह मेल पढ़ सकता है और अपनी सुविधानुसार प्रतिक्रिया दे सकता है।

(ii) ई-मेल व्यक्ति को समय का सदुपयोग करना सिखाता है।

(iii) इसमें केवल इंटरनेट से जुड़ा होने का ही खर्चा आता है।

(iv) ई-मेल संचार के साधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

(v) शैक्षिक दृष्टि से, प्रवेश के लिए आवेदन करने, परीक्षा परिणाम प्राप्त करने और किसी भी सेवा के प्रस्ताव के लिए ई-मेल भेजे जा सकते हैं।

(vi) यह संचार को सरल बनाने में मदद करता है।

सावधानियाँ-

(i) सबसे पहले मेल को लॉग इन करतेहैं, तो एक नया पेज़ खुलता है। उसमें कम्पोज़ दिखाई देता है और ऊपर बाँई ओर (+) दिखाई देता है ।

(ii) दाएँ पेज़ पर सबसे ऊपर फ्रॉम,(from)फिर to उसके नीचे subject, उसके नीचे सन्देश लिखने का स्थान रहता है।

(iii) **सी सी** का अर्थ है **कार्बन कॉपी**। आप जितने लोगों को मेल भेजेंगे, उनको जब ई-मेल प्राप्त होगा, तब वह मेल किस-किस को भेजा गया है उसकी सूची दिखाई देगी।

(iv) **BCC** का अर्थ है **ब्लाइंड कार्बन कॉपी**। इसमें आप एक से अधिक लोगों को मेल भेज सकते हैं, किन्तु Bcc किसे भेजी गई, उनकी लिस्ट नहीं दिखाई देगी।

(v) मेल सेंड होने पर भेजने वाले को मैसेज सक्सेसफुली सेंड दिखाई देगा।

(vi) अगर आपको मैसज, पीडीएफ फाइल, पावरपॉइंट एवं वीडियो को भेजना है तो उसके लिए अटेचमेंट फाइल पर क्लिक करके भेज सकते हैं।

ई- मेल लेखन का प्रारूप

प्रेषक(From): मेल भेजने वाले का ई- मेल पता

प्रेषिती (To): मेल प्राप्त करने वाले का ई -मेल पता

CC: कार्बन कॉपी (प्रतिलिपि)

BCC: Blind Carbon Copy (गोपनीय प्रतिलिपि)

विषय: यहाँ संक्षेप में विषय लिखा जाता है ।

अभिवादन: जिसे ई-मेल लिखा जाता है, उसके लिए आदरसूचक शब्द जैसे **प्रिय, मान्यवर, महोदय** आदि का प्रयोग करते हैं।

मुख्य विषयवस्तु: विषय से संबंधित विस्तार से विषय लिखा जाता है।

समापन: कथन समाप्त करना

अटैचमेंट अटैच करें: पीडीएफ, इमेज जैसी फाइल अटैच करना

हस्ताक्षर: प्रेषक का नाम, संकेत, आदि

प्रेषक: यहाँ आपको ई-मेल भेजने वाले का ई-मेल पता भरना होता है।

प्रेषिती: यहाँ आपको ई-मेल प्राप्त करने वाले का पता भरना होता है। जिस व्यक्ति या संस्था को ई-मेल भेजी जा रही है उसका सही पता भरना आवश्यक है।

CC (कार्बन कॉपी): जब आप चाहते हैं कि मुख्य प्राप्तकर्ता के अलावा किसी अन्य व्यक्ति (सहकर्मी) को भी मेल की जानकारी रहे तो उस व्यक्ति की ई-मेल आईडी CC में डाली जाती है।

BCC: का मतलब होता है- **ब्लाइंड कार्बन कॉपी**। कार्बन कॉपी की तरह ही इसका भी उपयोग एक से ज्यादा लोगों को मेल भेजने के लिए किया जाता है। लेकिन ब्लाइंड कार्बन कॉपी में लिखा ई-मेल एड्रेस, TO/CC वाले व्यक्ति कभी जान नहीं पाते कि यह मेल किसे भेजा गया है।

Subject (विषय): ई-मेल लेखन में बिषय लिखना आवश्यक होता है इससे प्राप्तकर्ता को जानकारी मिलती है कि ई-मेल क्यों लिखी गई है।

संबोधन: ई-मेल में सम्बोधन का उपयोग किया जाता है। अगर आप अपरिचित को ई- मेल भेज रहे हैं तो महोदय लिख सकते हैं।

मुख्य विषय: मुख्य विषय में आपको एक विस्तृत विषय लिखना होगा। परिचय, बात और निष्कर्ष मुख्य विषय में शामिल हैं।

फ़ाइल जोड़ें (Attachment): यहाँ आप पीडीएफ फाइल, चित्र, या अन्य दस्तावेज संलग्न कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आपने किसी पाठ्यक्रम की पीडीएफ फाइल डाउनलोड की है, तो आप इसे ई-मेल के साथ संलग्न कर सकते हैं और अपने मित्र को भेज सकते हैं।

हस्ताक्षर या स्व निर्देश: आखिरी में आप स्व निर्देश के साथ अपना नाम लिखकर हस्ताक्षर करें।

ई-मेल लेखन का प्रारूप

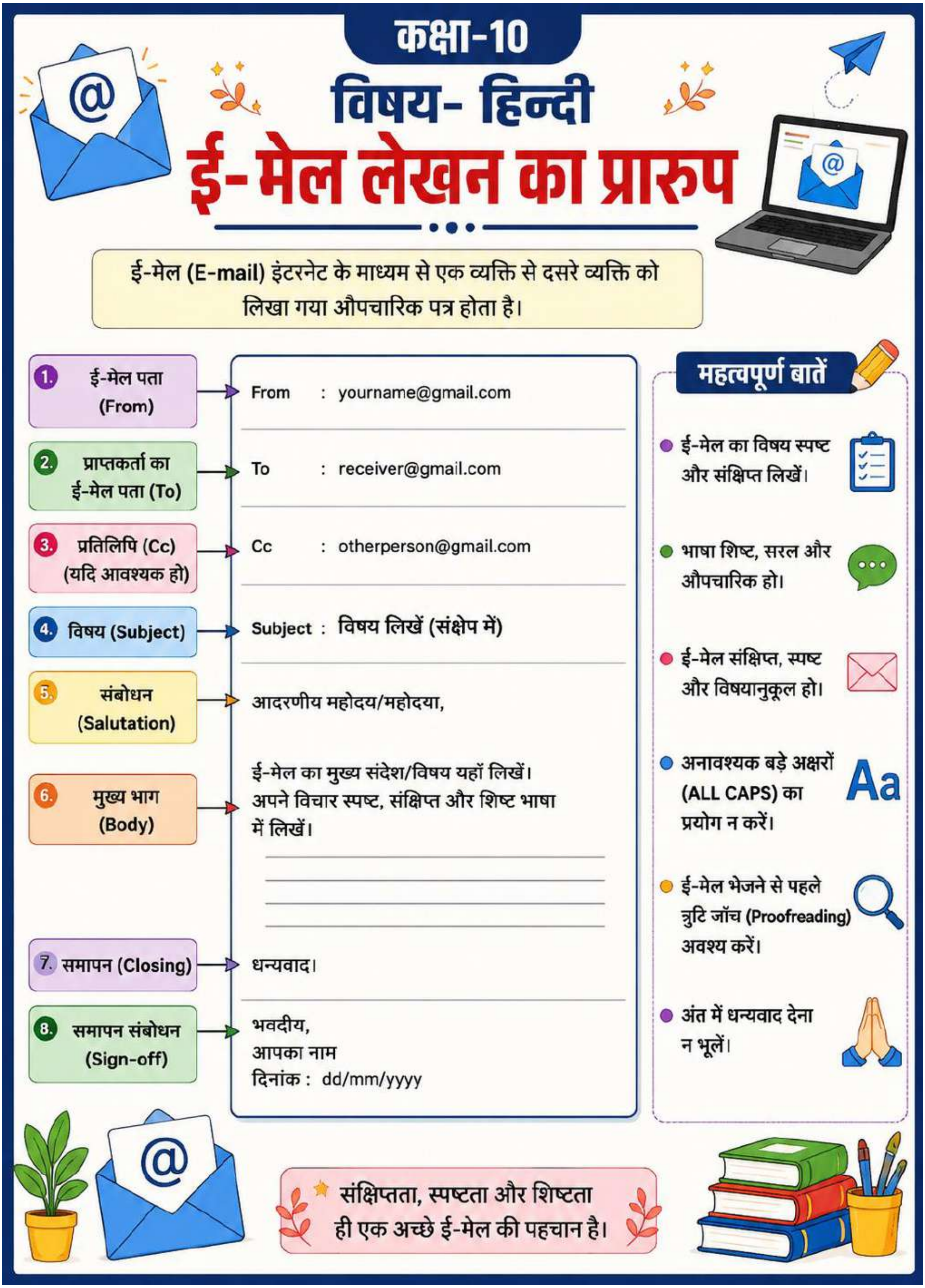

ई-मेल लेखन के उदाहरण

(1) अपने मित्र को अपनी जन्मदिन की पार्टी के लिए निमंत्रण देने हेतु लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए।

प्रेषक (From) : xyz@abc.com

प्रेषिती (To) : def@gmail.com

CC :

BCC :

विषय - निमंत्रण के सम्बन्ध में।

प्रिय जनक,

मुझे लगता है कि तुम्हें मेरा जन्मदिन याद होगा। इसलिए मुझे तुम्हें यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि 10 मई को स्टार हॉल में जन्मदिन की पार्टी है। आप इस अवसर पर सादर आमंत्रित हैं। पार्टी का समय रात में 10 से 12 बजे तक है। आपको इस बर्थडे पार्टी में जरूर आना है। कृपया आप शामिल होकर पार्टी की शोभा बढ़ाएंगे ऐसी आशा है।

तुम्हारा मित्र

क ख ग

(2) **अपनी सोसाइटी के मुख्य सीवर की मुरम्मत हेतु नगर निगम के सफाई निरीक्षक को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए।**

प्रेषक) From) :subhash @gmail.com

प्रेषिती) To) : abc@gmail.com

CC :

BCC :

विषय : **सीवर मरम्मत करने हेतु।**

महोदय,

शर्मा सोसाइटी का मुख्य सीवर टूट गया है जिसके कारण नाले का गंदा पानी सड़क पर आ गया है। बहुत ज्यादा गंदगी और बदबू फैल रही है तथा आने जाने वाले लोगों को परेशानी हो रही है। सबसे ज़्यादा परेशानी गर्मी के कारण पैदल चलने वाले लोगों को हो रही है। चारों और गंदगी होने के कारण तरह-तरह की बीमारियों के फैलने का भय बना हुआ है इसलिए आपसे अनुरोध है कि यथाशीघ्र इसकी मरम्मत करवाने का कष्ट कीजिएगा।

आशा है कि आप इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे।

भवदीय

क ख ग

ई-मेल से संबन्धित अभ्यास प्रश्न

1. विदयालय में लड़कियों के लिए शौचालय बनाए जाने कि मांग करते हुए अपने प्रधानाचार्य को ई-मेल लिखिए।
2. पासपोर्ट को रिन्यू कराने के लिए क्या-क्या अपेक्षित है। पासपोर्ट अधिकारी को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखकर पता कीजिए।
3. बढ़ते हुए अपहरण की घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए।
4. आप **कमलदीप/ पूनम** है अपने मोहल्ले में बरसात के बाद होने वाली जल भराव की समस्या को दूर करने के लिए नगर निगम अधिकारी को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए।
5. विद्यालय में पीने के पानी की समुचित व्यवस्था के लिए अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए।
6. पिताजी के आकस्मिक निधन के कारण पढ़ाई जारी रखने हेतु विद्यालय से आर्थिक मदद की मांग करते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 80 शब्दों में ई -मेल लिखिए।
7. विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षा की समुचित व्यवस्था किए जाने का अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए ।
8. माताजी के गंभीर रूप से बीमार होने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई है। अपनी पढ़ाई जारी रखने हेतु विद्यालय से आर्थिक सहायता की मांग करते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए।
9. विद्यालय में पुस्तकालय की पुस्तकों की संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को होने वाली कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए।
10. आप राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिता में चयनित हुए हैं। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पाँच दिन का अवकाश प्रदान करने का अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए।

स्ववृत लेखन एवं प्रारूप

स्ववृत का अर्थ- स्व का अर्थ होता है **अपनी** और **वृत** का अर्थ होता है **अपनी या खुद की जानकारी देना।**

प्रश्न 1. स्ववृत लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर- किसी व्यक्ति द्वारा अपने बारे में व्यवस्थित जानकारी देना ही स्ववृत कहलाता है।

प्रश्न 2. स्ववृत लेखन में किन -किन बातों का समावेश होना चाहिए?

उत्तर- स्ववृत लेखन में व्यक्तिगत जानकारी,कार्य अनुभव, शैक्षणिक योग्यता, अभिरुचियाँ आदि का विवरण होना आवश्यक है।

प्रश्न 3. स्ववृत लेखन में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

उत्तर- (i) स्ववृत में दी जानकारी सत्य पर आधारित होनी चाहिए ।

(ii) किसी भी बात को बढ़ा चढ़कर प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

(iii) स्ववृत की भाषाशैली सरल, स्पष्ट, संक्षिप्त होनी चाहिए।

(iv) स्ववृत में सभी आवश्यक सूचनाओं का समावेश होना चाहिए।

कक्षा-10

विषय - हिन्दी

स्ववृत लेखन का प्रारुप

स्ववृत (Bio-data) किसी व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय उसकी व्यक्तिगत, शैक्षिक, कौशल आदि जानकारियों के साथ क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है।

स्ववृत के प्रमुख भाग

1. **शीर्षक**
   सबसे ऊपर 'स्ववृत' या 'व्यक्तिगत विवरण' लिखें।
2. **व्यक्तिगत विवरण**
   नाम, पिता का नाम, माता का नाम, जन्म तिथि, लिंग, पता, संपर्क नंबर, ई-मेल आदि।
3. **शैक्षिक योग्यता**
   परीक्षा का नाम, वर्ष, विद्यालय/संस्थान, बोर्ड/विश्वविद्यालय, प्राप्त अंक या प्रतिशत।
4. **कौशल / विशेष योग्यताएँ**
   कंप्यूटर ज्ञान, भाषा ज्ञान, संचार कौशल, अन्य कौशल आदि।
5. **उपलब्धियाँ / सम्मान**
   प्राप्त पुरस्कार, प्रमाणपत्र या अन्य उपलब्धियाँ।
6. **रुचियाँ**
   पठन-पाठन, खेलकूद, संगीत, चित्रकला, सामाजिक कार्य आदि।
7. **घोषणा**
   दिए गए विवरण सत्य हैं। (स्थान, तिथि)
8. **हस्ताक्षर**
   अपने नाम के साथ हस्ताक्षर करें।

स्ववृत (व्यक्तिगत विवरण)

A. व्यक्तिगत विवरण

1. नाम : ....
2. पिता का नाम : ....
3. माता का नाम : ....
4. जन्म तिथि : ....
5. लिंग : ....
6. स्थायी पता : ....
   ....
7. संपर्क नंबर : ....
8. ई-मेल आईडी : ....

B. शैक्षिक योग्यता

क्रम सं.	परीक्षा का नाम	वर्ष	विद्यालय/संस्थान	बोर्ड/विश्वविद्यालय	प्राप्तांक/प्रतिशत
1.					
2.					
3.					
4.					

C. विशेष योग्यताएं

- ....
- ....

D. उपलब्धियाँ

- ....
- ....

E. रुचियाँ

- ....
- ....

F. घोषणा

मैं घोषणा करता/करती हूँ कि उपर्युक्त सभी विवरण मेरे ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

स्थान : __________ हस्ताक्षर : __________

दिनांक : __________ नाम : __________

महत्वपूर्ण निर्देश

- ★ स्ववृत संक्षिप्त, स्पष्ट और क्रमबद्ध होना चाहिए।
- ★ जानकारी सही, अद्यतन और प्रमाणिक होनी चाहिए।
- ★ स्वच्छ और आकर्षक प्रारूप में लिखें।
- ★ अनावश्यक जानकारी शामिल न करें।
- ★ स्थान और तिथि अवश्य लिखें तथा हस्ताक्षर करना न भूलें।

ध्यान रखने योग्य बातें

- भाषा सरल, शुद्ध और व्याकरण-सम्मत हो।
- बिंदुवार या सारणीबद्ध रूप का प्रयोग करें।
- पूरी जानकारी एक पृष्ठ में समायोजित रखें।
- अपने व्यक्तित्व को सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत करें।

"एक अच्छा स्ववृत आपकी पहचान और क्षमताओं का प्रभावी परिचय है।"

★ साफ-सुथरा लेखन, सही जानकारी और सुसंगत प्रस्तुति ही अच्छे स्ववृत की पहचान है। ★

कक्षा-10

विषय - हिन्दी

स्ववृत (Bio-data) के 2 उदाहरण

स्ववृत (Bio-data) किसी व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय उसकी व्यक्तिगत, शैक्षिक, कौशल जानकारियों के साथ क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करता है।

उदाहरण - 1

व्यक्तिगत विवरण

- नाम : राहुल शर्मा
- पिता का नाम : श्री महेश शर्मा
- माता का नाम : श्रीमती सुनीता शर्मा
- जन्म तिथि : 15 मार्च 2009
- पता : 45, शास्त्री नगर, जयपुर
- मोबाइल : 9876543210
- ई-मेल : rahul@gmail.com

शैक्षिक योग्यताएँ

क्रम सं.	कक्षा	विद्यालय का नाम	बोर्ड	वर्ष	प्रतिशत (%)
1.	कक्षा 10 (वर्तमान)	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर	RBSE	2025	—
2.	कक्षा 9	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर	RBSE	2024	88%
3.	कक्षा 8	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर	RBSE	2023	85%

विशेष योग्यताएँ

- कंप्यूटर का ज्ञान
- हिंदी व अंग्रेज़ी टंकण

उपलब्धियाँ

- जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम स्थान

रुचियाँ

- पुस्तक-पठन, क्रिकेट

घोषणा

उपर्युक्त सभी विवरण सत्य हैं।

स्थान : जयपुर

दिनांक : 10.06.2026

हस्ताक्षर : राहुल शर्मा

उदाहरण - 2

व्यक्तिगत विवरण

- नाम : प्रिया वर्मा
- पिता का नाम : श्री रमेश वर्मा
- माता का नाम : श्रीमती कविता वर्मा
- जन्म तिथि : 20 अगस्त 2009
- पता : लक्ष्मी नगर, कोटा
- मोबाइल : 9876543211
- ई-मेल : priya@gmail.com

शैक्षिक योग्यताएँ

क्रम सं.	कक्षा	विद्यालय का नाम	बोर्ड	वर्ष	प्रतिशत (%)
1.	कक्षा 10 (वर्तमान)	आदर्श विद्या मंदिर, कोटा	RBSE	2025	—
2.	कक्षा 9	आदर्श विद्या मंदिर, कोटा	RBSE	2024	92%
3.	कक्षा 8	आदर्श विद्या मंदिर, कोटा	RBSE	2023	87%

विशेष योग्यताएँ

- चित्रकला एवं कंप्यूटर संचालन
- मंच संचालन

उपलब्धियाँ

- राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान

रुचियाँ

- चित्रकारी, संगीत सुनना

घोषणा

मेरे द्वारा दी गई सभी सूचनाएँ सत्य हैं।

स्थान : कोटा

दिनांक : 10.06.2026

हस्ताक्षर : प्रिया वर्मा

सही जानकारी और सुसंगत प्रस्तुति ही अच्छे स्ववृत की पहचान है।

अभ्यास कार्य

1. निदेशालय, दिल्ली को विभिन्न विषयों के प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की आवश्यकता है। इस पद के लिए अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त तैयार कीजिए।
2. स्वास्थ्य मंत्रालय ,नई दिल्ली के निदेशक को कंप्यूटर टाइपिस्ट की आवश्यकता है। अत: इस पद के लिए अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त तैयार कीजिए।
3. फुलमार्क्स प्राइवेट लिमिटेड,दिल्ली को संपादक की आवश्यकता है इस पद के लिए अपनी योग्यता का विवरण देते हुए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त तैयार कीजिए।
4. भारतीय स्टेट बैंक में कार्यालय सहायक की आवश्यकता है अतः अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए स्ववृत्त लगभग 80 शब्दों में तैयार कीजिए।
5. प्रयागराज विश्वविद्यालय के महिला छात्रावास में वार्डन का पद रिक्त है उक्त पद के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त तैयार कीजिए।
6. दिल्ली पब्लिक स्कूल में फिजिकल एजूकेशन के अध्यापक का पद रिक्त है उक्त पद के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त तैयार कीजिए।
7. रिलायंस कंपनी के मार्केटिंग विभाग में एक मार्केटिंग मैनेजर का पद रिक्त है। उक्त पद के लिए उन्हें किसी अनुभवी एम.बी.ए पास व्यक्ति की आवश्यकता है उक्त पद के लिए लगभग 80 शब्दों में स्ववृत्त तैयार कीजिए।

विज्ञापन लेखन

'वि' उपसर्ग लगने से 'विज्ञापन' शब्द बना है ,जिसका अर्थ है -"**विशेष जानकारी देना**"। यह जानकारी उत्पन्न की गई वस्तुओं, सेवाओं आदि से जुड़ी होती है। विज्ञापन में वस्तुओं के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उपभोक्ता आकर्षित अथवा प्रभावित हो और उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित हो। विज्ञापन द्वारा उत्पादक अपनी वस्तुओं के अच्छे दाम प्राप्त करते हैं और उपभोक्ताओं को वस्तुओं की सही जानकारी, तुलनात्मक मूल्य और विकल्प मिलते हैं। आजकल टीवी, रेडियो,कार्यक्रमों, समाचार पत्र- पत्रिकाओं, भवनों की दीवारों आदि पर विज्ञापनों की भरमार दिखाई देती है। "**किसी वस्तु आदि को बेचने के लिए जागरूकता और प्रचार-प्रसार करना ही विज्ञापन कहलाता है।"**

विज्ञापन के प्रकार

1. स्थानीय विज्ञापन 2. राष्ट्रीय विज्ञापन 3. अंतरराष्ट्रीय विज्ञापन 4. औद्योगिक विज्ञापन 5. व्यापारिक विज्ञापन 6. सूचना प्रदायक विज्ञापन ।

विज्ञापन के उद्देश्य

- नवीन वस्तुओं और सेवाओं की सूचना देना
- उत्पादों के विक्रय में वृद्धि करना तथा उनका व्यापक प्रचार करना
- समाज को आवश्यक संदेश देना
- उपभोक्ताओं में वस्तु के प्रति रुचि और विश्वास उत्पन्न करना
- विशेष छूट आदि की जानकारी देना
- विक्रेताओं को कम गुणवत्ता वाली वस्तुओं के भी ग्राहक मिल जाते हैं
- उपभोक्ताओं को वस्तुओं के विकल्प मिल जाते हैं

विज्ञापन लेखन से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बातें

- विज्ञापन लिखते समय सबसे पहले ज़रूरी जानकारी एकत्रित कर लें।
- शीर्षक एवं बॉक्स के किनारों पर "**सेल**", "**धमाका**", "**खुशखबरी**", जैसे आकर्षक शब्द लिखें।
- बीच में विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख करें।
- न्यूनतम शब्दों में विज्ञापन पूरा करें।
- अतिशयोक्तिपूर्ण शब्दों का प्रयोग न करें।

विज्ञापन में प्रयुक्त होने वाले कुछ प्रेरक वाक्य-

धमाका सेल!! जल्दी कीजिए! मौके का लाभ उठाइए! पहले आओ! पहले पाओ! सोचिए मत, खरीद लीजिए!! 100% सुरक्षा की गारंटी! आपके शहर में पहली बार! ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा! ऑफर सीमित समय के लिए! स्टॉक सीमित है; जल्दी करें!

विज्ञापन लेखन का प्रारूप एवं विशेषताएँ

विज्ञापन के अभ्यास प्रश्न

1. लैपटाप बनाने वाली एक कंपनी के लिए विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार करें।
2. **जल है तो कल है-** बिषय पर लगभग 40 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार करें।
3. प्रगति मैदान में एक पुस्तक मेला लगा है,जिसकी जानकारी देते हुए एक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार कीजिए।
4. 'उत्सव बैग' बनाने वाली कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार करें।
5. पंखे की एक नई कंपनी बाजार में आयी है, जिसके लिए आप आकर्षक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार कीजिए।
6. आपके मित्र ने कपड़ों की एक नयी दुकान खोली है ,उसके लिए एक विज्ञापन लगभग 40 शब्दों में तैयार कीजिए।

संदेश लेखन

सन्देश शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से मानी जाती है| जिसका अर्थ है- **खबर प्राप्त करना या समाचार प्राप्त करना।**

संदेश एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा जानकारी को किसी व्यक्ति विशेष या किसी समूह द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति विशेष या समूहों को भेजा जा सकता हैं। संदेश लिखित या मौखिक दोनों ही प्रकार के हो सकते हैं। संदेश सुखद या दुखद, व्यक्तिगत या सामूहिक किसी भी प्रकार का हो सकता है। किसी संदेश को भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्य काल अर्थात किसी भी काल में लिखा जा सकता है।

किसी व्यक्ति विशेष या समूह द्वारा अन्य व्यक्ति तक पहुँचाए जाने वाले सुखद, दुखद, आवश्यक तथा सामान्य सूचना या समाचार संदेश लेखन कहलाता है।

संदेश लेखन के प्रकार

संदेश लेखन के कई प्रकार होते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण संदेश लेखन के प्रकार निम्नलिखित हैं-

(1) शुभकामना संदेश- शुभकामना संदेश में वे संदेश आते हैं जिन्हें किसी ख़ुशी के अवसर पर किसी व्यक्ति को शुभाशीष या मंगलकामना देने के लिए लिखा जाता है। जैसे- किसी व्यक्ति के जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ, विद्यार्थियों को उनकी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने हेतु, कर्मचारियों के पदोन्नति होने पर आदि।

(2) पर्व व त्योहार संदेश- ऐसी शुभकामनाएँ जिन्हें विशेष पर्वों व त्योहार के वक्त लोग एक दूसरे को भेजते हैं। जैसे दीपावली, होली, क्रिसमस, स्वतंत्रता दिवस आदि विशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश।

(3) शोक संदेश- शोक संदेश के अंतर्गत वे संदेश आते हैं जिनमें कोई दुखद समाचार या जानकारी लिखी जाती है। इस तरह के संदेश किसी व्यक्ति की पुण्यतिथि या मृत्यु पर लोगों को भेजे जाते हैं। किसी भी तरह की दुर्घटना की जानकारी भी शोक संदेश के द्वारा ही दी जाती है।

(4) व्यक्तिगत संदेश- व्यक्तिगत संदेश में वे संदेश आते हैं जिनमें कोई जानकारी केवल अपने नजदीकी व्यक्तियों को ही दी जाती है। इन संदेशों में परिजनों को बधाई व शुभकामना संदेश, कहीं जाने या आने का संदेश या किसी भी अन्य तरह का संदेश जो सिर्फ परिजनों को दिया जाने वाला संदेश आदि आते हैं।

संदेश लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

1. सबसे पहले संदेश को किसी सीमा रेखा जैसे बॉक्स या गोले के अंदर लिखा जाना चाहिए। संदेश की शुरुआत में **"संदेश"** शब्द अवश्य लिखना चाहिए। उसके बाद दिनांक, समय लिखा जाना चाहिए, फिर मुख्य विषय को जितना हो सके कम शब्दों में लिखना चाहिए लेकिन जितने भी शब्दों का प्रयोग किया जाना हो, वे प्रभावशाली व आकर्षक होने चाहिए।
2. संदेश अवसर के अनुरूप होना चाहिए तथा उसमें अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
3. संदेश में अपनत्व और मौलिकता होनी चाहिए।
4. संदेश में भावों की सहजता होती है ,उसकी भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
5. संदेश संक्षेप में होना चाहिए अर्थात् संदेश लिखते समय शब्द सीमा का ध्यान अवश्य रखें।
6. संदेश में संबोधन और अभिवादन का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

संदेश की विशेषताएँ

1. किसी भी प्रकार का संदेश संक्षिप्त तथा तथ्यपरक होना चाहिए।
2. संदेश औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार का हो सकता है।
3. संदेश लिखते समय कोई भी प्रमुख बात छूटनी नहीं चाहिए।
4. संदेश कम शब्दों में उचित तथा अधिक बात कहने वाला होना चाहिए।

संदेश का प्रारूप

संदेश

समय: ----------------------------तिथि: ----------------------------

---------------------------- (संबंधित व्यक्ति का नाम)

विषयवस्तु (संदेश) --

प्रेषक का नाम व हस्ताक्षर

संदेश लेखन के कुछ उदाहरण

आपके मित्र को वालीबॉल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक मिलने पर लगभग 40 शब्दों में बधाई संदेश लिखें।

संदेश

समय:- पूर्वाह्न 9.00 बजे　　　　　　　　　　तिथि:- 20/04/2026

प्रिय सुमित,

मुझे तुम्हारी उपलब्धि के विषय में जानकर अपार हर्ष हुआ कि तुम्हें राष्ट्रीय वालीबॉल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक मिला। इस कामयाबी से तुमने अपने परिवार, समाज और देश का नाम रोशन कर दिया। मेरी ओर से तुम्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। ईश्वर की असीम कृपा आप पर बनी रहे।

सुजल

शिक्षक दिवस के अवसर पर अपने प्रिय अध्यापक के लिए लगभग 40 शब्दों में एक संदेश लिखिए।

संदेश

समय:- पूर्वाह्न 10.00 बजे दिनांक:- 05/09/2026

आदरणीय गुरूदेव,

आप मेरे जीवन की प्रेरणा हैं, मार्गदर्शक हैं, आप ही मेरे जीवन का प्रकाश-स्तंभ हैं। मैं हृदय की गहराइयों से आपका आभारी हूँ। आपको शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। अपना आशीर्वाद हमेशा बनाएँ रखना।

शिवांग

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर प्रधानमंत्री की ओर से देशवासियों के लिए लगभग 40 शब्दों में एक संदेश लिखें ।

संदेश

दिनांक - 15 अगस्त 2026 समय - पूर्वाह्न 7:00बजे

मेरे प्यारे देशवासियों,

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। आइए, स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर हम सब मिलकर अपने देश को चहुंमुखी विकास के मार्ग पर अग्रसर करने का दृढ़ संकल्प लें और राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने में अपना योगदान दें।

प्रधानमंत्री

सहपाठियों को प्री-बोर्ड परीक्षा के लिए लगभग 40 शब्दों में शुभकामना संदेश लिखिए।

संदेश

दिनांक: 11/11/2026 समय: पूर्वाह्न 9:00 बजे

प्रिय मित्रों,

जैसा कि आप सभी को पता ही है कि हमारी प्री-बोर्ड की परीक्षा आने वाली 15 नवम्बर से शुरू हो रही हैं। यह हमारे जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण क्षणों में से एक है। अतः आप सभी को मेरी तरफ से ढेर सारी शुभकामनाएँ। ईश्वर का आशीर्वाद सदैव आपके साथ बना रहे।

सुजल

अभ्यास कार्य

निम्नलिखित विषयों पर लगभग 40 शब्दों में संदेश लिखिए ।

1. खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल करने पर मित्र को बधाई संदेश लिखिए।
2. पदोन्नति होने पर माता जी को बधाई संदेश लिखिए।
3. गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हुए क्षेत्रवासियों को संदेश लिखिए।
4. दीपावली के पर्व पर आमंत्रित करने हेतु मित्र को संदेश लिखिए।
5. वार्षिक परीक्षा की तैयारी हेतु अपने छोटे भाई को शुभकामना संदेश लिखिए।
6. आपके बड़े भाई ने प्रतियोगी परीक्षा में शानदार सफलता हासिल की है इस अवसर पर बधाई संदेश लिखिए।

आदर्श प्रश्न पत्र -1

कक्षा- दसवीं हिन्दी

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक 80**

सामान्य निर्देश :

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए:- इस प्रश्नपत्र में कुल 15 प्रश्न हैं।सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। इस प्रश्नपत्र में कुल चार खंड हैं- क, ख, ग, घ।

- **खंड क में कुल-2 प्रश्न हैं, जिनमें उप-प्रश्नों की संख्या 10 है।**
- **खंड ख में कुल-4 प्रश्न हैं, जिनमें उप-प्रश्नों की संख्या 20 है।**
- **खंड ग में कुल-5 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 16 उप-प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।**
- **खंड घ में कुल-4 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं।**
- **प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए।**

	खंड– (क) अपठित बोध	**अंक 14**
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:**	**7**
	योग भारतीय संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर है।यह केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि मन, शरीर और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने की एक प्रक्रिया है **योग का अर्थ है' जोड़ना–आत्मा को परमात्मा से जोड़ना**। हजारों वर्षों से हमारे ऋषि-मुनियों ने योग को आत्मानुभूति, स्वास्थ्य और जीवन के विकास का साधन माना है। वर्तमान समय में जब लोग तनाव, चिंता,अवसाद और कई शारीरिक बीमारियों से जूझ रहे हैं, योग एक समाधान के रूप में सामने आया है। नियमित रूप से योगाभ्यास करने से मन शांत रहता है, शरीर लचीला और मजबूत बनता तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि योग उच्च रक्तचाप, मधुमेह, अनिद्रा, मोटापा और पीठ दर्द जैसी समस्याओं में अत्यंत लाभकारी है। आज दुनिया के अधिकांश देश योग के महत्व को समझ चुकी हैं। **संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को' अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'** घोषित किया है, जो यह दर्शाता है कि योग अब केवल भारत की ही नहीं, विश्व की धरोहर बन चुका है। विद्यालयों में योग को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है ताकि विद्यार्थी बचपन से ही स्वस्थ जीवन शैली को अपनाएं। योग में केवल आसन और प्राणायाम ही नहीं, बल्कि ध्यान, यम-नियम, प्रत्याहार, धारणा, समाधि आदि भी आते हैं। ये सब मिलकर जीवन को समग्र रूप से सुधारते हैं।जब व्यक्ति अपने भीतर झाँकता है और आत्म-निरीक्षण करता है, तब वह सच्चे अर्थों में शांत और संतुलित जीवन जीने में सक्षम होता है। लेकिन यह भी देखा गया है कि आज के युवा वर्ग में योग के प्रति उतना उत्साह नहीं है जितना होना चाहिए। वे इसे केवल एक शारीरिक क्रिया समझते हैं, जबकि योग एक जीवन दर्शन है। इसके माध्यम से	

	हम न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों में भी संतुलन ला सकते हैं। सरकार, विभिन्न संस्थाएँ और योग गुरुओं के प्रयासों से अब योग शिविरों, टी.वी कार्यक्रमों और ऑनलाइन माध्यमों के द्वारा इसकी जानकारी आम जनता तक पहुँचाई जा रही है। फिर भी यह आवश्यक है कि हम केवल योग दिवस पर ही नहीं, बल्कि प्रतिदिन योग को अपने जीवन में अपनाएँ। अतः यदि हम एक स्वस्थ, सुखी और संतुलित जीवन चाहते हैं, तो योग को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाना होगा। यह न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि सामाजिक समरसता और वैश्विक शांति का भी मार्ग प्रशस्त कर सकता है।	
क	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन**–योग भारतीय संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर है। **कारण**–विद्यालयों में योग को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है 1.कथन तथा कारण दोनों गलत हैं। **2**.कथन गलत है लेकिन कारण सही है। 3.कथन और कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है। 4.कथन और कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
ख	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन**: योग मानसिक तनाव को कम करने में सहायक है। **कारण**: योग में ध्यान और प्राणायाम जैसी तकनीकें मन को शांत करती हैं। 1.कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। 2. कथन सही है लेकिन कारण गलत है। 3.कथन गलत है लेकिन कारण सही है। 4. कथन और कारण दोनों सही हैं लेकिन कारण, कथन की व्याख्या नहीं करता है ।	1
ग	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन**: आजकल विद्यालयों में योग को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। **कारण**: योग से बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास होता है। 1.कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। 2. कथन सही है लेकिन कारण गलत है। 3.कथन गलत है लेकिन कारण सही है 4. कथन और कारण दोनों गलत हैं।	1

घ	योग को जीवन का अभिन्न अंग क्यों बनाना चाहिए?	2
ड़	युवावर्ग योग के प्रति उदासीन क्यों है?	2
प्रश्न 2.	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:**	**7**
	स्वतंत्रता कोई उपहार नहीं,यह अर्जित की जाती है, बलिदानों की मिट्टी से,यह रोपित की जाती है हर अधिकार के संग जुड़ी होती है एक डोर, जो खींचती है हमें कर्तव्यों की ओर। जो केवल अधिकार मांगे, पर कर्म से मुख मोड़े, वह स्वतंत्र नहीं, वह भीतर से कमजोर हो खड़े स्वतंत्र वही जो विचारों से हो विमुक्त, जो सत्य बोले, और अन्याय से हो विमुख वाणी में विवेक हो, आचरण में नीति, स्वतंत्र वही जिसकी चेतना में हो प्रीति प्रगति का मार्ग तभी सु स्पष्ट होगा, जब स्वाधीन मन उत्तरदायित्व को भोगा जिसने अपने भीतर अनुशासन जगाया, उसने ही स्वतंत्रता का अर्थ समझाया नियमों में बंधकर भी जो रहता निडर, वही कहलाता है सच्चा स्वाधीन पथिक लोकतंत्र हो या जीवन की राह, हर स्वाधीनता माँगती है एक चाह उत्तरदायित्व की, आत्मनियंत्रण की, और सेवा-भावना से भरे अंतर्मन की। नदी स्वतंत्र बहती है, पर मर्यादा में, वृक्ष खड़े होते हैं स्वतंत्रता की साधना में पर जब बाँध टूटते हैं या मर्यादा जाती है, तब स्वतंत्रता भी विनाश बन जाती है। इसलिए हे युवा! मत मांगो केवल आज़ादी, मांगो विवेक, सेवा, संयम और जिम्मेदारी यही है वह दीप जो स्वतंत्रता में जलता है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाकर पलता है।	
क	कविता के अनुसार सच्ची स्वतंत्रता किस परिस्थिति में विनाश का कारण बनती है? 1. जब स्वतंत्रता का उत्सव मनाया जाए 2. जब स्वतंत्रता केवल अधिकार बनकर रह जाए।	1

	3. जब स्वतंत्रता मर्यादा और अनुशासन से रहित हो 4. जब लोग स्वतंत्रता को सौभाग्य समझें।	
ख	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन:** सच्ची स्वतंत्रता वही है जो उत्तरदायित्व और अनुशासन के साथ जुड़ी हो । **कारण:** अनुशासन और कर्तव्यबोध से ही समाज में संतुलन और प्रगति आती है। 1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। 2. कथन सही है, कारण गलत है। 3. कथन गलत है, कारण सही है। 4. कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण, कथन की व्याख्या नहीं करता।	1
ग	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन:** केवल अधिकार की माँग करना स्वतंत्रता का सही स्वरूप नहीं है। **कारण:** स्वतंत्रता के साथ कर्तव्यों का पालन आवश्यक नहीं होता। 1. कथन सही है ,कारण गलत है। 2. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। 3. कथन और कारण दोनों गलत हैं। 4.कथन गलत है, कारण सही है।	1
घ	काव्यांश के अनुसार स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए किन मूल्यों का पालन आवश्यक है?	2
ङ	काव्यांश में **नदी और वृक्ष** का उदाहरण किस उद्देश्य से दिया गया है?	2
	खंड–ख व्यावहारिक व्याकरण	
प्रश्न 3.	**निर्देशानुसार रचना के आधार पर वाक्य भेद पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लिखिए:-**	**4x1=4**
क	“यह वही लड़का है **<u>जो कल आया था।</u>** रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए	1
ख	आदतन हालदार साहब ने मूर्ति की ओर देखा और ड्राइवर को गाड़ी रोकने का आदेश दिया। (सरल वाक्य में बदलिए)।	1
ग	मन्नू जी को भी आज़ादी की आँधी ने अछूता नहीं छोड़ा और उन्होंने बढ़-चढ़कर आज़ादी की लड़ाई में भाग लिया। रचना के आधार पर इस वाक्य का भेद लिखिए।	1
घ	**<u>जब बालगोबिन भगत खेतों में रोपाई कर रहे थे-</u>** <u>तब</u> लोग उन्हें कनखियों से देख रहे थे। रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए।	1
ङ.	जब मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया, तब नवाब साहब ने खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। संयुक्त वाक्य में बदलिए।	1
प्रश्न 4.	**निर्देशानुसार‘ वाच्य ’पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लिखिए।**	4x1=4

क	कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।	1
	कॉलम 1 — कॉलम 2 1. कितने कंबल बाँटे गए? — (i) कर्तृवाच्य 2. आइए, बहाँ पर बैठा जाए। — (ii) कर्मवाच्य 3. नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया। — (iii) भाववाच्य	
	विकल्प- (I) 1-ii, 2-iii, 3-i (II) 1-iii, 2-ii, 3-i (III) 1-ii, 2-ii, 3-iii (IV) 1-i, 2-iii, 3-ii	
ख	बिस्मिल्ला खाँ जी द्वारा प्रतिदिन बालाजी के मंदिर में शहनाई वादन किया जाता था। (कर्तृवाच्य में परिवर्तित कीजिए)।	1
ग	मैं एवरेस्ट पर नहीं चढ़ सकता। भाववाच्य में परिवर्तित कर लिखिए	1
घ	"एक सभ्य व्यक्ति किसी नई चीज की खोज नहीं करता है- कर्मवाच्य में परिवर्तित कर लिखिए।	1
ड़.	आओ स्नान किया जाए-वाच्य का भेद लिखिए	1
प्रश्न 5.	**निर्देशानुसार' पद परिचय 'पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए।**	**4x1=4**
क	नवाब साहब **थककर** लेट गए।	1
ख	**यह**भाषा मध्य भारत में बोली जाती है।	1
ग	वक्त काटने के लिए ही खीरे **खरीदे** होंगे।	1
घ	मन की **कोमलता** अक्सर चोट खा जाती है।	1
ङ	अजमेर से पहले **पिताजी** इंदौर में थे जहां उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।	1
प्रश्न 6.	**निर्देशानुसार' अलंकार 'पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए।**	**4x1=4**
क	"सुनत जोग लागत है ऐसौ ज्यौं करुई ककरी"	1
ख	"प्रीति-नदी में पाँव न बोरयौ"	1
ग	तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार-बार मोहि लागि बोलावा।	1
घ	यह दंतुरित मुसकान, मृतक में भी डाल देगी जान	1
ड़	सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा? अभी समय भी नहीं,थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।	1
	खंड-ग (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)	
प्रश्न 7.	**निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए।**	**5x1=5**
	जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वरना तो देशभक्ति भी आजकल मज़ाक की	

	चीज़ होती जा रही है। दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतूहल और बढ़ा। वाह भई! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।	
क	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन:** हालदार साहब को मूर्ति का चश्मा बदलना एक अच्छा आइडिया लगा। **कारण:** मूर्तियाँ समय के साथ खुद को आधुनिक बनाने की कोशिश करती हैं। विकल्प- 1. कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। 2. कथन और कारण दोनों सही हैं, पर कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता। 3. कथन सही है, पर कारण गलत है। 4. कथन गलत है, पर कारण सही है।	1
ख	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन**: हालदार साहब का मानना था कि मूर्ति का महत्त्व उसकी भावना में है। **कारण**: क्योंकि मूर्ति का रंग- रूप या आकार देशभक्ति की भावना का प्रतिनिधित्व नहीं करता। विकल्प- A) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। B) कथन और कारण दोनों सही हैं, पर कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता। C) कथन सही है, पर कारण गलत है। D) कथन गलत है, पर कारण सही है।	1
ग	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन:** हालदार साहब को मूर्ति के बदलाव से कौतूहल हुआ। **कारण**: क्योंकि मूर्ति में भावनाएँ थीं जो बदल सकती थीं। विकल्प- (A) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (B)कथन और कारण दोनों सही हैं,पर कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।	1

	(C) कथन सही है, पर कारण गलत है। (D) कथन गलत है, पर कारण सही है।	
घ	दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुजरे तो उन्हें मूर्ति में क्या अंतर दिखाई दिया? 1. मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं था। 2. मूर्ति पर पुराना चश्मा था। 3. मूर्ति पर एक नया चश्मा था। 4. मूर्ति क्षतिग्रस्त थी।	1
ड.	देशभक्ति आजकल क्या होती जा रही है? कथन के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1. सम्मान की चीज़ 2. मज़ाक की चीज़ 3. दिखावे की चीज़ 4. सोचने की चीज़ विकल्प 1. कथन 1 सही है। 2. कथन 2 सही हैं। 3.कथन 3 सही है। 4. कथन 3 और 4 सही हैं।	1
प्रश्न 8.	**गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए।**	**3x2=6**
क	बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है? लिखिए	2
ख	बिस्मिल्ला खान को वास्तविक अर्थों में सच्चा इंसान क्यों कहा गया है? अपने शब्दों में लिखिए।	2
ग	लेखक ने नवाब साहब के सामने की बर्थ पर बैठकर भी आँखे क्यों चुराई? लखनवी अंदाज पाठ के आधार पर लिखिए।	2
घ	किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए **सुई-धागे व आग** का आविष्कार हुआ? स्पष्ट कीजिए।	2
प्रश्न 9.	**निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए।**	**5x1=5**
	नाथ संभुधनु भंजनिहारा ,होइहि केउ एक दास तुम्हारा।। आयेसु का कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।। सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।। सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा, सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।। सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥ सुनि मुनिवचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने॥ बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥ एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥ रे नृप बालक कालबस बोलत तोहि न सँभार। धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।	
क	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।	1

	कथन : शिव धनुष को तोड़ने वाला सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। **कारण** : धनुष को तोड़ने वाले ने परशुराम के गुरु भगवान शिव का धनुष तोड़ा था। विकल्प- A) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। B) कथन और कारण दोनों सही हैं, पर कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता। C) कथन सही है, पर कारण गलत है। D) कथन गलत है, पर कारण सही है।	
ख	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यान पूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन** : राम ने कहा शिव धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई सेवक होगा। **कारण** : राम ने परशुराम के डर से ऐसा कहा। विकल्प- 1. कथन तथा कारण दोनों गलत हैं। 2. कथन गलत है, लेकिन कारण सही है। 3. कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। 4. कथन सही है, किंतु कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता है।	1
ग	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन:** इस धनुष से इतना लगाव क्यों है? **कारण:** यह तीन लोकों के स्वामी भगवान शिव का धनुष है। विकल्प- 1. कथन तथा कारण दोनों गलत हैं। 2. कथन गलत है ,लेकिन कारण सही है। 3. कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। 4. कथन सही है ,किंतु कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता है।	1
घ	परशुराम के वचन सुनकर लक्ष्मण मुस्कुराते हैं- कथन के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए– 1. परशुराम की चेतावनी सुनकर 2. परशुराम की बातें सुनकर 3. परशुराम को देखक 4. लोगों को देखकर विकल्प 1. कथन 1 सही है 2. कथन 1 और 2 सही है	1

	3. कथन 3 सही है 4 .कथन 3 और 4 सही हैं	
ड.	परशुराम जी ने धनुष के टूटने पर सभा में क्या-क्या कहा? कथन के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए। 1. धनुष को तोड़ने वाला सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। 2. बचपन में मैंने ऐसे बहुत धनुष तोड़े हैं । 3. धनुष को तोड़ने वाले ने मेरे गुरु का अपमान किया है। 4. यह भगवान शिव का धनुष है इसे सारा संसार जानता है। विकल्प- 1. कथन 1 व 2 सही है 2. कथन 3 ,4 1 ,सही है 3. कथन 2 सही है 4. कथन 2 ,1 व 3 सही है	1
प्रश्न 10.	**पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए।**	**3x2=6**
क	कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?	2
ख	आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में' अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?	2
ग	कवि ने बच्चे की मुसकान के सौन्दर्य को किन-किन बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है?	2
घ	**उत्साह** कविता में बादल किन-किन अर्थों में प्रयोग हुआ है?	2
प्रश्न 11.	**पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए।**	2x4=8
क	'माता का अँचल 'पाठ में आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है? उदाहरण सहित लिखिए।	4
ख	**'कटाओ'** में किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए।	4
ग	कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दवाब भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये **बाह्य दवाब कौन-कौन से** हो सकते हैं?	4
	खंड-घ (रचनात्मक लेखन)	
प्रश्न 12.	**निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए।**	**6**
क	**परीक्षा- सफलता का आधार** **संकेत-बिंदु-** परीक्षा की उपयोगिता, परीक्षा जीवन की कसौटी, परीक्षा में सफलता के उपाय	
ख	**पर्यावरण संरक्षण: समय की मांग** **संकेत-बिंदु-** भूमिका ,मानव और पर्यावरण में संबंध, संरक्षण की आवश्यकता, सुझाव	
ग	**जंक फूड और युवा पीढ़ी**	

	संकेत-बिंदु- जंक फूड क्या होता है,? युवा पीढ़ी और जंक फूड, जंक फूड खाने के दुष्परिणाम	
प्रश्न 13.	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग पत्र लिखिए।**	**5**
	आप **गौरव/ गौरी** हैं। अपने क्षेत्र में बढ़ती आपराधिक घट्नाओं से हो रही असुविधा को दर्शाते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। **अथवा** आप **मोहित/ मन्नत** हैं। आपके छोटे भाई ने हाल ही में पढ़ाई के लिए मोबाइल लिया है। उसको मोबाइल का सावधानी से उपयोग करने की बात समझाते हुए एक पत्र लिखिए।	
प्रश्न 14.	आप **दीपक / दीपा** हैं।आप बी.टैक कर चुके हैं। एक नामी कंपनी में इंजीनियर के पद के लिए आवेदन करना चाहते है। इसके लिए एक स्ववृत लगभग 80 शब्दों में लिखिए। **अथवा** आप **मिहिर / महक** हैं। हाल ही में अपनी हवाई यात्रा के दौरान आपका बैग खो गया है, इसकी शिकायत करते हुए सेवा प्रदाता कंपनी के प्रबंधक को एक ई-मेल लिखिए।	5
प्रश्न 15.	"**स्वच्छ भारत मिशन**" बिषय पर लगभग 30-40 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। **अथवा** **'पेड़ लगाओ,धरा बचाओ'** विषय के संबंध में जागरूक करते हुए क्षेत्र के निवासियों को एक संदेश लिखिए।	4

आदर्श प्रश्न पत्र- 2

	खंड-क (अपठित बोध)	**अंक 14**
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढकर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**7**
	तुलसी जैसा कवि काव्य की विशुद्ध, मनोमयी, कल्पना-प्रवण तथा शृंगारात्मक भावभूमियों के प्रति उत्साही नहीं हो सकता। उनका संत-हृदय परम कारुणिक राम के प्रति ही उन्मुख हो सकता है, जो जीवन के धर्ममय सौंदर्य, मर्यादापूर्ण, शील और आत्मिक शौर्य के प्रतीक हैं। विजय-रथ के रूपक में उन्होंने संत जीवन की रूपरेखा उभारी है और अपनी रामकथा को इसी संतत्व की चरितार्थता बना दिया है। उनका काव्य भारतीय जीवन की सबसे बड़ी आकांक्षा मर्यादित जीवन-चर्या अथवा 'संत-जीवन' को वाणी देता है। धर्ममय जीवन की आकांक्षा भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य है।	

	तुलसी के काव्य में धर्म का अनाविल, अनावरण और अक्षुण्ण रूप ही प्रकट हुआ है। मध्ययुग की आध्यात्मिकता का प्रतिनिधित्व करते हुए भी उनका काव्य भारतीय आत्मा के चिरंतन सौदर्य का प्रतिनिधि है, जो सत्य, तप, करुणा और मैत्री में ही आरोहण के देवधर्मी मूल्यों को अनावृ तकरता है। उनके काव्य में हमें श्रेष्ठ कवित्व ही नहीं मिलता, उसके आधार पर हम संत-कवित्व की रूपरेखा भी निर्धारित कर सकते हैं। भक्ति उनके जीवन की आंतरिक भाव-साधना है। इस भाव-साधना की वाणी की अप्रतिम क्षमता देकर उन्होंने निष्कंप दीपशिखा की भाँति अपनी काव्य-कला को नि:संग और निवैयक्तिक दीप्ति से भरा है।	
क	**निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-** 1. तुलसी मनोमयी, कल्पना-प्रवण तथा श्रृंगारात्मक कवियों में अग्रणी हैं। 2. तुलसी जी एक सच्चे संत हैं। 3. तुलसी जी का काव्य भारतीय आत्मा के चिरंतन सौदर्य का प्रतीक है। 4. तुलसी जी ने श्रीराम का मर्यादित रूप प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा /से कथन सही है/हैं? (i) 1 और 2 (ii) 2, 3 और 4 (iii) 1 और 3 (iv) केवल 4	1
ख	**गद्यांश के आधार पर बताइए कि कवि तुलसी में किस के प्रति उत्साह नहीं है?** (i) भक्ति-भाव को अभिव्यक्त करने के प्रति (ii) धर्ममय जीवन जीने के प्रति (iii) विशुद्ध / कल्पनामय काव्य प्रणयन के प्रति (iv) संत कवि के प्रणयन के प्रति	1
ग	**कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए?** **कथन (A) तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोतम हैं।** **कारण (R) तुलसीं के राम जीवन के धर्ममय सौंदर्य, मर्यादापूर्ण, शील और आत्मिक शौर्य से परिपूर्ण हैं।** (i) कथन A गलत है किंतु कारण R सही है। (ii) कथन A और कारण R दोनों गलत हैं। (iii) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है। (iv) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
घ	तुलसी के काव्य में भारतीय जीवन की कौन-सी सबसे बड़ी अभिलाषा व्यक्त है?	2
ड.	तुलसी के काव्य में धर्म का कैसा रूप प्रकट हुआ है?	2
प्रश्न 2.	**नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**7**

	तुम बना सकोगे भू तल का इतिहास नया मैं गिरे हुए को बढ़कर गले लगाऊँगा क्यों नीच,ऊँच, कुल, जाति, रंग का भेदभाव मैं रूढ़िवाद का कल्मष महल ढहाऊँगा तुम बढ़ा सकोगे कदम ज्वलित अंगारों पर मैं कांटों पर विधते-विधते बढ़ जाऊंगा सागर की विस्तृत छाती पर हो ज्वार नया मैं कूद स्वयं पतवार हाथ में थामूगाँ है अगर तुम्हें यह भूख, मुझे भी जीना है तो आओ मेरे साथ नींव में गढ़ जाओ ऊपर से निर्मित होना है आनंद महल मरते-मरते भी दुनिया में कुछ कर जाओ	
क	नीव में गड़ने का क्या अर्थ है - (i) आधार बनना (ii) नि:स्वार्थ भाव से समर्पण करना (iii) स्वयं को नष्ट करना (iv) मर जाना केवल विकल्प i सही विकल्प ii सही विकल्प i, ii , iii सही विकल्प I, iii, iv सही	1
ख	समाज की पुरानी रूढ़ियाँ क्या है? (i) ऊंच-नीच (ii) जातिवाद (iii) रंग भेद (iv) यह सभी	1
ग	कथन (A) कवि शोषित है जो महल के लिए नींव में गड़ जाना चाहता है। कारण (R) वह और किसी के महल के लिए खुद मर जाना चाहता है। कथन A और कारण R को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए। कथन A गलत किंतु कारण (R) सही है। कथन A और कारण R दोनों ही गलत है। कथन A सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या है। कथन A सही है किंतु कारण R कथन A ही सही व्याख्या नहीं है।	1
घ	कवि भू तल का नया इतिहास कैसे बनाएगा?	2
ड	देश और समाज के कल्याण के लिए किन-किन चुनौतियों से लड़ना होगा?	2
	खंड- ख (व्यावहारिक व्याकरण)	16
प्रश्न 3.	**निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित वाक्य में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**4x1=4**

क	यह जरूर है कि शहनाई और डुमराँव एक दूसरे के लिए उपयोगी हैं। (आश्रित उपवाक्य छाँटकर भेद भी लिखिए)	1
ख	काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्‍भुत परंपरा है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)	1
ग	हालदार का प्रश्न सुनकर वह हँसा (संयुक्त वाक्य में बदलिए)	1
घ	कार्तिक आया नहीं कि बालगोविंन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुई। (सरल वाक्य में बदलिए)	1
ड	वह आलसी था, इसलिए विफल हुआ (रचना की दृष्टि से वाक्य भेद लिखिए)	1
प्रश्न 4.	**निर्देशानुसार वाक्य पर आधारित पाँच वाक्य में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**4x1=4**
क	हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया (कर्मवाच्य में बदलिए)	1
ख	पानवाला नया पान खा रहा था (भाववाच्य में बदलिए)	1
ग	नवाब साहब ने जेब से चाकू निकाला और खीरे छीलने शुरू कर दिए। (वाच्य पहचानकर भेद बताइए)	1
घ	मीना द्‍वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)	1
ड	वाच्य किसे कहते हैं?	1
प्रश्न 5.	**निर्देशानुसार पद परिचय पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए।**	**4x1=4**
क	जब **<u>हम</u>** रेलवे स्टेशन पहुँचे गाड़ी छूट रही थी।	1
ख	भारतीय सैनिक रणक्षेत्र में **<u>वीरता</u>** दिखाते हैं और शत्रुओं को सबक सिखाते हैं।	1
ग	**<u>अरे!</u>** आप आ गए।	1
घ	ऋषि ने पेड़ लगाए **<u>ताकि</u>** फल और छाया मिले।	1
ड	जयशंकर प्रसाद ने **<u>प्रसिद्‍ध</u>** कहानियाँ लिखीं।	1
प्रश्न 6.	**निर्देशानुसार अलंकार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों की रेखांकित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए।**	**4x1=4**

क	कहती हुई यो उतरा के, यों नेत्र जल से भर गए हिमकणों से पूर्ण मानों, हो गए पंकज नए	1
ख	तनकर भाला यह बोल उठा- राणा मुझको विश्राम न दे! मुझको शोणित की प्यास लगी बढ़ने दे, शोणित पीने दे।	1
ग	जिस वीरता से शत्रुओं का सामना उसने किया असमर्थ हो उसके कथन में मौन वाणी ने लिया।	1
घ	बीती विभावरी जाग री! अंबर पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा-नागरी	1
ङ	मुख बाल-रवि-सम लाल होकर ज्वाल- सा बोधित हुआ।	1
	खंड- ग (पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)	**30**
प्रश्न 7.	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	**5x1=5**
	कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का छोटा-सा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एक ठो नगरपालिका भी थी। नगरपालिका थी तो कुछ -न-कुछ करती भी रहती थी। कभी कोई सड़क पक्की करवा दी, कभी कुछ पेशाब घर बनवा दिए, कभी कबूतरों की छतरी बनवा दी तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। इसी नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार 'शहर' के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी।	
क	**नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी- कथन के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए।** I. कभी कोई सड़क पक्की करवा दी II. कबूतरों के लिए छतरी बनवा दी III. सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा मुख्य चौराहे पर लगवा दी IV. गाने-बजाने का कार्यक्रम करवाती थी **विकल्प-** (क) कथन I और II सही हैं (ख) कथन I, II और III सही हैं (ग) केवल कथन IV सही है (घ) कथन I, II और IV सही हैं	1

ख	**कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए।** **कथन: (A) कस्बा बहुत बड़ा नहीं था।** **कारण: (R) कस्बे में एक बाज़ार भी था।** (क) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है। (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं। (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है। (घ) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
ग	**कस्बे में क्या-क्या था?** (क) एक लड़कों का स्कूल (ख) एक सीमेंट का छोटा-सा कारखाना (ग) दो ओपन एयर सिनेमाघर (घ) उपर्युक्त सभी	1
घ	**नगरपालिका क्या कार्य करती थी?** (क) सड़क पक्की करवाना (ख) पेशाबघर बनवाना (ग) कबूतरों की छतरी बनवाना (घ) उपर्युक्त सभी	1
ङ	**शहर के मुख्य बाज़ार में सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा किसके द्वारा लगाई गई थी? उचित विकल्प का चयन कीजिए।** I. पानवाले ने प्रतिमा लगवाई थी II. कैप्टन ने प्रतिमा लगवाई थी III. मास्टर ने प्रतिमा लगवाई थी IV. नगरपालिका द्वारा प्रतिमा लगवाई गई थी **विकल्प -** (क) कथन I और II सही हैं (ख) कथन I, III और IV सही हैं (ग) केवल कथन IV सही हैं (घ) कथन I, II और IV सही हैं	1
प्रश्न 8.	**गद्य खंड के निर्धारित पाठों में से निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं <u>तीन प्रश्नों</u> के उत्तर 25- 30 शब्दों में दीजिए।**	**3x2=6**
क	मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है? स्पष्ट कीजिए	2
ख	बालगोविंन भगत एक उच्च कोटि के समाज सुधारक थे। यह उनके जीवन की किन घटनाओं से सिद्ध होता है?	2
ग	लेखिका मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा? उदाहरण सहित उत्तर लिखिए।	2
घ	बिस्मिल्ला खां के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?	2

प्रश्न 9.	**निम्नलिखित पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।** नाथ संभुधनु भंजनिहारा, होइहि केउ एक दास तुम्हारा आयेसु का कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राज सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुर धरहि अवमाने बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतु	**5x1=5**
क	परशुराम के क्रोध का कारण क्या था ? i. उनका राम ने अपमान किया था। ii. उनका लक्ष्मण ने अपमान किया था iii. वह स्वभाव से ही क्रोधी थे iv. उनके गुरु भगवान शंकर का धनुष किसी ने भंग कर दिया था दिए गए कथन के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- 1. विकल्प i सही है 2. विकल्प i व ii सही है 3. विकल्प I, ii, iii सही है 4. विकल्प iv सही है	1
ख	शंभुधनु का अर्थ स्पष्ट कीजिए- i. शंभू जी का धन ii. शंभू रूपी धन iii. शंभू जी का धनुष iv. शंभू जी की गाय	1
ग	कथन: A परशुराम के अनुसार शिव के धनुष को तोड़ने वाला उनका शत्रु है। कारण: R लक्ष्मण बहुत अधिक वीर व क्रोधी स्वभाव के थे। कथन A और कारण R को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए। i. कथन A गलत किंतु कारण R सही है ii. कथन A और कारण R दोनों ही गलत है iii. कथन A सही है और करण R कथन की सही व्याख्या है iv. कथन A सही है किंतु कारण R कथन A की सही व्याख्या नहीं है	1
घ	भगवान शंकर का पर्यायवाची क्या है/हैं? i. सहस्रबाहु ii. शिव iii. शंभू iv. त्रिपुरारी उपर्युक्त कथन के लिए सही विकल्प कौन-सा है? 1. विकल्प i और iv सही हैं 2. विकल्प i, व ii सही हैं 3. विकल्प ii व iii सही हैं 4. विकल्प ii, iii, iv सही हैं	1

ड.	सभा में लक्ष्मण के मुस्कुराने का कारण क्या था? i. धनुष तोड़ने की खुशी में ii. परशुराम की शेखी पर iii. राम की वीरता दिखाने के लिए iv. वहाँ मचे बवाल पर	1
प्रश्न 10.	**निर्धारित काव्य पाठों में से दिए गए निम्नलिखित चार प्रश्नों में से <u>किन्हीं तीन</u> प्रश्नों का उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में दीजिए।**	**3x2=6**
क	कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है? सूरदास के पद के आधार पर बताइए।	2
ख	लक्ष्मण ने किन तर्कों से सिद्ध करना चाहा कि धनुष टूट जाने में राम का कोई दोष नहीं है?	2
ग	कवि जयशंकर प्रसाद ने आत्मकथा न लिखने के कौन- कौन से तर्क दिए हैं?	2
घ	उत्साह कविता में कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कहता है? बादल से कवि की अन्य अपेक्षाएं क्या है?	2
प्रश्न 11.	**पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं <u>दो प्रश्नों</u> के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।**	**2x4=8**
क	**माता का अँचल** पाठ में आए ऐसे किन्ही दो प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों?	4
ख	कवी लोंग -स्टाक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक सी क्यों दिखाई दी? स्पष्ट कीजिए।	4
ग	एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग को रोकने में आपकी क्या भूमिका हो सकती है? उदाहरण दीजिए।	4
	खंड-घ (रचनात्मक लेखन)	**20**
प्रश्न 12.	**निम्नलिखित किन्हीं तीन विषयों में से <u>एक विषय</u> पर दिए गए संकेत बिंदुओं की सहायता से लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखें।** **क. मजदूरों की समस्याएँ** * उचित मजदूरी नहीं मिलना * कार्यस्थल तथा आवास स्थल पर सुविधाओं का अभाव * दक्षता अनुकूल कार्य नहीं मिलना * संघर्षपूर्ण जीवन **ख. स्वच्छ भारत अभियान: एक वरदान** * उद्देश्य * देश के विकास में स्वच्छता का योगदान	**6**

	⁎ गंदगी को रोकने के उपाय ⁎ जागरूक नागरिक के रूप में आपकी भूमिका **ग. स्वास्थ्य की रक्षा** ⁎ आवश्यकता ⁎ पोषित भोजन और व्यायाम ⁎ लाभदायक सुझाव	
प्रश्न 13.	किसी लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के संपादक को अपनी कविता प्रकाशित करवाने का अनुरोध करते हुए एक पत्र लिखिए। अथवा अपने राज्य के ग्रामीण इलाकों में पुस्तकालय स्थापित करने हेतु मुख्य सचिव को पत्र लिखिए।	5
प्रश्न 14.	आपका नाम **सुधा /अनुपम** है| आपके शहर में एक नया विद्यालय खुला है जहाँ कंप्यूटर शिक्षक का पद रिक्त है आप निर्धारित योग्यता को पूर्ण करते है। रिक्त पद के लिए आवेदन करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक स्ववृत तैयार कीजिए। **अथवा** आपका नाम **रक्षा /रक्षित** है। अपने क्षेत्र में जलभराव की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अपने शहर के नगर निगम /नगरपालिका को 80 शब्दों में एक ई-मेल लिखिए।	4
प्रश्न 15.	**सौर ऊर्जा** के प्रयोग हेतु जन जागरण के उद्देश्य से बिजली विभाग द्वारा जारी एक विज्ञापन तैयार कीजिए। **अथवा** अपने **प्रिय बहन-जीजा** की पहली वैवाहिक वर्षगाँठ के अवसर पर उनके लिए बधाई सन्देश लिखिए।	4

अंक योजना

आदर्श प्रश्न पत्र- 1

कक्षा -दसवीं

निधारित समय: 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य उद्देश्य:

अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। प्रश्न पत्र में बहुविकल्पीय एवं वर्णानात्मक प्रश्न है।

- अंक योजना में दिए गए वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तरबिंदु अंतिम नहीं है बल्कि सांकेतिक है।
- **यदि परीक्षार्थी इन उत्तर बिन्दुओं से भिन्न तर्कसंगत उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ**। मूल्यांकन कार्य अपनी **निजी व्याख्या के अनुसार नहीं** बल्कि अंक योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार किया जाए।
- एक ही प्रकार की अशुद्धि पर अंक न काटा जाए।

	खंड -क अपठित बोध	अंक
प्रश्न 1.	निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:	7
	योग भारतीय संस्कृति ....प्रशस्त कर सकता है।	
क	3. कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।	1
ख	1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	1
ग	1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	1
घ	योग को जीवन का अभिन्न अंग इसलिए बनाना चाहिए क्योंकि यह शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन प्रदान करता है। यह न केवल रोगों से बचाता है, बल्कि आत्मविकास और आत्मनिरीक्षण का भी मार्ग है।	2
ङ	युवा वर्ग योग को केवल एक शारीरिक क्रिया समझता है और उसके आध्यात्मिक व मानसिक लाभों की गहराई को नहीं समझता। इसी कारण वे योग के प्रति कम उत्साहित होते हैं।	2
प्रश्न 2.	स्वतंत्रता कोई उपहार नहीं, ...मनुष्य बनाकर पलता है।	7
क	3. जब स्वतंत्रता मर्यादा और अनुशासन से रहित हो।	1
ख	1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	1
ग	1. कथन सही है, कारण गलत है।	1
घ	काव्यांश के अनुसार स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए अनुशासन,उत्तरदायित्व,सेवाभावना, संयम और विवेक का पालन आवश्यक है। ये मूल्य स्वतंत्रता को मर्यादित और अर्थपूर्ण बनाते हैं।	2
ङ	काव्यांश में **नदी और वृक्ष** का उदाहरण यह बताने के लिए दिया गया है कि वे स्वतंत्र होते हुए भी मर्यादा में रहते हैं। यह दर्शाता है कि सच्ची स्वतंत्रता वही है जो सीमाओं और ज़िम्मेदारियों के भीतर हो।	2
	खंड- ख (व्यावहारिक व्याकरण)	16
प्रश्न 3.	**निर्देशानुसार" रचना के आधार पर वाक्य भेद "पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	**4**
1	विशेषण आश्रित उपवाक्य	1
2	हालदार साहब ने मूर्ति की ओर देखते ही ड्राइवर को गाड़ी रोकने का आदेश दिया।	1
3	संयुक्त वाक्य	1
4	क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य	1
5	मुँह में भर आए पानी का घूंट गले से उतरा और नवाब साहब ने खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया।	1
प्रश्न 4.	**निर्देशानुसार" वाच्य "पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**	4

1	2. i-3 ii-1 iii-2	1
2	बिस्मिल्ला खां जी प्रतिदिन बालाजी के मंदिर में शहनाई वादन करते थे।	1
3	मुझसे एवरेस्ट पर नहीं चढ़ा जा सकता।	1
4	एक सभ्य व्यक्ति के द्वारा किसी नई चीज की खोज नहीं की जाती है।	1
5	भाववाच्य	1
प्रश्न 5.	**निर्देशानुसार" पद परिचय "पर आधारित पाँच प्रश्नों में से <u>किन्हीं चार</u> रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए।**	**4**
1	रीतिवाचक क्रियाविशेषण, लेट गए क्रिया की विशेषता	1
2	सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य	1
3	सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, भूतकाल	1
4	भाववाचक संज्ञा ,एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्मकारक	1
5	जातिवाचक संज्ञा ,एकवचन, पुल्लिंग	1
प्रश्न 6.	**निर्देशानुसार अलंकार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों की रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए।**	4
1	उपमा अलंकार 2.रूपक 3.उत्प्रेक्षा 4. अतिशयोक्ति अलंकार 5. मानवीकरण अलंकार	4
	खंड- ग (पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)	30
प्रश्न 7.	निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए। जीप कस्बा छोड़कर ....चश्मा तो बदल ही सकती है।	5
1	3 कथन सही है, पर कारण गलत है।	1
2	1 कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
3	3 कथन सही है, पर कारण गलत है।	1
4	3 मूर्ति पर एक नया चश्मा था।	1
5	1. कथन 1 सही है।	1
प्रश्न 8.	गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।	3X2 =6
क	बालगोबिन भगत कबीर को ही अपना साहब मानते थे उनके नियमों का यथासंभव पालन करते थे। • कबीर के बताए आदर्शों पर चलते थे। • भगत कबीर की ही भांति आडम्बरों का विरोध करते थे। • कबीर के रचित पदों को गाते थे। • खेत में जो भी उपज होती है उसे लेकर कबीरपंथी मठ में पहुँच जाते थे तथा प्रसाद के रूप में जो कुछ भी मिल जाता उसी से जीवनयापन करते थे।	2
ख	• बिस्मिल्ला खाँ सच्चे इंसान थे, उन्हें बिलकुल भी अहंकार नहीं था। • वे सभी धर्मों का आदर करते थे, वे भारतरत्न से सम्मानित हुए • वे खुदा से सच्चे सुरों की प्रार्थना करते थे और उन्होंने हिन्दू मुसलमानों को	2

	एक होने और भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा दी	
ग	लेखक ने नवाब साहब के सामने की बर्थ पर बैठकर भी आँखे चुराई • लेखक का सेकण्ड क्लास के खाली डिब्बे में चढ़ना • एक बर्थ पर नवाब साहब का बैठे होना • नवाब साहब संगति के लिए कोई उत्साह न दिखाना • नवाब के व्यवहार से लेखक को अपना अपमान लगना • नवाब साहब को लेखक द्वारा अनदेखा कर देना	2
घ	मानव ने अपने शरीर को ढकने ,सुंदर दिखने और गर्मी- सर्दी से बचने ,भोजन पकाकर खाने के लिए सुई धागे व आग का आविष्कार किया होगा।	2
प्रश्न 9.	**निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए।** नाथ संभुधनु भंजनिहारा ....बिदित सकल संसार।।	5
1	3. कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
2	कथन 4 सही है, किंतु कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता है।	1
3	3. कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
4	2. कथन 1 और 2 सही हैं।	1
5	1. कथन 3 ,1 व 4 सही है।	1
प्रश्न 10.	**पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	6
क	गोपियों ने कृष्ण के प्रति प्रेम को निम्न रूप में अभिव्यक्त किया है। i. गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में उसी प्रकार अनुरक्त हैं जैसे गुड़ से चींटी चिपक जाती हैं। ii. गोपियाँ हारिल पक्षी की लकड़ी के समान कृष्ण को थामे हुए हैं और उन्हें ही अपने जीवन जीने का एकमात्र सहारा मानती हैं। iii. वे जागते, सोते, सपने में, दिन-रात श्री कृष्ण की ही रट लगाती हैं। iv) वे श्रीकृष्ण के प्रति मन, कर्म और बचन से समर्पित हैं।	2
ख	कवि के हृदय में अनेक दुःख और स्मृतियाँ सोई पड़ी हैं, अभी उनको याद करना उचित नहीं है। यदि वे सोई स्मृतियों को जगाएँगे तो हृदय को पीड़ा ही पहुँचेगी इसलिए कवि कहता है कि अभी समय भी नहीं है,उनकी मौन व्यथा सो रही है।	2
ग	कवि ने बच्चे की मुसकान के सौन्दर्य को निम्न बिम्बों के द्वारा व्यक्त किया है। मृतक में जीवन का संचार करना। कमल का फूल खिलना ,कठोर हृदय का पिघलना। बाँस और बबूल जैसे व्यक्तियों के भीतर से शेफ़ालिका के फूल झरने लग जाते हैं।	2
घ	कविता में बादल दो अर्थों की ओर संकेत करता है। i. पीड़ित तथा प्यासे जन की आकांक्षा को पूर्ण कर उन्हें नवजीवन प्रदान करना। ii. नई कल्पना को जाग्रत करने के लिए विध्वंस और क्रान्ति चेतना को जगाने वाला।	2

प्रश्न 11.	**पूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।**	2x4 =8
क	सभी बच्चों में अपनी हम उम्र बच्चों के साथ खेलने की स्वाभाविक आदत है। उन्हें उनके साथ खेलने में बहुत आनंद आता है। बड़ों के साथ खेलने में उन्हें इतना आनंद नहीं आता है। इसके साथ ही बच्चों को अपने साथियों और मित्रों के सामने रोने या सिसकने में **शर्मिन्दगी** का अनुभव होता है तथा वे **हँसी का पात्र** भी बन सकते हैं। भोलानाथ भी अपने साथियों के साथ खेलने का मौका नहीं छोड़ना चाहता था इसीलिए वह उन्हें देखकर सिसकना भूल जाता है।	4
ख	अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण ही '**कटाओ**' को धरती का स्विटज़रलैंड कहा जाता है। 'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है क्योंकि कटाओ अभी तक टूरिस्ट स्पॉट नहीं बना था इसलिए वहाँ पर कोई भी दुकान नहीं थी। अगर वहाँ दुकानें होती, टूरिस्ट होते तो वहाँ पर गंदगी अवश्य फैलती और प्रकृति को नुकसान होता इसलिए कटाओ में किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है।	4
ग	लेखक के लिए आत्मानुभूति एवं स्वयं के अनुभव तो लिखने के लिए प्रेरित करते हैं पर साथ ही बाहरी दवाब भी महत्त्वपूर्ण होते हैं। ये दवाब विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं; जैसे सम्पादकों का आग्रह हो सकता है या लेखक ये दवाब -की आर्थिक स्थिति भी हो सकती है। इसके अलावा सामाजिक परिस्थितियाँ भी रचनाकारों पर दवाब बनाती हैं।	4
	खंड-घ (रचनात्मक लेखन)	**20 अंक**
प्रश्न 12.	**निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।**	6
	भूमिका-1 अंक , विषयवस्तु- 3 अंक , निष्कर्ष- 1 अंक , भाषा शुद्धता- 1 अंक	
प्रश्न 13.	**किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए।** प्रारूप- 1 अंक, विषयवस्तु-3 अंक, भाषा शुद्धता- 1 अंक	5
प्रश्न 14.	**स्ववृत लेखन** प्रारूप- 1 अंक, विषयवस्तु- 3 अंक, भाषा शुद्धता- 1 अंक **अथवा** ई- मेल लेखन प्रारूप-1 अंक, विषयवस्तु-3 अंक, भाषा शुद्धता- 1 अंक	5
प्रश्न 15.	**विज्ञापन लेखन** रचनात्मक प्रस्तुति- 1 अंक, विषयवस्तु- 3 अंक, भाषा शुद्धता- 1 अंक **अथवा** **सन्देश लेखन** रचनात्मक प्रस्तुति- 1 अंक, विषयवस्तु- 3 अंक, भाषा शुद्धता- 1 अंक	4

अंक योजना

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र- 2

	खंड- क (अपठित बोध)	अंक 14
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**7**
क	ii. 2, 3 और 4	1
ख	iii. विशुद्ध एवं कल्पनामय काव्य प्रणयन के प्रति	1
ग	कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।	1
घ	तुलसी के काव्य में जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा मर्यादित जीवन-चर्या एवं सयंमित जीवन जीना है जो कि भारतीय संस्कृति की विशेषता है।	2
ड.	तुलसी के काव्य में धर्म का अनाविल, अनावरण और अक्षुण्ण रूप ही प्रकट हुआ है।	2
प्रश्न 2.	**नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**7**
क	निस्वार्थ भाव से समर्पण करना	1
ख	यह सभी	1
ग	कथन A और कारण R दोनों ही गलत है	1
घ	कवि दलित पीड़ित लोगों को गले लगाकर उनका उत्थान करेगा इस प्रकार वह एक उन्नत समतावादी समाज की रचना का नया इतिहास रचेगा।	2
ड	देश और समाज के कल्याण के लिए ऊँच-नीच, कुल- जाति और रंगभेद की रूढ़ियों से लड़ना होगा।	2
	खण्ड- ख (व्यावहारिक व्याकरण)	16
प्रश्न 3.	**निर्देशानुसार‘ रचना के आधार पर वाक्य भेद’ पर आधारित वाक्य में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**1x4 =4**
क	शहनाई और डुमराव एक दूसरे के लिए उपयोगी हैं- संज्ञा उपवाक्य	1
ख	काशी की यह प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है कि यहाँ संगीत आयोजन होते हैं।	1

ग	उसने हालदार का प्रश्न सुना और वह हँस पड़ा।	1
घ	कार्तिक आते ही बालगोबिन भगत की प्रभातियां शुरू हो गई।	1
ड	संयुक्त वाक्य	1
प्रश्न 4.	**निर्देशानुसार वाच्य पर आधारि पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**1x4 =4**
क	हलदार साहब द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।	1
ख	पानवाले द्वारा नया पान खाया जा रहा था।	1
ग घ.	कर्तृवाच्य मीना पुस्तक पढ़ती है।	1 1
ड	वाच्य किसे कहते हैं? क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है कर्म है अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।	1
प्रश्न 5.	**निर्देशानुसा पद परिचय पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए।**	**1x4 =4**
क	1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक, पहुँचे क्रिया का कर्ता	1
ख	1. भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक	1
ग	विस्मयादिबोधक अव्यय, विस्मय का भाव प्रकट हो रहा है।	1
घ	अव्यय, समुच्चयबोधक, दो वाक्यों के योजक का कार्य हो रहा है।	1
ड	गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य- कहानियाँ	1
प्रश्न 6.	**निर्देशानुसार अलंकार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों की रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए।** **1. उत्प्रेक्षा 2. मानवीकरण अलंकार 3. अतिशयोक्ति अलंकार 4. रूपक 5. उपमा**	**1x4 =4**
	खंड- ग (पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक पर आधारित प्रश्न)	30
प्रश्न 7.	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उतर दीजिए।**	**5x1 =5**
क	कथन I, II और III सही हैं	1

ख	कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।	1
ग	उपर्युक्त सभी	1
घ	उपर्युक्त सभी	1
ड.	केवल कथन (IV) सही है।	1
प्रश्न 8.	**गद्य खंड के निर्धारित पाठों में से निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 25- 30 शब्दों में दीजिए।**	**3x2 =6**
क	मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है? * आने वाली पीढ़ी में भी देश-प्रेम की भावना अभी जीवित है। * देश के निर्माण में लोग अपने-अपने तरीके से योगदान देते हैं।	2
ख	बालगोविंन भगत एक समाज सुधारक थे, कारण बताइए। * पुत्र का दाह संस्कार बहू से करवाना * पुत्रवधू को दूसरी शादी का आदेश देना * गृहस्थ होते हुए भी साधु जैसा व्यवहार	2
ग	लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा * दो लोगों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा लेखिका के पिता और उनकी कॉलेज की अध्यापिका शीला अग्रवाल। * पिता के अनचाहे व्यवहार से लेखिका के मन में हीन भावना उत्पन्न हुई। * शीला अग्रवाल ने उन्हें साहित्य को समझकर परखने की दृष्टि प्रदान की तथा सक्रिय राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी के लिए प्रेरित करके निडर व साहसी बनाया।	2
घ	बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया? * संगीत साधना के प्रति पूर्ण निष्ठा * सादा जीवन उच्च विचार * भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा लगाव * हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक	2
प्रश्न 9.	**निम्नलिखित पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।**	**1x5 =5**
क	विकल्प iv सही है।	1
ख	शंभू जी का धनुष	1
ग	कथनA सही है किंतु कारण R कथन A ही सही व्याख्या नहीं है।	1
घ	विकल्प ii, iii, iv सही	1

ड	परशुराम की शेखी पर	1
प्रश्न 10.	**निर्धारित काव्य पाठों में से दिए गए निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।**	**3x2 =6**
क	* हारिल पक्षी से तुलना करके * योग संदेश की तुलना कड़वी ककड़ी से करके * स्वयं को कृष्ण रूपी गुड़ पर लिपटी हुई चींटी कहकर आदि	2
ख	*धनुष पुराना था राम के छूते ही टूट गया * हमारी नजर में सब धनुष एक समान हैं। *श्रीराम ने धनुष को नयन भर के देखा ही था।	2
ग	* स्वयं के जीवन को बेहद साधारण मानना * मन की दुर्बलताओं, भूलों और कमियों का उल्लेख करने से बचाना * पढ़ने वालों द्वारा मज़ाक उड़ाने का डर	2
घ	गरजना पौरुष का प्रतीक माना गया है जो क्रांति के लिए आवश्यक है कवि हताशा और दुखों को दूर करने के लिए क्रांतिकारी शक्ति की अपेक्षा करता है।	2
प्रश्न 11.	**पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में दीजिए।**	**2x4 =8**
क	पाठ में प्रयुक्त कोई भी हृदय स्पर्शी प्रसंग	4
ख	संपूर्ण भारत में लोगों की आस्थाएं, विश्वास, अंधविश्वास और पाप-पुण्य की अवधारणाएं एक सी हैं।	4
ग	कोई भी उपयुक्त उत्तर	4
	खण्ड- घ (रचनात्मक लेखन)	20
प्रश्न 12.	**निम्नलिखित किन्हीं तीन विषयों में से एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं की सहायता से लगभग 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए।** **अनुच्छेद लेखन** **भूमिका- 1 अंक, विषयवस्तु- 3 अंक, निष्कर्ष- 1 अंक , भाषा शुद्धता- 1 अंक**	**1x6 =6**
प्रश्न 13.	**पत्र लेखन** **प्रारूप- 1 अंक , विषयवस्तु- 3 अंक , भाषा शुद्धता- 1 अंक**	**1x5 =5**
प्रश्न 14.	**स्ववृत लेखन** प्रारूप- 1अंक, विषयवस्तु -3 अंक, भाषा शुद्धता -1 अंक **अथवा**	1x5 =5

	ई- मेल लेखन प्रारूप-1 अंक, विषयवस्तु -3 अंक , भाषा शुद्धता -1 अंक	
प्रश्न 15.	**विज्ञापन लेखन** रचनात्मक प्रस्तुति- 1 अंक, विषयवस्तु- 3 अंक, भाषा शुद्धता- 1 अंक **अथवा** **सन्देश लेखन** रचनात्मक प्रस्तुति-1 अंक, विषयवस्तु- 3 अंक, भाषा शुद्धता- 1 अंक	1x4 =4

अभ्यास प्रश्नपत्र

	खंड क (अपठित बोध)	**अंक (14)**
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**	**7**
	समय निरंतर गतिमान है, इसे रोकना असंभव है। राजा हो या रंक, संत हो या सामान्य प्राणी, अमीर हो या गरीब, सभी को समय अपने आगोश में समेट लेता है। समय की कीमत न पहचानने वाले समय बीत जाने पर सिर धुनते रह जाते हैं इसलिए हमें समय का मूल्य समझना चाहिए। साथ ही समयानुसार काम भी करना चाहिए। जीवन की यह कुंजी है। **यूनान के दार्शनिक अरस्तू ने कहा है"- प्रत्येक व्यक्ति को उचित समय पर, उचित व्यक्ति से, उचित मात्रा में, उद्देश्य के लिए, उचित ढंग से व्यवहार करना चाहिए**। अधिकतर व्यक्ति सोचते हैं कि कोई अच्छा समय आएगा तो काम करेंगे। इस दुविधा व उधेड़बुन में वे जीवन के अनेक अमूल्य क्षणों को खो देते हैं। वे दिनों, महीनों, वर्षों को किसी शुभ क्षण की प्रतीक्षा में बिता देते हैं किंतु ऐसा क्षण किसी के जीवन में कभी नहीं आया। कभी किसी व्यक्ति को बिना हाथ पाँव हिलाए संसार की बहुत बड़ी संपत्ति छप्पर फाड़ कर नहीं मिलती। समय उन्हीं के रथ के घोड़े को हाँकता है जो भाग्य के भरोसे न बैठकर पुरुषार्थ को अपना धर्म समझते हैं। वास्तव में मनुष्य जिस समय को चाहे शुभ क्षण बना सकता है। आवश्यकता श्रम और समय की परख की है। जो व्यक्ति श्रम और समय का पारखी होता है, लक्ष्मी भी उसी का वरण करती है। जीवन में असफलता का कारण दुर्भाग्य नहीं होता अपितु समय को गलत समझने की भूल होती है।	
(क)	कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए: कथन: A समय को रोकना असंभव है। कारण: R समय निरंतर गतिमान रहता है। i. कथन A गलत है, किन्तु कारण R सही है। **ii.** कथन A और कारण R दोनों गलत हैं। iii. कथन A सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या है।	1

iv. कथन A सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या नहीं है।

(ख) कथन के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए। — 1

जीवन की कुंजी को समझने के लिए व्यक्ति का व्यवहार कैसा होना चाहिए?

i. उचित व्यक्ति से   ii. उचित समय पर

iii.उचित मात्रा में   iv. उचित ढंग से

विकल्प -

1. कथन I और II सही हैं।   2. कथन I और III सही हैं।

3. केवल कथन I सही है।   4. कथन I, II, III ,iv सही हैं।

(ग) नीचे दिए हुए कॉलम 1 के विकल्पों का कॉलम 2 के साथ सही मिलान कीजिए। — 1

कॉलम 1	कॉलम 2
I समय निरंतर	1. लक्ष्मी भी उसी का वरण करती है
II जो व्यक्ति श्रम और समय का पारखी होता है	2 गतिमान है
III उचित ढंग से	3.व्यवहार करना चाहिए

1. I(3), II(2), III(1)   2. I(1), II(2), III(3)

3. I(3), II(1), III(2)   4. I(2), II(1), III(3)

(घ) समय का महत्व न समझने वाले अधिकतर व्यक्तियों की क्या दशा होती है? — 2

(ङ) समय किन लोगों के रथ के घोड़ों को हाँकता है? — 2

प्रश्न 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। — **7**

अर्जुन! देखो, किस तरह कर्ण सारी सेना पर टूट रहा,
किस तरह पांडवों का पौरुष होकर अशं वह लूट रहा,
देखो जिस तरफ, उधर उसके ही बाण दिखाई पड़ते हैं,
बस, जिधर सुनो, केवल उसकी हुंकार सुनाई पड़ती हैं
कैसी करालता!क्या लाघव! कितना पौरुष! कैसा प्रहार!
किस गौरव से यह वीर द्विरद कर रहा समर-वन में विहार!
व्यूहों पर व्यूह फटे जाते, संग्राम उजड़ता जाता है,
ऐसी तो नहीं कमल वन में भी कुंजर धूम मचाता है
इस पुरुष-सिंह का समर देख मेरे तो हुए निहाल नयन,
कुछ बुरा न मानो, कहता हूँ, मैं आज एक चिर-गूढ़ वचन।
कर्ण के साथ तेरा बल भी मैं खूब जानता आया हूँ,
मन-ही-मन तुझ से बड़ा वीर, पर इसे मानता आया हूँ
"औ" देख चरम वीरता आज तो यही सोचता हूँ मन में,
है भी कोई, जो जीत सके, इस अतुल धनुर्धर को रण में?

(क) इस काव्यांश में कौन किसकी प्रशंसा कर रहा है? — 1

(i) कृष्ण अर्जुन की (ii) कृष्ण कर्ण की (iii) कर्ण कृष्ण की (iv) अर्जुन कर्ण की

(ख)	कवि ने कर्ण के युद्ध-कौशल की प्रशंसा में क्या कहा है? उचित विकल्प का चयन कीजिए। I. पांडव सेना के पुरुषार्थ को चुनौती दे रहा था II. पांडव सेना ने उसे चारों ओर से घेर लिया था III. समर क्षेत्र में केवल उसके बाण दिखाई दे रहे थे IV. समर क्षेत्र में केवल उसकी हुंकार सुनाई दे रही थी **विकल्प** 1. कथन I और II सही हैं 2. कथन I, II और IV सही हैं 3. केवल कथन III सही है 4. कथन I, III और IV सही हैं	1
(ग)	कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिएः- कथन (A): कर्ण की गर्जना से पाण्डव सेना में भगदड़ मच गई कथन (R): कर्ण ने पाण्डवों की सेना पर भीषण आक्रमण कर दिया था (i) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है। (ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं। III) कथन (A) सही है औ रकारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है। (iv) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
(घ)	श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कौन-सा गूढ़ वचन बताया?	2
(ङ)	कर्ण के युद्ध-कौशल को देखकर कृष्ण उसके बारे में क्या सोच रहे थे?	2
	खंड -ख (व्यावहारिक व्याकरण)	**16**
प्रश्न 3.	**निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से <u>किन्हीं चार प्रश्नों</u> के उत्तर लिखिए।**	**4X1 =4**
(क)	वर्षा हुई और मोर नाचने लगे। (सरल वाक्य में बदलिए)	1
(ख)	चौकीदार जाकर डंडा घूमा कर चला गया। (मिश्रवाक्य में बदलिए)	1
(ग)	वह परिश्रम करने के कारण सफल हो गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)	1
(घ)	खीरे के स्वाद के आनंद में नवाब साहब की पलकें मुँद गईं। (मिश्र वाक्य में बदलिए)	1
(ङ)	जैसे ही सूर्य उदय हुआ फूल खिल उठे। (सरल वाक्य में बदलिए)	1
प्रश्न 4.	**निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से <u>किन्हीं चार प्रश्नों</u> के उत्तर लिखिए।**	**4X1 =4**
(क)	पंछी बाग छोड़कर नहीं उड़े। (कर्मवाच्य में बदलिए)	1
(ख)	जब क्रिया का सीधा संबंध कर्म से होता है ,तब वहाँ कौन-सा वाच्य होता है?	1
(ग)	सोहन से चला नहीं जाता। वाच्य का भेद लिखिए	1
घ	राजा द्वारा प्रजा को कष्ट दिए गए। (कर्तृवाच्य में बदलिए)	1
ङ	लड़की खेल नहीं सकी। (भाववाच्य में बदलिए)	1
प्रश्न 5.	**निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए।**	**4X1 =4**

(क)	राजा ने अपने शत्रु पर **<u>चढ़ाई</u>** कर दी।	1
(ख)	वहाँ **<u>अत्यधिक</u>** लोग जमा हो गए थे।	1
(ग)	हिमालय विश्व का सबसे ऊंचा **<u>पर्वत</u>** है।	1
(घ)	**<u>जब</u>** हम रेलवे स्टेशन पहुंचे गाड़ी छूट रही थी।	1
(ङ)	हम देश पर सर्वस्व निसार करने को तैयार **<u>हो जाते हैं।</u>**	1
प्रश्न 6.	**निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से <u>किन्हीं चार प्रश्नों</u> की रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए।**	**4X1 =4**
(क)	<u>बहुत काली सिल जरा से, लाल केसर से कि जैसे धुल गयी हो</u>	1
(ख)	<u>एक दिन बोला यूं पुष्प डाल से ,लगते हैं, कुछ हाल तुम्हारे निडाल से</u>	1
(ग)	<u>तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान ,मृतक में भी डाल देगी जान</u>	1
(घ)	बढ़त देखि जल सम वचन बोले <u>रघुकुलभानु</u>	1
(ङ)	<u>पीपर पात सरिस मन डोला</u>	1
	खण्ड 'ग' बहुविकल्पीय/वर्णनात्मक प्रश्न	**30**
प्रश्न 7.	**निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।**	**5X1 =5**
	शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सजदे, इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते हैं-'मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ। उनको यकीन है, कभी खुदा एक दिन उन पर यूँ ही मेहरबान होगा और अपनी झोली से सुर का फल निकालकर उनकी ओर उछालेगा, फिर कहेगा, ले जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी। अपने ऊहापोहों से बचने के लिए हम स्वयं किसी शरण, किसी गुफ़ा को खोजते हैं जहाँ अपनी दुश्चिताओं, दुर्बलताओं को छोड़ सकें और वहाँ से फिर अपने लिए एक नया तिलिस्म गढ़ सकें।	
(क)	कथन A और कारण R को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए। **कथन:** A शहनाई मंगल कार्यों और विवाह समारोहों में बजाई जाती है। **कारण:** R शहनाई से मंगलध्वनि उत्पन्न होती है । i.कथन A गलत है, किन्तु कारण R सही है। **ii**.कथन A और कार Rदोनों गलत हैं। iii.कथन A सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या है। iv.कथन A सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या नहीं है।	1
(ख)	बिस्मिल्ला खाँ कितने वर्षों से शहनाई बजा रहे थे? i. बीस वर्षों से ii. तीस वर्षों से iii. पचास वर्षों से iv. अस्सी वर्षों से	1
(ग)	बिस्मिल्ला खाँ सच्चा सुर मांगने के लिए क्या करते हैं?	1

	i.खुदा की इबादत करते हैं ii. सजदे करते हैं iii. स्नान करते हैं iv. पूजा -पाठ करते हैं विकल्प- 1.कथन II और III सही हैं 2. कथन I और II सही हैं 3. केवल कथन III सही है 4. कथन I, II और IV सही हैं	
(घ)	हम अपने ऊहापोहों से बचने के लिए क्या करते हैं – i. स्वयं किसी शरण में जाना ii. किसी गुफ़ा को खोजते हैं iii. दुर्बलताओं को छोड़ते हैं iv. चिंता करते हैं विकल्प - 1. कथन II और III, iv सही हैं 2. कथन I, II और III सही हैं 3. केवल कथन III, iv सही है 4. कथन II और I सही हैं	1
ङ	बिस्मिल्ला खाँ की इच्छा क्या थी ? i. सुरीली शहनाई बजाना ii. अच्छे कपड़े पहनना iii. अच्छे घर में रहना iv. अच्छा खाना खाना	
प्रश्न 8.	**निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से <u>किन्हीं तीन प्रश्नों</u> के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए।**	**3X2 =6**
(क)	लेखक को देखकर नवाब साहब असहज क्यों हो गए? 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर लिखिए।	2
(ख)	मन्नू भंडारी के लेखकीय व्यक्तित्व निर्माण में **शीला अग्रवाल** की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।	2
(ग)	बिस्मिल्ला खाँ जीवनभर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?	2
(घ)	'संस्कृति' पाठ में लेखक ने **आग और सुई- धागे** के आविष्कारों से क्या स्पष्ट किया है?	2
प्रश्न 9.	**निम्नलिखित पठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।**	**5X1 =5**
	या अपने ही **सरगम** को लाँघकर चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में तब संगतकार ही स्थाई को सम्भाले रहता है जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन जब वह **नौसिखिया** था **तारसप्तक** में जब बैठने लगता है उसका गला प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता	

	कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर	
(क)	मुख्य गायक अपने ही सरगम को किस कारण लाँघ जाता है? (i) गाने की जटिल तानों में भटकने के कारण (ii) संगतकार द्वारा साथ देने के कारण (iii) संगतकार द्वारा साथ न देने के कारण (iv) संगतकार नौसिखिया था	1
(ख)	मुख्य गायक कहाँ भटक जाता है? सही विकल्प का चयन कीजिए- I. समुद्र के भँवर जाल में II. बचपन की स्मृतियों में III. तबले की ताल में IV. अनहद में विकल्प- 1. कथन IV सही है 2. कथन I और II सही **हैं** 3. कथन II और III सही हैं 4. कथन 1 और IV सही है	1
(ग)	कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही विकल्प चुनकर लिखिए। **कथन:** (A) मुख्य गायक के भटकने पर संगतकार उसकी सहायता करता है **कारण:** (R) स्थाई को सम्भालकर संगतकार मुख्य गायक की सहायता करता है (i) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है। (ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं। III) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है। (iv) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
(घ)	"जब वह नौसिखिया था" इस वाक्य में 'वह' किसके लिए आया है**?** (i) संगतकार (ii) मुख्य गायक (iii) संयोजक (iv) बाँसुरी वादक	1
(ङ)	'तार सप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला यहाँ 'तारसप्तक' से क्या अभिप्राय है**?** सही विकल्प का चयन कीजिए**-** I. धीमा स्वर II. शुद्ध स्वर III. कम धीमा स्वर IV.ऊँचा स्वर **विकल्प-** 1. कथन II सही है 2. कथन I और II सही हैं 3. कथन II और III सही हैं 4. कथन I और IV सही हैं	1
प्रश्न 10.	**निर्धारित कविताओं के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से <u>किन्हीं तीन प्रश्नों</u> के उत्तर लगभग 25 -30 शब्दों में लिखिए।**	**3X2 =6**
(क)	गोपियों ने श्रीकृष्ण को हारिल की लकड़ी क्यों कहा है? वर्णन कीजिए।	2
(ख)	फाल्गुन मास में प्रकृति का सौंदर्य कवि की आँखों में क्यों नहीं समा पा रहा है? लिखिए।	2
(ग)	फसल के लिए **आवश्यक तत्वों** का वर्णन कीजिए।	2
(घ)	संगतकार की भूमिका को ध्यान में रखते हुए संगतकार के **मानवीय गुणों** का वर्णन कीजिए।	2

प्रश्न 11.	**पूरक पाठ्यपुस्तक के निर्धारित पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से <u>किन्हीं दो प्रश्नों</u> के उत्तर लगभग 50 -60 शब्दों में लिखिए।**	**2X4 =8**
(क)	देश की सीमा पर बैठे फौजी किस तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं? हमारा उनके प्रति क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए? **साना साना हाथ जोड़ि** पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।	4
(ख)	**माता का अंचल**- पाठ के आधार पर उस समय के ग्रामीण परिवेश और संस्कृति की तुलना वर्तमान ग्रामीण परिवेश और संस्कृति से करते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए।	4
(ग)	हिरोशिमा की घटनाओं के बारे में सुनकर तथा उनके कुप्रभावों को प्रत्यक्ष देखकर भी लेखक विस्फोट का भोक्ता नहीं बन पाया। **मैं क्यों लिखता हूँ**- पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक ने अपने आपको विस्फोट का भोक्ता कब और कैसे महसूस किया?	4
	खंड- घ (रचनात्मक लेखन)	20
प्रश्न 12.	निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए। **(क)अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम** (संकेत बिंदु- अंतरिक्ष में भारत के कदमों का इतिहास, विदेशी सहायता से उपग्रह भेजना, स्वदेशी उपग्रह अंतरिक्ष में भेजना, निष्कर्ष) **(ख)मोबाइल- फोन सुविधा या असुविधा** (संकेत बिंदु- आवश्यक अंग, ढेरों सुविधाएं, हानियाँ, उचित प्रयोग आवश्यक) **(ग) स्वच्छ भारत अभियान** (संकेत बिंदु- स्वच्छता से अभिप्राय, स्वच्छता का महत्व, मानव समाज पर प्रभाव)	6X1 =6
प्रश्न 13.	आप **गौरव / गौरी** देहरादून उतराखंड के एक सजग नागरिक हैं। आपके क्षेत्र में लगे पेड़ों को कुछ स्वार्थी तत्व काट रहे हैं अपने क्षेत्र में पेड़ पौधों के अनियंत्रित कटाव को रोकने के लिए **जिला वन अधिकारी** को एक पत्र लिखिए। **अथवा** आपके विद्यालय में हिन्दी पखवाड़ा धूमधाम से मनाया गया पत्र के माध्यम से इसकी जानकारी मित्र को दीजिए।	5X1 =5
प्रश्न 14.	आपके पास के स्कूल में हिन्दी अध्याप्क का पद रिक्त हुआ है आप उस पद पर साक्षात्कार देने हेतु स्ववृत तैयार कीजिए। **अथवा** आपका ए.टी.एम खो गया है इसकी सूचना देते हुए पंजाब नैशनल बैंक के शाखा प्रबंधक को एक ई-मेल लिखिए।	5X1 =5
प्रश्न 15.	आपके भाई ने **साइकिल का नया शोरूम** खोला है, उसके लिए आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। **अथवा** **नवबर्ष की बधाई** देते हुए अपने मित्र को 25 -30 शब्दों में संदेश लिखिए।	4X1 =4